मेरी नज़र से:
कायस्थ इतिहास और मेरा परिवार

शिव शंकर श्रीवास्तव

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shiv Shankar Srivastava 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-324-2

Cover Design: Shariq

First Edition: Month 2026

।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। श्री कुल देवताये नमः ।।

<u>प्रस्तावना –</u>

यह मेरा साहित्य। ग्रंथ मेरे परिवार की वंशावली तथा उससे जुडी संस्कृति समाजिक, और धार्मिक परम्पराओ का एक विनम्र प्रयास है इसका उददेश्य केवल नामो और विधियो का संकलन मात्र नही बल्कि उन मूल्यो संस्कारो और जीवन द्विष्टी को सहजना है जो पीढी दर पीढी हमारे पूर्वजो द्वारा हमे प्राप्त हुये है।

मानव जीवन की पहचान उसके इतिहास संस्कार और परमपराओ से होती है वंशावली के माध्यम से हमें अपने पूर्वजो से संघर्ष, आचरण समाजिक योगदान और धार्मिक आस्थाओ को जानने का अवसर मिलता है यह ज्ञान न केवल आत्म गौरव को बढाता है बल्कि वर्तमान और भविष्य की पीढियो को अपने मूल से जोडने का सशक्त माध्यम भी बनता है।

इस साहित्य। ग्रंथ मे उपलब्ध जानकारी परिवार के बुजुर्गो से प्राप्त स्मृतियो , मौखिक परम्पराओ, उपलब्ध दस्तावेजो एंव व्यक्तिगत अनुसंधानो व प्रयासो पर आधारित है फिर भी मानवीय सीमाओ के कारण इसमे कुछ भी तुष्टिया का रह जाना संभव है।

निवेदन – यह साहित्य ग्रंथ परिवार के सभी सदस्यो एंव पाठको से सादर निवेदन है कि इसे श्रद्धा और सद्भाभावना की दृष्टि से पढे। यह एक सामूहिक पारिवारिक धरोहर है जिसमे सभी का सहयोग निहित है !

यदि इस संकलन ने किसी प्रकार की दृष्टि, कभी या सुधार की आवश्यकता प्रतीत हो तो परिवारजनो एंव पाठको का सुझाव सिरोधार्य है। आप के मार्गदर्शन से आने वाले समय में इसका पूर्ण घ्यान रखा जायेगा।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

कुल देवी कुल देवताये नमः

	क.सं. अनुक्रमणिका	
	प्रथम सोपान (मंगला चरण)	
1 2 3	1 भगवान गणेश जी का चित्र प्रार्थना स्तुति एंव परिवार का संक्षिप्त विवरण 2. स्व. माता–पिता की फोटो के साथ इनके लिये दो शब्द एंव माता–पिता को समर्थि कविता 3. संग्रह कर्ता के विचार	
	द्वितीय सोपान (स्टष्टि का प्रथम चरण)	
4 5 6	*1.* सर्वशक्तिमान ,ब्रम्ह , पूर्णब्रम्ह ,त्रिदेव का रहस्य के साथ इनका स्वरूप *2.* ऊं की उत्पत्ति और उसका महत्व *3.* दार्शनिक एंव पौराणिक रहस्य के साथ हीं साथ मानव जीवन पर पडने वाले प्रभाव	
	तृतीय सोपान (स्टष्टि का द्वितीय चरण)	
7 *8* *9* *10*	*1.* सृष्टि उत्पत्ति की परिकल्पना , इसकी संरचना,वेदो के साथ लोको का रचना 2 सृष्टि और ब्रहमा के साथ ब्रहमा जी के अवतार *3* .भगवान विष्णु जी का संक्षिप्त परिचय एंव उनके अवतार 4 भगवान शिव जी का संक्षिप्त जीवन दर्शन एंव 12 ज्योर्तिलिंगो विवरण	
	चतुर्थ सोपान (न्याय के देव चित्रगुप्त का प्रसंग)	
11. 12 13	*1.* भगवान चित्रगुप्त जी का चित्र एंव कायस्थ वंश का संक्षिप्त परिचय *2.* चित्रगुप्त वंशजो को नीचा दिखाने का प्रयास	

14 15 16 17	3. भगवान चित्रगुप्त का जीवन दर्शन 4. पद्म पुंराण के अनुसार धर्मराज श्री चित्रगुप्त जी का पूरा परिवार 5. भगवान चित्रगुप्त जी की पूजा विधि 6. भगवान चित्रगुप्त के पुत्र का संक्षिप्त विवरण 7. भगवान चित्रगुप्त के वंशज भानू पुत्र श्रीवास्तव वंश की वंशावली	
	पंचम सोपान (सिसोदिया वंश से हमारे पूर्वजो के संबंध)	
18 19 20 21	1. सिसोदिया वंश की उत्पत्ति और उसका विवरण 2. महाराणा हम्मीर सिंह का जीवन दर्शन 3. महाराणा हम्मीर सिंह का ऐतिहासिक निर्णय 4. ग्राम चिलकहर जनपद बलिया उत्तर प्रदेश के निकट सिसोदिया वंश का साम्राज्य स्थापित करना।	

शष्टम सोपान योगादास ; प्रथम खडिया निवासीद्ध वंश वृक्ष

22 23 24 25 26 27	1 योगादास का संक्षिप्त परिचय 2 योगा दास की वंशावली 3 लाला दास की वंशावली – हजौसी 4 गिरधर दास की वंशावली – चिसकहर 5 यादव दास की वंशावली – कुरेजी 6 रामचन्दर दास की वंशावली –लोहरा एंव जिगनी।	
	वंश खन्ड	
	ग्राम चिलकहर	
28 29 30	1. गिरधर दास की वंशावली और उनका संक्षिप्त विवरण 2. रधुनाथ दास की वंशावली और उनका संक्षिप्त परिचय 3. गोरख नाथ श्रीवास्तव की वंशावली और उनका संक्षिप्त परिचय	

	सप्तम सोपान (जीवन दर्शन)	
31 32 33 34 35	1 मानव जीवन से परमेश्वरं क्या चाहता है 2 रहस्य मय चिन्तन 3 मानव जीवन का लक्ष्य 4. शब्द की परिभाषा और उसका महत्व 5 शब्दो का प्रभाव एंव महत्व	
	अष्टम सोपान (कुल की देवी एंव देवता)	
36. 37. 38.	*1.* कुल देवी की उत्पत्ति उनका इतिहास और महत्व के साथ पूजा पद्वत– *2.* कुल देवता की उत्पत्ति इनका इतिहास और महत्व के साथ पूजा पद्वत *3.* बाबा भुवन दास द्वारा ग्राम चिलकहर **को श्रा**प से मुक्ति और मठीया का निर्माण	
	नवम् सोपान (विधी का विधान)	
39 40 41	*1* विधी का विधान एंव पौराणिक कथा *2* नक्षत्र ,जयोतिष, ऩक्षत्रो के स्वामी एंव स्वभाव *3* नक्षत्रो के पौधे और वृक्ष	
	दशम सोपान (पूर्वजो के लिये श्राद्य एंव पित्र पक्ष)	
42 43 44	*1.* श्राद्व और पितृपक्ष का वैज्ञानिक महत्व 2 सात पीढी का वैज्ञानिक महत्व , जो सन्तानो से संबधित होती है । 3 पितृपक्ष का महत्व और समय	

श्री गणेशाय नमः

भगवान गणेश जी की बंदना

!! श्री गणेषाय नमः !!

ऊँ गं गणपतये नमः
विघ्न हरणः मंगल करण श्री गणपति महराज। !
प्रथम निमंत्रण आप को पूरन करियो काज !!
वक्र तुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः !
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा !!
विघ्नेश्रवराय वरदाय सुप्रियाय
लम्बोदराय सकललाय जग द्धिताय
नागान नाय श्रुतियत्र विभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमों नमस्ते

श्री गणेशाय नमः

प्रार्थना

हे परमात्तमा मेरे ह्रदय और मन को साफ करो) मुझे अपनी बुद्धि ज्ञान और सच्चाई प्रदान करो मेरे लेखन में प्रेम और करूणा भर दो ताकि जो भी इसे पढ़े उसे ज्ञान और आनंद प्राप्त हो) मेरे लेखन (पुस्तक) में आपकी करुणा और महिमा स्पष्ट दिखे।

विघ्न हरण मंगल करण श्री गणपति महराज ।
प्रथम निमंत्रण (पूजा) आप को पूरन की जो काज।
सदा भवानी दाहिनी सम्मुख रहे गणेश, ।
तीन देव मिल रक्षा करे ब्रम्हा विष्णु महेश।
आज भी तेरा आसरा) कल भी तेरी आस ।
कीर्तन/पुस्तक पूरा हो मेरा यह मांगू आर्शीवाद।
मैया के दरवार में सभी खड़े रहे कर जोड़ ।
देने वाली एक मा मांगे लाख करोड।
हे मां इतना दीजिये जामें कुटुम्न समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूं मेरा साधुना न भूखा जाय।
सुखिया सब संसार है दुखिया रहे ना कोई ।
यह अभिलाषा हम सब की मेरी मैया पूरी हो जाये।

भगवान गणेश जी का परिवार का चित्र

भगवान गणेश जी की वंशावली
भगवान गणेश जी की दो पत्नी

1. माता रिद्धि पुत्री भगवान विश्व कर्मा जी
2. माता सिद्धि पुत्री भगवान विश्व कर्मा जी
3. माता रिद्धि के पुत्र भगवान शुभ
4. माता सिद्धि के पुत्र भगवान लाभ

भगवान गणेश जी के पुत्र वधू

1. भगवान शुभ कि पत्नी माता तुष्टि
2. भगवान लाभ कि पत्नी माता पुष्टि

भगवान गणेश जी के पुत्र व पुत्र वधु के पुत्र

1. माता तुष्टि एंव शुभ के पुत्र आनन्द

2. माता पुष्टि एवं लाभ के पुत्र प्रमोद

भगवान गणेश जी ने अपने पुत्रों के अनुरोध पर अपने दिव्य शक्ति से पुत्री माता सन्तोषी को प्रगट किया।

माता सन्तोषी .. हिन्दु/सनातनधर्म में भाई बहन के अटूट प्रेम/संबंध एंव एक विशेष बन्धन के उद्देश्य के लिये किया गया जो आज भाई के वहन के सामाजिक बंधन और प्रेम का प्रतीके है।

स्व0 श्रीमति सुदामा देवी पत्नी
स्व0 गोरखनाथ श्रीवास्तव

हमारे माता पिता

माता पिता को पुत्र से क्या चाहिये
सम्मान, प्रेम, श्रद्धा और विश्वास

माता पिता हमारे जीवन के वे रत्न है जिन्हें हमें– हमेशा और हर परिस्थित में सभालकर रखना चाहिये।

माता–पिता के विना हम कुछ भी नहीं और हमारा जीवन अधुरा है।

माता पिता ये दो शब्द ऐसे है जो हमारे जीवन के आधार है।

माता पिता ये हमारे जीवन के कारक है और के अस्तित्व है।

माता पिता हमारे जीवन के मूल है और ये हमारे जीवन के प्रथम शिक्षक है।

माता पिता हमारे जीवन के मार्ग दर्शक और दुनियां में सबसे बडे नेक शुभ चिन्तक है।

माता पिता को समर्पित कविता

मां देवी होती है तो पिता भगवान होता है,
मां जन्म देती है तो पिता नाम देता है।

मां दूध देती है तो पिता भोजन देता है,
मां पंख देती है तो पिता उड़ान देता है।

मां चलना सिखाती है तो पिता थाम लेता है,
मां मकान होती है तो पिता बुनियाद होता है।

मां दिल होती है तो पिता जान होता है,
मां घर चलाती है तो पिता काम करता है।

मां पालती है तो पिता पोष देता है,
मां होती है प्रथम शिक्षिका तो पिता प्रथम गुरु होता है।

मां छांव होती है तो पिता धूप होता है,
मां धरती होती है तो पिता आकाश होता है।

मां गीत होती है तो पिता संगीत होता है,
मां डाल होती है तो पिता पेड़ होता है।

मां नदी होती है तो पिता पहाड़ होता है,
मां गाड़ी होती है तो पिता पहिया होता है।

मां कर्म होती है तो पिता कर्तव्य होता है,
मां परिवार देती है तो पिता खानदान देता है।

मां धर्म सिखाती है तो पिता ज्ञान देता है,
मां गुण देती है तो पिता संस्कार देता है।

मां साथ देती है तो पिता सहारा देता है,
मां शान्ति देती है तो पिता सुकून देता है।

मां लक्ष्य देती है तो पिता राह देता है,
मां स्वप्न देती है तो पिता साकार देता है।

मां–बाप का रिस्ता दुनिया में सबसे अनमोल है,
न समझा हमने इस रिश्ते को तो जीना हमारा व्यर्थ है।

मां ममता की मूरत है तो पिता मजबूती की मिशाल है।
मां स्वर्ग की राह है तो पिता स्वर्ग का द्वार है।
इन दोनों के होने से ही हमारा ये संसार है।

माता पिता वो मन्दिर हैं ,
जिनमें बस्ती भगवान की मूरत है।

कर लो इन की मन से सेवा,
हो जाएंगे सारे तीरथ हैं।

करो हमेशा उनकी दिल से इज्ज़त,
क्योंकि नहीं मिलते भगवान हैं।

और माता–पिता ही इस धरती पर,
हम सबके असली भगवान हैं।

संग्रह कर्ता के दो शब्द

परम पिता परमेश्वर कि असीम कृपा एन पूर्वजों के आर्शीवाद से मेरे शिवशंकर श्रीवास्तव अन्तः करण में यह प्रेरणा जागृत हुई की अपने परिवार/खानदान के इतिहास की जानकारी प्राप्त कर उसे लिपी वध करूः । अपने आराध्य देव भगवान शिव एवं पूर्वजो की कृपा और उन्ही के मार्ग दर्शन से प्राप्त अपने स्व0 पिता श्री गोरख नाथ श्रीवास्तब आत्मज स्व0 महादेव लाल श्रीवास्तव ग्राम निवास चिलकहर जनपद वालिया उत्तर प्रदेश के द्वारा हस्तलिखित कुछ पत्तों में अपने आत्म कथा दिनांक 20 फरवरी दिन रविवार सन् 1983 विक्रम संभंत फागुन शुक्ल पक्ष 2039 को अपने विवेक) ज्ञान और अनुभव के आधार पर अपने भारत वर्ष के राजस्थान (राज्य) से विस्थापित होकर उत्तर प्रदेश के जनपद बलिया ग्राम चिलकहर के पास खड़ीचाग्राम में निवास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

<u>मुख्य कारण</u> तत् कालीन समय में राजस्थान में शिशोदिया वंश का सामराज्य था। इस वशं के 38 वे शासक महाराणा हम्मीर सिंह (सन् 1326 से लेकर सन 1364) जो लगभग 38 वर्ष रहा। इस काल खण्ड में हमारे पूर्वज मुख्य सलाहकार के रूप में अपनी सेवा प्रदान कर रहे थे। राणा हम्मीर सिंह साहसी कर्मठ एवं वित्तार वादी निती के शासक थे तत्कालीन शासन सत्ता के आदेशानुसार एक सेना की टुकड़ी के साथ–साथ योग्य कर्मठ और निष्ठावान शासको के साथ राज्य के मुख्य सलाहकार के पुत्र योगा दास को उत्तर प्रदेश के जनपद वलिया ग्राम चिलकहर के पास ग्राम खड़ीचा में अपना शिविर (टेरिटरी) बनाकर यहां विस्थापित कर दिया। जो हमारे परिवार खानदान के प्रथम पूर्वज थे।

उपरोक्त तथ्यों को आधार मानकर सभी प्रकार के सामाजिक/आर्थीक नाते रिस्ते के साथ– साथ सभी प्रकार के जानकारी को जोड़ने के प्रयास किये गये जिसमें मुख्य भूमिका पिता स्व0 गोरख नाथ श्रीवास्तव के हस्त लिपी पन्नों का ही है।

हो सकता है कि सभी कड़ियों को जोड़ने एवं समाजस्य बनाने में कुछ त्रुटिया हो गई हो उसे अपने पूर्वजो) तथा वर्तमान के सभी सम्मानित व्यक्तियों से क्षमा चाहता हॅू साथ ही साथ इस लेख में किसी विशेष

व्यक्ति की भावना को ठेस पहुचती हो तो उसके लिये भी क्षमा के लिये निवेदन करता हूॅ।

साथ ही साथ इस पुस्तक में निहित किसी भी जानकारी/सामग्री गणना की वास्तविकत्ता/ विश्वनियता की कोई गारंटी नहीं है क्योकि विभिन्न माध्यमों चैनलो/समाचार पत्रो/प्रवचनो मान्यताओं धर्म ग्रंथो पंचागों से संग्रह करके यह जानकारी इस पुस्तक में समलित किया गया है हमारा उद्देश्य महज जानकारी देने तक सिमित है इसके अतिरिक्त कुछ भी नही है।

इस कार्य में जो लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपना सहयोग प्रदान किया है उन सभी के प्रति कृत्यज्ञता प्रकट करता हूँ साथ ही साथ जिन सदस्यों या गणमान व्यक्ति का विवरण प्राप्त नहीं हो सका और अधुरा रह गया या किसी कारण वस गलत हो गया हो या गलत लग रहा हो उन सभी से क्षमो की याचना करता हूं।

सर्वशक्तिमान ब्रम्ह

मंडूक उपनिषद के अनुसार पौराणिक एक कथा

सर्व प्रथम शिव स्वयंभू के रूप में प्रकट हुये। जिनसे ओम
का शब्द प्रादुर्भाव हुआ शिव के विभिन्न मुखो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
मध्य से अ.उ.म. विनदू और नाद निकले जो मिलकर ओम
बने जो ब्रम्हाण की मूल ध्वनि और परमात्मा का स्वरूप है जो सृष्टि के आरम्भ से ही विधमान है। सभी मंत्रो का आधार और त्रिदेव का स्वरूव भी है।

सर्व शक्तिमान की परिभाषा

1. गुण–पुरे आकाश में ब्रम्ह समाहित है क्योंकि ब्रम्ह अनन्त और सीमा रहित हैं
2. पंच देव की शक्ति, और तेज जिसमें समाहित है वह है ब्रम्ह
3. सूर्य, चन्दमा, तारो, अग्नि और दिव्य प्रकाश जिसमें समाहित है वह है ब्रम्ह
4. गणेश, शिव, विष्णु, सूर्यदेव, दुर्गा के ही पंचभूत है।

आधार क्या है

1. सृष्टि के संतुलन और संचालन के आधार माने जाते है।
2. इनकी सामुहिक उपासना को पंचायतन कहा जाता है।
3. जो जीवन में बुद्धि, शक्ति, समृद्धि, आरोग्य और मोक्ष प्रदान करती है।

पौराणिक कथा के अनुसार

भगवान शिवजी ने अपने मुरवार बिन्दू से अपने माता का नाम दुर्गा अष्टांगी और पिता नाम ज्योति निरंजन काल ब्रम्ह बताया है।

1–ब्रम्ह

शिव के पिता ही ज्योति निरंजन है और ज्योति निरंजन ब्रम्ह ही काल है काल का मतलब ही विनाश अर्थात प्रलय ।

2—दुर्ग अष्टांगी—

शिव ने ही अपनी माता का नाम दुर्गा अष्टांगी बताया और यही ही प्रकृति है और प्रकृति का मतलब ही होता है सृजन अर्थात जगत उत्पति ।

3—ब्रम्ह—

ज्योति निरंजन ब्रम्ह ने जगत को मुर्ति रूप प्रदान करने के लिये अपने अंश से स्वयम् भू के रूप प्रकृति के तीनो गुणो के त्रिदेव के रूप अवतरित किया।

> **1—सत्व—** सतगुणः से ब्रम्हा जी का उदय हुआ और सृष्टि के रूप में सृजन का कार्य प्रदान किया गया इसिलये यह जगत के सृजनकर्ता है।
>
> **2—रजस—** रजोगुणी विष्णु (नारायण) का उदय हुआ और इन्हे सृष्टि के पालन कार्य प्रदान किया गया इस लिये यह जगत के पालन हार है।
>
> **3—तमस—** तमोगुणी शिव का प्रागत्य हुआ और जो इन्हें सृष्टि के संहार के कार्य प्रदान किया गया इसलिये यह जगत के संहार करता है।

<u>नोट</u> काल हो ब्रम्ह है और ब्रम्ह ही काल है इसमें कोई भेद नही है।

अर्थात निरंकार रूप में ज्योति निरंजन और दुर्गा अष्टांगी से ही शिव स्वयं भू के रूप में प्रकट हुये।

दुर्गा अष्टमी

जगर की उत्पत्ति के रूप में परिवर्तित होकर इस जगत के आधार बनकर सभी जीवधारियों को आसरा प्रदान करती है।

ज्योति निरंजन

जगत की सभी बाधाओं से मुक्ति देने के लिये काल रूप धारण करते है।

पूर्ण ब्रम्ह
ब्रम्ह का स्वरूप

यह सार्वभौमिक सिद्धान्त है जो पूरी सृष्टि जगत में सक्रिय है ब्रम्ह को निगुण/निराकार असीमशक्ति/ अमिनाशी और सर्वव्यापक माना जाता है ब्रम्ह ही अलग–अलग रूपों में परमेश्वर/परमात्मा और सच्चिदानन्द है।

वह इस वृक्ष रूपी संसार को पाप–पुण्य रूपी फलो को अच्छी प्रकार भोगता है और दूसरा परमात्मा जो कर्मों को कभी नही भोगता है लेकिन चारो दिशाओं और जीव के अंदर और वाहर अर्थात सर्वत्र व्याप्त और विराजमान एवं प्रकाशमान रहता है जीव से ईश्वर और ईश्वर से जीव ये दोनो प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूप और स्वरूप है और तीनो अनादि है।`

उपनिषद के अनुसार

प्रकति, जीव और परमात्मा में तीनो अजर–अमर है अर्थात जिसका जन्म कभी नहीं होता और न कभी ये मरते हैं। ये तीनो सब जगत के कारक है और इनका कारण कोई नहीं है। इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फसता है और उसमें परमात्तमा कभी नही फसता है और न उसका भोग करता है।

परमेश्वर सर्व व्यापी सर्व शक्तिमान/सर्वज्ञ अनादि और अविनाशी निराकार साच्चिदानन्द स्वरूपे सृष्टि का रचइता और कर्मो का फल देने वाला है

जीव की सीमाये सीमित है जैसे स्थान सीमित है ज्ञान शक्ति सीमित जीव अविनाशी है लेकिन वह अलग अलग शरीर में जन्म लेता है और अपने किये हुये कर्मो को भोगने वाला है सभी जगत ईश्वर का अशं तो है लेकिन शरीर धारी है।

सनातन धर्म के अनुसार

परमात्तमा, जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न–भिन्न हो जाता है यह तीसरा अनादि पदार्थ इन के गुण कर्म और स्वभाव भी अनादि है इन जीव और ब्रम्ह में से एक तो जीव है। वह इस वृक्ष वृद्धि रूपी संसार को पाप पुण्य रूप फलो को अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा परमात्मा कर्मो को न भोगता हुआ हर दिशा में एवं भीतर और वाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है जीव से ईश्वर और ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप तीनो अनादि है।

<u>त्रिदेव की उत्पति का रहस्य</u>

सनातन धर्म और हिन्दु मान्यताओं के अनुसार त्रिदेव की उत्पति कालरूयी सदा शिव और दुर्गा से हुई थी और है।

<u>शिवपुराण के अनुसार–</u>

शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव ने अपने वाये और दाये हाथ से ब्रम्हा और विष्णु को उत्पन्त किया था ।

<u>विष्णु पुराण के अनुसार–</u>

विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु की नाभि कमल से ब्रम्हाजी उत्पन्न हुये और उनके हाथ के तेज से शिव जी प्रगट हुए थे ।

ब्रम्हपुराण के अनुसार–

विष्णु पुराण के अनुसार आदि ब्रम्हा ने ब्रम्हा विष्णु और महेश को उत्पन्न किया।

शक्ति सिद्धान्त के अनुसार–

त्रिदेव आदि पराशक्ति से स्वयंभू के रुप ब्रम्हा, विष्णु, महेश अवतरित हुये। जिन्हे त्रिदेव कहते है।

त्रिदेव का रहस्य–

यह सर्व विदित है कि ब्रम्हा, विष्णु, महेश ये तीनों एक ही है और ये तीनो ही परमेश्वर के स्वरूप है इसलिये तीनों शक्तियों को एक ही शरीर में स्थापित किया गया है ।

त्रिदेव के प्रतीक चिन्ह

1–ब्रम्हा जी के लिये जप माला

2–विष्णु जी के लिये शंख और चक्र

3–महेश जी के लिये त्रिशूल और डमरु

ॐ की उत्पत्ति

सनातन धर्म के अनुसार वेदो और उपनिषदों में यह उल्लेख मिलता है कि ओम की उत्पत्ति भगवान शिव के मुख से निकला प्रथम शब्द ॐ (ओम) से ही है।

शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव के पांच मुख है इन पांचो मुखों से अलग अलग शब्द निकले अकार, उकार, मकार बिन्दू और नाद की उत्पत्ति हुई और इन पाचों के मिलने से ॐ (ओम) की उत्पत्ति हुई

ओम ही तो प्रथम मंत्र है।

ॐ (ओम) ही ओमकार है और ॐ तीन अक्षरों से मिलकर बना है जिसमें अ–उ–और–ग है जिस "प्रणव" भी कहा जाता है अकार, उकार तथा अर्धमात्रा विशिष्ठ मकार है।

ॐ में त्रिदेव और ओम से त्रिदेव

1– अ–आकार– से आदि कर्ता ब्रम्हा का बोध होता है
2– उ–उकार– से पालनकर्ता भगवान विष्णु का बोध होता है
3– म–मकार– से संघार कर्ता भगवान महेश का बोध होता है

ॐ की ध्वनि और प्रकाश के मिलन से ब्रम्हाड़ की उत्पति मानी जाती है

ॐ से भगवान शिव शक्ति का मिलन का बोध भी होता है

शिव पुराण के अनुसार

1– अ–अकार को ही शिव कहा गया है।
2– उ–उकार को ही शिव शक्ति कहा गया है।
3– म–मकार को ही शिव शक्ति का मिलन कहा गया है।

ॐ से सृष्टि का लय और विलय,

1– अ–अकार का अभिप्राय है। उत्पन्न होना

2– उ–उकार का अभिप्राय है उठना और विकास होना

3– म–मकार का अभिप्राय है मौन हो जाना या ब्रम्हलीन होना।

ओम ॐ में प्रकृति के गुण

1. अ–आकार–मतलब है सतोगुण
2. उ–उकार–मतलब है रजोगुण
3. म–अकार–मतलब है तमोगुण

ओम ॐ से तीनो लोक

1. अ–अकार का अभिप्राय है सवर्गलोक
2. उ–उकार का अभिप्राय है पृथ्वी लोक/मृत्यु लोक
3. म–मकार का अभिप्राय है नर्क लोक/पाताल लोके

ओम ॐ से आत्मा

1. अ–अकार का प्रयोजन है देव आत्मा है।
2. उ–उकार का प्रयोजन है मानव आत्मा है।
3. म–मकार का प्रयोजन है दुष्ट आत्मा है।

ओम ॐ से नाडी की कल्पना

1. अ–अकार का अभिप्राय है इड़ा नाड़ी
2. उ–उकार का अभिप्राय है पिगला नाड़ी
3. म–मकार का अभिप्राय है सुषमा नाड़ी

शिव पुराण के अनुसार

ओम ॐ का महत्व

1. अ–अकार–अप्रित के उच्चारण से मानव जीवन की सभी मनोकामना की प्राप्ती/पूर्ती होती है
2. उ–उकार–उत्कर्ष ज्ञान के उच्चारण मात्र से ज्ञान की प्राप्ती होती है।
3. म–मकार मिति के उच्चारण मात्र से वस्तु सप्रदा की प्राप्ती होती है।

प्रकृति के गुणो के आधार

प्रकृति के तीन गुण हैः–

1– सत्व

2– रजस

3– तमस

इन गुणो से ही संपूर्ण जगत और संसार बना है। तीनो गुण अध्यात्मिक, भौतिक और मानसिक घटनाओं का आधार है।

1– साख्य दर्शन के अनुसार–

सत्व – यह गुण ज्ञान, प्रकाश और सन्तुलन का प्रतीक है।

रजस– यह गुण विधी, जुनुन और कर्म का प्रतीक है ।

तमस – यह गुण, अज्ञानता, जड़ता और आलस्य का प्रतीक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार–

सत्व– यह गुण अच्छाई शान्ति और सामजस्य का प्रतीक है।

रजस– यह गुण अति उत्साह/जनून के गतिविधि का प्रतीक है।

तमस– यह गुण अज्ञान जड़ता और आलस को प्रतीक है।

भगवत गीता के अनुसार (क्रिया के अनुसार)

सत्व – यह गुण सुख और वैभव से जुड़ा हुआ है।

रजस – यह गुण कर्म और कर्तव्य से जुड़ा हुआ है।

तमस – यह गुण अंजान और भ्रम से जुड़ा हुआ है

भाषा के अनुसार

सत्व– यह गुण ज्ञान और बुद्धि, सदोगुणी मनुष्य अन्य जीवों से अधिक ज्यादा बुद्धिमान होते है।

रजस– यह गुण भौतिक इच्छाओ के वशीभूत होते है।

तमस–यह ज्ञान और क्रिया न करके निष्क्रियता और पाप कर्म में लिप्त होते है।

(कलर) रंग के अनुसार

सत्व–सफेद रंग (व्हाईट) सत्य का प्रतीक है।

रजस–लाल रंग (रेड) रजस का प्रतीक है।

तमस–कांला रंग (ब्लैक)तमस का प्रतीक है।

माडूण्य उपनिषद के अनुसार
ॐ मे छिपा हुआ रहस्य

1–ब्रम्हाण्ड में वर्तमान भविष्य और भूतकाल से आगे जो हमेशा। निरन्तर बना रहता है वही ओम है।

2–ब्रम्हाण्ड में निरन्तर जो ध्वनि सुनाई देती है वह ॐ (ओम) ही है।

3–ब्रम्हाण्ड का रहस्य ओम में ही निहित है।

4– ॐ (ओम) ही परम ब्रम्ह है।

5– ॐ (ओम) ही परम सत्य है।

6– ॐ (ओम) ही महा मंत्र है।

7– ॐ (ओम) ही परम अक्षर है।

8– ॐ (ओम) ही ब्रम्हाड़ का – सार है।

9– ॐ (ओम) शास्वत् /ध्वनि, और अनहद नाद है।

10– ॐ (ओम) ही सृजन की ध्वनि है।

11– ॐ (ओम) शब्द ही शान्ति का प्रतीक है।

अर्थात ॐ (ओम) एक ऐसा विराट शब्द, ध्वनि, शक्ति ब्रम्ह है जो घट–घट में व्याप्त है और अजर अमर है।

ॐ (ओम) के उच्चारण मात्रा से मानवजीवन पर पड़ने वाले प्रभाव

1– ॐ (ओम) के उच्चारण मात्र से व्यक्ति की व्याकुलता एंव अधीरता धीरे–धीरे समाप्त हो जाती है।

2– ॐ (ओम) के उच्चारण मात्र से व्यक्ति विशेष की अशान्ति और बेचैनी नित्य अभ्यास से दूर होती है।

3– ॐ (ओम) के उच्चारण मात्र से व्यक्ति विशेष को शरीर के विषैले तत्वो को दूर करने में सहायक और अधिक लाभप्रद है।

4– ॐ (ओम) के उच्चारण मात्र से व्यक्ति विशेष इसका अभ्यास करे तो ह्रदय के और खून के प्रभाव को सन्तुलित करने में अति सहायक है।

5– ॐ (ओम) शब्द के उच्चारण मात्र से पाचन शक्ति को तेज करने में सहायता मिलती है।

6– ॐ (ओम) शब्द के उच्चारण मात्र के अभ्यास करने से गले में स्थित धायराइड ग्रन्थी में कम्पन्न होने से लाभ मिलता है।

7–ओम का उच्चारण मात्र से बहरे पन में भी लाभ मिलता है।

8–ओम के उच्चारण मात्र से मस्तिष्क और शरीर का समन्वय अपने आप सक्रिय और संन्तुलित होने लगतो है।

9–ओम के उच्चारण मात्र से शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक शक्ति बढ़ती है।

10–वैज्ञानिको के अनुसार ओम शब्द का उच्चारण और उसका प्रतिबिम्व घर में स्थापित करने से सकरात्मक उर्जा का स्त्रोत बढ़ता है और मन को शक्ति मिलती है।

11–वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन में ॐ (ओम) का चिन्ह स्थापित करने के साथ ही साथ शुभ और लाभ का प्रतीक चिन्ह लगाने से नकरात्मकता उर्जा समाप्त होती है।

12–सनातन धर्म के मानने वाले हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध धर्मों के लोग ॐ (ओम) शब्द को पवित्र शब्द मानते है।

13– ॐ (ओम) शब्द को पवित्र शब्द मानने के कारण उपरोक्त के देवालयों में इस चिन्ह को लगाना शुभ माना जाता है।

14–लगभग हर मन्त्र की शुरूआत ॐ (ओम) शब्द से ही होती है

प्रवण शब्द अर्थात, ओमकार, ओमकार में अकार, उकार, एवं अर्धमात्रा विशिष्ट मकार हैं। और ये तीन मात्राए भू आदि तीन लोक, तीन गुण जागृत स्वप्र और सुसुप्ता – ये तीन अवस्था के साथ ब्रम्हा, विष्णु महेश ये तीनो देव प्रणव रूप विराज मान है।

सृष्टि की उत्पत्ति की कल्पना

सतयुग में नारायण भगवान जिसके नाभि में कमल है। नारायण के इच्छा के अनुसार कमल पर विराजमान चार मुख वाले ब्रम्हा जी उप्तन्न हुए जिसे वेद वेदान्ता भगवान कहा गया है। अर्थात ब्रम्हा जी के मुख से चार वेद की उत्पत्ति हुई। जिसका संकलन महर्शि कृष्णा व्यास दैयाजन जी ने किया जो वेद व्यास जी के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हें वेद भगवान की भी संज्ञा दी जाती है। यह ग्रन्थ जो भारतीय संस्कृति और सनातन का मूल अधार एवं ज्ञान का भन्डार है।

सर्वप्रथम ब्रम्हा जी के मुख से भूःभुवः स्वः का उच्चारण हुआ। इसे ब्रम्हा जी के मन और वाणी से उत्पन्न माना जाता है।

ज्ञान दृष्टि से वेदो का वर्गीकरण और उसका संक्षिप्त वर्णन

1. **ऋग्वेद**
2. **यजुर्वेद**
3. **समवेद**
4. **अथर्ववेद**

ऋग्वेदः–इस ग्रन्थ की रचना अग्नि ऋषि द्वारा किया गया। इसमें मुख्य रूप से सृष्टि की उत्पत्ति एवं रचना का वर्णन है। इसके साथ ही साथ अग्नि, सूर्य, इन्द्र, वरूण एवं पृथ्वी का उल्लेख है। तत्पश्चात् गायत्री मंत्र का भी प्रर्याप्त वर्णन किया गया है।

यजुर्वेदः–इस ग्रन्थ के रचईता वायु ऋषि हैं। इसमें अच्छाई, बुराई, कर्म एवं यज्ञों के बारे में विस्तार पूर्वक नियम व विधि का वर्णन है। इसे कर्मकाण्ड प्रधान ग्रेंथ भी कहा जाता है। इसके पाठ करने वाले ब्राम्हण को **"अंहवयु"** कहा जाता है।

सामवेदः–इस ग्रन्थ के रचनाकार आदित्य ऋषि हैं। यह संगीत प्रधान के साथ उपासना एवं विद्या का ग्रन्थ भी कहा जाता है।

अथर्ववेदः—इस ग्रन्थ के रचनाकार अंगिरा ऋषि हैं। इसमे मुख्य रूप से विज्ञान के नियम इनके रहस्यमय विधाओं का विवरण है और इसके उदाहरण के रूप में जादू, टोटका का चमत्कारी रहस्य एवं मंत्र का अध्ययन तथा उसका महत्व का तर्क संगत व्याख्या किया गया है।

उपरोक्त ग्रन्थ को संक्षिप्त व्याख्या की जाय तो यह ज्ञात होता है कि :— ज्ञान की दृष्टि से वेद एक है लेकिन विषय की दृष्टि से चार है।

सृष्टि की संरचना

भगवान ब्रम्हा जी के सृष्टि निर्माण के अनुमोदन के पश्चात् जो शब्द इनके मुखार विन्दु से निकले उनके प्रथम वाणी को अन्तःकरण से अवलोकन किया जाये तो एक–एक शब्द से एक–एक लोक की उत्पति हुयी है। इसके साथ ही साथ इन लोकों में निवास करने के लिए अलग–अलग मापदण्ड का निर्धारण भी किया गया, जिससे एक लोक से दूसरे लोक में सामजस्य बना रहे जिससे कर्मो एवं कर्तव्यों के मापदण्ड पर रख कर उसका निर्धारण किया जा सके जिससे किसी प्रकार का विरोधाभास एवं नियमानुसार सभी कार्य सुगमता पूर्वक निभाया जा सके

ब्रम्हा जी के प्रथम वाणी

भगवान ब्रम्हा जी जो जगत के रचनाकार है उनके मुखार बिन्दू से प्रथम शब्द भू.मुव.स्वः महः जनकः तपहः सत्यम् को मूल मानकर सात लोको की कल्पना की गयी और उनका निर्माण किया गया जिससे मृत्यु लोक के जीवों के कर्मों, पापो, पुण्य के आधार पर इन लोको में निष्पक्ष और बिना भेद भाव से उन जीवों को स्थान प्राप्त कराया जा सके।

भू: भुवः स्वः महः जनक, तपहः , सत्यम्

श्री शिव जी की आरती संग्रह/प्रसगं में निम्न पक्तियों विशेष महत्व रखती है जिसे सृष्टि के निर्माण की व्याख्या की जा सकती है।

1. कर मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता
   जगकर्ता , जगहर्ता जगपालन कर्ता
2. ब्रम्हा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका
   प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका।

लोकों का संक्षिप्त परिचय

1. **भू:–मृत्युलोकः–** जिस समय से मैथुन सृष्टि की रचना हुई जिसे मृत्युलोक कहा गया है।
2. **भुवः–प्रेतलोकः–** पित्र आत्मा जहाँ निवास करती है उसे प्रेतलोक कहा जाता है।

3. **स्वः—गंन्धर्वलोकः—** यक्ष—गन्धर्व , किन्नर , योगिनी , परी , अपरा भैरवी इत्यादि निवास करते हैं। उन्हें गन्धर्व लोक कहा जाता है।

4. **महः— स्वर्गलोकः—** इस लोक में 33 कोटी देवता निवास करते हैं तथा इस लोक के राजा इन्द्रदेव हैं। इसकी मान्यता है कि मृत्युलोक अर्थात पृथ्वी से सूर्यलोक की जितनी दूरी है उतनी ही दूरी सूर्यलोक से स्वर्गलोक की दूरी है।

5. **जनकः—वैया नरलोक**ः— इस लोक में ब्रम्हा , विष्णु , महेश तथा दश महा विद्या का निवास है। इसे दस महाविद्या लोक भी कहा जाता है।

6. **तपहः—गो लोकः—** इस लोक में मुख्य रूप से कृष्ण और महादुर्गा का निवास है और इसी लोक से मोक्ष की प्राप्ती होती है।

7. **सत्यम्ः— कवल्य लोकः—** इस लोक में राम—राम सत्य की प्रथा है।

सृष्टि की उत्पत्ति

सतयुग में नारायण भगवान से जिसकी नाभि में कमल है उससे चार मुह वाले ब्रम्हा जी उत्पन्न हुए जिन्हें वेद, वेदान्ता, भगवान कहे गये।

ब्रम्हा जी के मुख से ब्राम्हण, बाहुओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य, पैरों से क्षूद्र की उत्पति हुई। तत्पश्चात् देव,गन्धर्व,दानव,राक्षस,सर्प,नाग,जल के जीव, स्थल के जीव, नदी, पर्वत, और बृक्ष आदि को पैदा किये।

प्रथम पुत्र के रूप में दक्ष प्रजापति जी के उत्पति हुई। अन्तिम पुत्र के रूप में चित्रगुप्त जी की उत्पति हुई।

सृष्टि की रचना हो जाने के फलस्वरूप इसे सुचारू से आगे उत्तरोत्तर वृद्धि करने एवं जन्म—मरण की पूर्ती के लिए एक सुयोग्य धर्मनिष्ठ महापुरूष/शक्ति की आवश्यकता हुई।

इस पुनीत कार्य के लिए भगवान धर्मराज को धर्म प्रधान जानकर ब्रम्हा जी ने उन्हें सभी लोंकों का अधिकार प्रदान किया और निर्देशित किया कि जीवों ने जैसा कर्म किये हैं उसी अनुसार न्याय पूर्वक वेदशास्त्रो के निर्देशों का पालन विधि के अनुसार`कर्ता को कर्म, फल दें और मेंरी आज्ञा का पालन करें।

भगवान धर्मराज ब्रम्हा जी से निवेदन किया और कहा कि इस सारे जगत के कर्मो का विवरण विवेक पूर्वक फल देने की आज्ञा दी है यह एक महान कठीन कर्म है आप की आज्ञा शिरो धारी है परन्तु पुरी सृष्टि में जीव और उनके कर्म तथा देह भी अनन्त हैं और साथ ही साथ ज्ञात और अज्ञात भेंदो से कर्म भी अनन्त है। इसमें किसने कराया, किसने किया, कितना भोगे, कितना शेष बचा इसका भोग क्या होगा, इसे किस प्रकार भोगें जायेंगे इत्यादि यह एक गहन कर्म चक्र है। जिसका विशलेषण भी करना अनिवार्य है।

इसे अकेले किस प्रकार कर सकूँगा इस कारण आप मुझे कोई धार्मिक, बुद्धिमान,शीघ्रकारी,लेखकर्म में प्रविण, चमत्कारी, तपस्वी, ब्रम्हनिष्ट,वेदज्ञाता कर्मनिष्ट एवं सब प्रकार निपुण ऐसा सहायक प्रदान कीजिए जिससे उपरोक्त कार्य गुणवत्ता एव निष्ठा पूर्वक किया जा सके।

इस भाव को सुनकर ब्रम्हाजी विचार करने लगे और आत्म मंथन करते हुए भगवान धर्मराज से कहा मैं इस कार्य में तुम्हारी अवश्य सहायता करूँगा लेकिन इस कार्य के लिए धैर्य एवं सयंम की आवश्यकता है। इसे अवश्य पूरा किया जायेगा।

मृत्युलोक के देव

क्र0सं0	**देवों के नाम**	**निवास स्थान**	**वायुमंडल**	**कार्य का वर्गीकरण**
1.	भगवान ब्रम्हा (पितामह)	गोमुख	दूधिया	सृष्टि के रचनाकार
2.	भगवान विष्णु (नारायण)	क्षीर सागर	गुलाबी	सृष्टि के पालनहार
3.	भगवान शिव	कैलाश	नीला	सृष्टि के विनासक

युगों का संक्षिप्त विवरण

1. सतयुग को धर्मयुग भी कहा जाता है।
2. त्रेतायुग को कर्मयुग कहा जाता है।
3. द्वापरयुग को प्रेमयुग कहा जाता है।
4. कलयुग को भोगयुग कहा जाता है।

नोटः—कुछ धर्म गुरूओं द्वारा एक दिवस को भी युगों में विभाजित किया गया है जिसका कोई प्रमाणित आधार नही है।

क्र0सं0	युग	समय के अनुसार	कार्य एवं कर्म
1.	सतयुग	4 बजे सुबह से 10 बजे तक	भगवत गुणगान एवं अच्छे कार्यों के लिये
2.	त्रेतायुग	10 बजे सुबह से 4 बजे सायं तक	अपने कर्म से धन कमाने और धन उपार्जन के लिये
3.	द्वापरयुग	4 बजे सायं से 10 बजे रात्री तक	प्रेम—प्रंपच एवं गृहकार्य के लिये
4.	कलयुग	10 बजे रात्री से 4 बजे सुबह तक	कुकर्म एवं अपराध और बुरे कर्म के लिये

ब्रम्हा जी का संक्षिप्त परिचय

भगवान ब्रम्हाजी हिन्दू धर्म के सर्वोच्च त्रिदेवो (ब्रम्हा विष्णु महेश) में से एक है जिन्हें सृष्टि का रचियता माना जाता है ये ज्ञान, वेदों और बुद्धि के देवता है।

बम्हा जी की आकृति और विशेषता

1. ब्रम्हा जी के चार सिर और चार भुजाधारी माना जाता है
2. ब्रम्हा जी को वयोवृद्ध पुरूष के रूप में चित्रित किया जाता है।
3. ब्रम्हा जी के पास हंश वाहन और वेद है।
4. ब्रम्हा जी सृष्टि के रचियता को सम्पूर्ण ब्रम्हाड के सृजनकर्ता कहा जाता हैं।
5. इनकी दो पत्नीया मानी जाती है
    1. सावित्री
    2. गायत्री
    3. सरस्वती देवी इनकी पुत्री शक्ति मानी जाती है।

1. ब्रम्हाजी ने 84 लाख जीव प्रजातियों की रचना की है।

नोटः—ब्रम्हाजी को वेदो के रचियता और ज्ञान के भंडार के रूप में एक शांत और बुद्धिमान वृद्ध व्यक्ति के रूप में देखा जाता हैं।

विष्णु पुराण एंव ब्रम्ह वैर्वत पुराण के अनुसार
भगवान ब्रम्हाजी के अवतार

सनातन धर्म की मान्यता है कि ब्रम्हाजी के निम्न अवतार हुये है।

भगवान ब्रम्हा जी के अवतार
1 महर्षि वाल्मीकी जी
2 महर्षि कश्यप जी
3 महर्षि वछेस जी
4 महर्षि चन्द्रदेव जी
5 महर्षि वृहस्पति जी
6 महर्षि कालीदास जी
7 महर्षि स्वर जी

भगवान ब्रम्हा जी के पुत्र जो उनके अगों से उत्पन्न हुये

क्र0सं0	ब्रम्हा जी के अंगो का नाम	ऋषि मुनी
1—	मन से	भरिषि
2—	नेत्र से	अग्नि
3—	मुख से	अगस्त
4—	कान से	पुलस्त
5—	नाभि से	पुलह
6—	हाथ से	कृत
7—	त्वचा से	मृगु
8—	प्राण से	वशिष्ट
9—	अगुष्ठान से	दक्ष
10—	छाया से	कदर्म
11—	इच्छा से	सनक, सनान्दन, सनातन सनत कुमार
12—	ध्यान से	चित्र गुप्त कायस्थ परिवार के प्रथम देव
13—	तेज से	सरस्वती देवी विधा की देवी
14—	गोद से	नारद मुनी

नोट—उपरोक्त सभी देव, ऋषि, मुनी, न्यायाधीश, विघा की देवी और भगवान नारद स्वयम् भू भी कहे जाते है।

भगवान सदा शिव एवं विष्णु जी द्वारा ब्रम्हा जी के कर्म फल के अनुसार हाशिए पर लाना

भगवान ब्रम्हा जी संसार के संरचना करने वाले हैं तथा इनकी पत्नी माँ सरस्वती देवी हैं जो विश्व को विद्या प्रदान करती हैं । सभी के जीह्वा पर विराजमान होकर अपनी इच्छा तथा उस व्यक्ति विशेष के स्वभाव के अनुसार उसकी वाणी मे विराजमान होकर सब कुछ कहती एवं कराती हैं।

भगवान ब्रम्हा जी का पूरे भारत वर्ष में केवल एक ही मन्दिर है जो राजस्थान के पुष्कर में स्थापित है। पद्म पुराण के अनुसार ब्रम्हा जी नें संसार की भलाई के लिये पुष्कर में यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के नियम के अनुसार अपनी पत्नी के साथ ही यज्ञ किया जाय। सरस्वती देवी अपने सिगांर में अधिक व्यस्त होने के कारण समय से यज्ञ मे नहीं पहुँचने के कारण ब्रम्हा जी ने एक स्थानीय ग्वालिन से शादी कर लिया और यज्ञ में बैठ गये। जब ब्राम्हणी यज्ञ स्थान पर पहॅुची तो यह देख बहुत क्रोधित हो गई और उसी क्षण उन्होंने ब्रम्हा जी को श्राप दे दिया कि संसार आप को भुला देगा और देवता होने के पश्चात् भी कही और कभी भी आपकी पुजा नहीं होगी, सभी देवी , देवताओं के कहने के बाद भी अपना श्राप वापस नहीं लिया, इसी कारण ब्रम्हाजी कि धरती पर केवल पुष्कर राजस्थान में ही ब्रम्हा का मन्दिर और पूजा होगी, और कहीं भी इनकी पूजा नहीं होगी और न ही कहीं दूसरा मन्दिर बनेगा और कहीं पूजा हुई तो विनाश हो जाएगा। सनातन धर्म के दो ग्रन्थों में सरस्वती पुराण एवं मत्सत्य पुराण में सृष्टि के रचइता ब्रम्हा को अपनी ही बेटी सरस्वती से शादी करने का प्रसंग है जिसके फल स्वरूप इस धरती के प्रथम पुत्र (मानव) मनु का जन्म हुआ। स्वरस्वती पुराण के अनुसार सृष्टि की रचना करते समय ब्रम्हा ने सीधे अपने वीर्य से स्रस्वती को जन्म दिया था और तभी से मैथुन क्रिया का विस्तार हुआ।

ब्रम्हा जी का अपनी ही पुत्री से विवाह का असली रहस्य और सच क्या है यह तो आज भी शोध का विषय है। इसपर गम्भीरता से विचार विमर्श करने की आवश्यकता है।

भारतीय पौराणिक इतिहास में ब्रम्हा जी का नाम महत्व पूर्ण रूप से प्रकट है जब कि प्रचलित समाज में विष्णु और शिव को श्रेष्ठ माना गया है।

ब्रम्हा जी को हाशिये पर लाने दिए जाने के कई कारण है।

1. ब्रम्हा जी को अपनी ही पुत्री से शादी करना क्योंकि वह अति सुन्दर थी।
2. ब्रम्हा जी को ग्वाला की बालिका से दूसरी शादी करना जो सामाजिकता के अनुकूल नही था।
3. सदा शिव ने ब्रम्हान्ड की खोज लेने के लिए जब ब्रम्हा जी एवं विष्णु जी को भेजा तो ब्रम्हा जी ने वापस लौटकर सदा शिव से असत्य वचन कहां कि मैने ब्रम्हान्ड का खोज लिया है और उसकी साक्षी केतकी है।
4. सदा शिव के प्रागंण में कभी भी असत्य वचन नही बोलना चाहिए। और न कोई असत्य कसम लेना चाहिए। इसका बहुत ही बुरा प्रभाव पडता है और इस प्रभाव से कभी मुक्ति प्राप्त नही की जा सकती है।

उपरोक्त के परिपेक्ष में कहां जा सकता है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की परिभाषा यहां चरितार्थ होती है।

भगवान विष्णु जी का संक्षिप्त परिचय

भगवान विष्णु का दूसरा मुख्य नाम भगवान नारायण भी है। इनका प्रागट्य भगवान शिव अर्थात भोलेनाथ द्वारा मानी जाती है। इनके अराध्य स्थल अत्यधिक है। ये भी कहा जा सकता है कि अनन्त है सभी देवों में सबसे प्रिय देव हैं तथा सभी लोक के पालन हार भी हैं।

शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव जी ने ही विष्णु जी को उत्पन्न किया एक बार शिव जी ने पार्वती से कहा कि एक ऐसा पुरूष होना चाहिए जो सृष्टि का पालन कर सके और शक्ति के प्रभाव से विष्णु जी का प्रागट्य हुआ। समय – समय पर अवतरित होकर लोक कल्याण के लिये, परिस्थित के अनुरूप पृथ्वी लोक से दुष्टों एवं अत्याचारीयों से मुक्त कराने एवं धर्म रक्षा के लिये भिन्न भिन्न रूपों में अवतरित हुए।

मान्यता है कि भगवान विष्णु के 24 अवतार हैं लेकिन इसमें एक अवतार होना अभी शेष है।

भगवान विष्णु के 10 मुख्य अवतारो का संक्षिप्त परिचय

क्र0 सं0	**अवतार**	**अवतरण होने का मुख्य कारण**	**युग**
1.	मत्स्य अवतार	प्रलय से बचाने के लिये	सतयुग
2.	कूर्म(कछुआ) कच्छप अवतार	समुद्र मंथन के लिये	सतयुग
3.	बराह / सुकर अवतार	पृथ्वी को समुद्र से निकालने के लिये	सतयुग
4.	नरसिंह अवतार	राजा हिरणय कशिपु के वध एवं प्रहलाद जी को बचाने के साथ अमृत्व प्रदान करने के लिये	त्रेतायुग
5.	वामन अवतार	प्रहलाद के पौत्र दैत्य राज राजावली को मारने के साथ मुक्ति प्रदान करने के लिये	त्रेतायुग
6.	परशुराम अवतार	सहस्त्र बाहु एवं क्षत्रियों के विनाश के लिये	त्रेतायुग
7.	श्रीराम अवतार	राक्षस राज रावण के बध के लिये और उनके उद्धार के लिये	त्रेतायुग
8.	श्रीकृष्ण अवतार	अधर्मियों के राजा कंश के मारने के लिये	द्वापरयुग
9.	बुद्ध अवतार	देवताओं के हित के लिये एवं समाज को दिशा देने के लिये	कलयुग
10.	कलकि अवतार	अवतार होना संभावित है।	होना शेष है

भगवान विष्णु के 14 अवतारों का संक्षिप्त विवरण

क्र0 सं0	विष्णु अवतार	अवतार होने का उदेष्य
1.	क. सनक	इन चारों मुनियों का प्रागट्य काल में मोक्ष मार्ग नारायण नाम में तल्लीन रहने वाले थे इस कारण ये ब्रह्मा के प्रथम पुत्र हैं और इन पुत्रो को विष्णु का अवतार ही माना जाता है।
	ख. सनन्दन	
	ग. सनातन	
	घ. सनत कुमार	
2.	नारद मुनि	सात मानस पुत्र में से एक नारद जी को ही विष्णु का अवतार माना जाता है।
3.	नर–नारायण	तपस्वियों के समान ही थे, इसलिये इन्हें विष्णु अवतार माना जाता है।
4.	कपील–मुनि	सांख्य दर्शन के प्रवर्तक थे और माता पिता को सांख्य योग्य का ज्ञान प्रदान के लिये।
5.	दत्तात्रेय मुनि	उनकी पत्नी माता अनसुइया के प्रताप से ही त्रिदेव को बाल रूप प्रदान करने के लिये और पुनः उन्हे पत्नीयों के अनुरोध पर पुनः पूर्ण अवस्था प्राप्त करने के लिये ।
6.	यज्ञ अवतार	स्वायम्भव मानव मन्वन्तर में इन्द्र के स्थल पर प्रकट होने के लिये।
7.	भगवान अटत्र देव	अपने तेज के प्रभाव से इनका नाम स्त्रीयों के सम्मान के लिये प्रसिद्ध है।
8.	आदि राज पृयु	दाहिने हाथ में चक्र एवं पैरों में कमल का चिन्ह के आधार पर नाम करण किया गया था।
9.	भगवान धनवन्तरि	समुद्र मंथन में कलश (अमृत) के साथ प्रगट हुए और औषधियों के ज्ञाता हैं।
10.	मोहनी अवतार	अमृत बचाने के लिये मोहनी का रूप धारण करना पड़ा था।
11.	हथद्रयग्रीव अवतार	वेद हरण को बचाने के लिये अवतार लेना पड़ा था।
12.	हंस अवतार	ब्रम्हा जी द्वारा मोक्ष के संबन्ध में चर्चा करने लगे तभी हरि ने महाहंस का रूप धारण कर मुनियों का संदेह दूर किया।
13.	महर्शि वेद व्यास	मनुष्यों की आयु और शक्ति को देखते हुये वेद को चार भागों में विभाजित किया एंव महाभारत के

		रचनाकार भी हैं।
14.	हरि औतार	मगरमच्छ से गजेन्द्र (हाथी) को बचाने के लिये अवतार हुआ।

इस प्रकार 14 अवतार हुए इनकी कथायें , लिलायें एवं शास्त्र भी अनन्त हैं। साथ ही साथ पुजा अर्चना की विधि विधान भी अनेक हैं। इसमें हर प्रकार के मानव जीवन से संम्बन्धित एवं कल्याणकारी उपदेश के साथ मानव के कष्टों के निवारण के उपाय भी हैं। जो इसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है इन संसाधनों से ईश्वर के दर्शन, साक्षात्कार एवं मोक्ष भी प्राप्त किया जा सकता है।

भगवान शिव

भगवान शिव पौराणिक देव ही नहीं अपितु पंचदेवों में प्रधान अनादि सिद्ध परमेश्वर हैं एवं शास्त्रों में महापंडित महादेव हैं। वेदों में इस परमतत्व को सृष्टि के रचइता पालनहार एवं संधारकर्ता भी कहा गया है।

शिव का वास्तविक अर्थ :– कल्याण स्वरूप और कल्याण प्रदाता है। ये सभी के लिये परम मंगलमय , परम कल्याणकारी , सर्वसिद्धि दायक और सर्वश्रेयकर हैं।

शास्त्रों के अनुसार ब्रम्हा विष्णु भी शिव की ही उपासना करते है। विष्णु के सभी अवतारों में सबसे प्रिय एवं महत्व, सामर्थवान अवतार श्री राम एवं श्री कृष्ण भी इन्हीं के अराध्य देव हैं।

मृत्युलोक के सर्वमान्य देव शिव ही हैं और इन्हीं के सानिध्य में इस लोक का संचालन होता है यही इस लोक के जीवों की उत्पत्ति कर्ता, पालन हार एवं संघारकर्ता भी शिव के अधीन ही है।

शिव के नाम अनन्त हैं और अलग–अलग स्थानों पर इन्हें भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा भी जाता है। विश्व के सभी देशों में शिव मंदिर भिन्न – भिन्न नाम से मिलते हैं और यहाँ भी इनकी पूजा अर्चना हुआ करती है।

भारत वर्ष में अनेक मन्दिर के साथ उनके अलग–अलग नाम करण भी है। इसमें मुख्य रूप से 12 नाम हैं जिन्हें द्वादस ज्योतिलिंग कहा जाता

है। ये सभी ही अत्यन्त प्रभावशाली एवं मनोकामना पूर्ति एंव मोक्ष प्रदान करने वाले है। इनकी मान्यता शिव अवतार में होती है।

शिव की बन्दना करते हुए इनका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करता हूँ।

श्रीविश्वेश्वर (विश्वनाथ) महादेव :–

यह ज्योतिर्लिंग उतरभारत की प्रसिद्ध नगरी काशी (वाराणसी) में स्थित है। मान्यता है कि इस नगरी का प्रलय काल में भी लोप नहीं होता। तत्कालीन समय में भगवान शिव अपनी निवास भूमि को अपने त्रिशूल पर धारण कर रखा हैं। पुराणों में इस ज्योतिलिंग के संबध में कथा है–

भगवान शिव पार्वती जी के साथ विवाह कर कैलाश पर्वत पर रह रहे थे लेकिन वहाँ पिता के घर में विवाहित जीवन पार्वती जी को अच्छा नहीं लगा, एक दिन उन्होंने भगवान शिव से कहा कि आप मुझे अपने घर ले चलिए, यहाँ अच्छा नहीं लगता है। सारी लड़कियां शादी के पश्चात् अपने पति के घर जाती हैं, मुझे पिता के घर रहना पड़ रहा है। भगवान शिव ने यह बात स्वीकार कर ली और पार्वती जी को साथ लेकर पवित्र नगरी काशी में आ गये। यहां आकर वे विश्वेश्वर ज्योतिलिंग के रूप में स्थापित हो गये। इसे विश्वनाथ के नाम से भी जाना जाता है।

यह स्थान जनपद वाराणसी राज्य उत्तर–प्रदेश में स्थित है।

श्रीनागेश्वर महादेव :–

पुराणों में यह कथा आती है कि सुप्रिया नामक एक बड़ा ही धर्मात्मा और सदाचारी वैश्य था वह भगवान शिव का अनन्त भक्त था। वह निरन्तर विधि विधान से पुजा अर्चना किया करता था। दारूक नाम का एक राक्षस ने उसे बन्दी बना लिया था। सुप्रिया अपने और बन्दियों के मुक्ति के लिए भगवान शिव की अराधना करने लगा। यह देखकर दारूल राक्षस ने सभी को मारने (मृत्यु दण्ड) के लिए आदेश दे दिया परन्तु शिवभक्त सुप्रिया तनिक भी विचलित नहीं हुआ और शिव आराधना में और तल्लीन होकर आराधना करने लगा। भगवान शिव आराधना के वसीभूत होकर कारागार में ही एक ऊँचे स्थान पर सिंहासन पर स्थित होकर ज्योतिलिंग के रूप में प्रकट हो गये और भगवान शिव ने दर्शन देकर अत्यन्त महत्वपूर्ण पाशुपत अस्त्र प्रदान किया। इसी अस्त्र से राक्षस दारूक और उनके सेना का वध

हुआ और सुप्रिया शिव ध्यान हो गये। भगवान शिव के आदेशानुसार ही इस ज्योतिलिंग का नाम नागेश्वर पड़ा। यह स्थान जनपद स्वराष्ट्र द्वारिका धाम प्रान्त गुजरात में स्थित है।

श्रीमहाकालेष्वर महादेवः—

इस ज्योतिलिंग के बारे में पुराणों में यह कथा आती है कि किसी समय एक वेदपाठी , तपोनिष्ट एवं तेजस्वी एक ब्राम्हण रहते थें। एक दिन टूशण नामक अत्याचारी असुर उनकी तपस्या में बाधा डालने वहां आया। ब्रम्हा जी के वरदान से वह बहुत ही बलशाली हो गया और सभीलोगों पर अत्यधिक अत्याचार करने लगा तथा उसके अत्याचार से चारो तरफ कोहराम मच गया। ब्राम्हण के कष्ट को देखकर प्राणी मात्र एवं लोककल्याण के लिये भगवान शिव स्वयं वहां प्रगट हो गये वह अपने हुंकार मात्र से ही सभी राक्षस को जलाकर राख कर दिया। भगवान वहां हुंकार के साथ प्रगट हुए इसी कारण उनका नाम महाकालेश्वर पड़ा। इस लिये इस पवित्र ज्योतिलिंग का नाम श्रीमहाकालेश्वर पड़ गया।

यह ज्योतिलिंग शिप्रा नदी के किनारे पुण्य सलिला शिप्रा , जनपद उज्जैन नगर मध्य प्रदेश में स्थित है।

श्रीओंकारेष्वर , श्रीअमलेष्वर महादेव :—

ग्रथों के अनुसार है। मानधाता नदी के दो भागो में विभाजित हो जाने के कारण एक टापू बन गया, जिसे मानधाता पर्वत अथवा शिवपुरी कहते हैं। नदी की एक धारा दक्षिण तथा दूसरी धारा उत्तर दिशा को बहती है यों कहा जाय तो ज्यादा उचित होगा कि दोनों धाराये एक दूसरे के विपरित बहती हैं और दखिण की धारा को ही मुख्य धारा मानते हैं। इस टापू के बीच राजा ने घोर तपस्या करके भगवान शिव को प्रसन्न किया था इस कारण इस तपोस्थल को मानधाता पर्वत भी कहा जाता है।

इस ज्योतिलिंग मन्दिर के भीतर—भीतर कोठरियों (कमरे) से होकर जाना पड़ता है। कमरे के भीतर अंधेरा होने के कारण यहां निरन्तर प्रकाश की व्यवस्था है। ओंकारेश्वर लिंग मनुष्य निर्मित है। इस ओकारेश्वर लिंग का दो स्वरूप है एक को अमलेश्वर के नाम से जाना जाता है जो अमलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है, दूसरा नर्मदा नदी के दक्षिण तट पर ओंकालेश्वर से

थोड़ी दूर पर स्थित है दोंनों शिवलिंग अलग–अलग होने पर भी गणना एक में ही की जाती है। यह दोनों ज्योतिलिंग नर्मदा नदी के विभाजन के साथ जिला गढ़वा मध्य–प्रदेश में स्थित है।

श्रीवैद्यनाथः–

इस ज्योतिलिंग के विषय में यह कथा है कि है कि राक्षस राज रावण हिमालय पर्वत पर भगवान शिव का दर्शन प्राप्त करने के लिये घोर तपस्या किया और एक–एक सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ा डाले। जब दशवां और अन्तिम सिर चढ़ाने के लिये उद्धत हुआ तो भगवान शिव प्रगट होकर उससे वर मागने के लिये कहा। रावण ने वर के रूप में उस शिवलिंग को अपनी राजधानी लंका ले जाने की अनुमति मांगी। भगवान उसे सशर्त वरदान दिया कि यदि इसे रास्ते पर कहीं रख दोगे तो यह वहीं अचल हो जायेगा फिर उसे नहीं उठा सकोगे। चलते–चलते रावण को लघुशंका करने की आवश्यकता महसूस हुई, रावण ने शिवलिंग को एक अहिर के हाथ में थमा दिया और निवृत के लिये चला गया। शिवलिंग का भार अधिक मालूम होने पर अहिर उसे संभाल नहीं पाया और भूमि पर रख दिया। जब रावण निवृत होकर आया और रावण ने उसे उठाने का बहुत प्रयास किया लेकिन उठा नहीं पाया, और अन्त में शिवलिंग पर अपने अगूठे का निशान बनाकर उसे वहीं छोड़ कर लंका चला गया, और यहीं ज्योतिलिंग श्रीवैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह ज्योतिलिंग विहार प्रान्त में सन्थाल जनपद था वर्तमान समय में राज्य का विभाजन होने पर झारखण्ड राज्य में स्थित है।

श्रीभीमेश्वर महादेवः–

शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग का वर्णन इस प्रकार किया गया हैः– भीम नाम राक्षस ने भगवान शिव का प्रिय भक्त कामरूप नरेश सुदाक्षिण पार्थिक शिवलिंग रखकर अर्चना कर रहे थे उन्हें ऐसा करता देख राक्षस भीम ने उस शिवलिंग पर अपनी तलवार से प्रहार किया। शिवलिंग का तो कुछ नहीं हुआ परन्तु उसके भीतर से शिव प्रकट हुए, उन्होंने अपनी हुंकार से उस राक्षस को भस्म कर दिया, तत्–पश्चात् ऋषि मुनि व देवगणों ने भगवान शिव की स्तुति की और लोक कल्याण हेतु इसी स्थान पर सदा निवास करने की प्रार्थना की भगवान शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर

ली और ज्योतिलिंग के रूप में सदा–सदा के लिये निवास करने लगे। उनका यह ज्योतिलिंग श्रीभीमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है।

यह ज्योतिलिंग असम राज्य के गोहाटी जनपद में जो ब्रम्ह्पुर पहाड़ी पर स्थित है।

श्रीमल्लिकार्जुनः–

पुराणों में इस ज्योतिलिंग की कथा इस प्रकार बताई गई है :– भगवान शिव के दोनों पुत्र भगवान गणेश और श्री स्वामी कार्तिकेय इसलिए में झगड़ रहे थे कि दोनों ही पहले अपना विवाह करना चाहते थे उनके इस झगड़े को देखकर भगवान शंकर और माँ पार्वती ने कहा कि तुम लोगों में से जो पहले पृथ्वी का चक्कर/परिक्रमा लगाकर लौट आएगा उसी का विवाह पहले किया जायेगा। श्री स्वामी कार्तिकेय तुरन्त पृथ्वी प्रदक्षिणायें (परिक्रमा) के लिए दौड़ पड़े पर श्री गणेश जी ने दूसरा उपाय सोचा, साथ में बैठे माता–पिता का पूजन करने के पश्चात् उनकी सात प्रदाक्षिकाएं पूरी कर उन्होने पृथ्वी प्रदक्षिणा का कार्य पूरा कर लिया। जब तक स्वामी कार्तिकेय रूष्ट लौटकर आते तब तक गणेश जी का विवाह भी हो चुका था और दो पुत्र भी हो चुके थे। स्वामी कार्तिकेय रूश्ट होकर चले और माता पार्वती स्वामी को मनाने के लिये पहुची पीछे भगवान शंकर वहां पुहँच कर ज्योतिलिंग के रूप में प्रगट हो गये और सर्वप्रथम इनकी अर्चना मल्लिका पुष्पों से की गई थी इसलिये इसका नाम मल्लिकार्जुन पड़ा।

यह ज्योतिलिंग आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा नदी के तट पर कृष्णा शैल प्रर्वत पर स्थित है और इस पर्वत को दक्षिण कैलाश कहा जाता है।

श्री श्री सोमनाथ महादेवः–

इस ज्योतिलिंग कथा पुराणों के अनुसार दक्ष प्रजापति की 27 कन्यायें थीं। उन सभी का विवाह चन्द्रदेव से हुआ था किन्तु चन्द्रमा का अनुराग उनमें से एक बहन रोहिणी के प्रति रहता था जिसे अन्य कन्यायों को बहुत कष्ट रहता था। बहुत समझाने के पश्चात् कोई अन्तर न पड़ा, अन्ततः दक्ष ने क्रोध में होकर उन्हें चन्द्रमा क्षयी होने का श्राप दिया। चन्द्रमा भी बहुत दुखी और चिन्तित थे उनकी प्रार्थना पर देवताओं ने ब्रम्हा जी श्राप मुक्ति

के लिये अनुरोध किया। तत्पश्चात् चन्द्रदेव ने महामृंत्युजंय मंत्र का जप किया , तब प्रसन्न होकर भगवान की अराधना और घोर तपस्या करते हुये दश करोड़ महामृत्युजंय मंत्र का जाप किया, प्रसन्न होकर शिव अमरत्व का वर प्रदान किया। श्राप मुक्ति होकर चन्द्रदेव ने अन्य देवताओं के साथ मिलकर भगवान शिव से प्रार्थना की आप माता पार्वती के साथ सदा के लिए प्राणियों के उद्धारार्थ यहां निवास करे। भगवान शिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके ज्योतिलिंग के रूप में माता पार्वती के साथ यहीं निवास करने लगे।

यह ज्योतिलिंग सोमनाथ नामक विश्व प्रसिद्ध मन्दिर में स्थापित है। यह मन्दिर गुजरात में काठियावाड़ जनपद में स्थित है।

श्री घुमेश्वर महादेवः–

पुराणों के कथा के अनुसार सुधमा नामक एक तपोनिष्ठ ब्राम्हण था जिसके पत्नी का नाम सुदेहा था। उनके कोई सन्तान नहीं थी संतान के इच्छा प्रबल होने के कारण अपनी छोटी बहन घुश्मा का विवाह सुछमा के साथ करा कर एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। सभी प्रसन्न थे सुदेहा के मन में कुविचार आने लगे कि यहां मेरा कुछ नहीं है और सब कुछ धुष्मा का है। एक दिन अपने पुत्र को मारकर तालाब में फेंक दिया जिसमें धुष्मा पूजन के उपरान्त शिवलिंग छोड़ दिया करती थी। इस बात का पता चलते ही चारो तरफ कोहराम मच गया परन्तु धुश्मा रोज की भांति पुजन कर शिवलिंग को उसी तालाब में विसर्जित करने गई तब उसने देखा कि उसका पुत्र उसी तालाब से चला आ रहा है। इस समय भगवान शिव प्रकट होकर धुष्मा से वर मागने के लिये कहा प्रभु आप प्रसन्न है तो हमारी इस अभागिन बहन को क्षमा कर दें। और लोक कल्याण के लिये इस स्थान पर सदा के लिये निवास करें। तभी से ज्योतिलिंग के रूप में वही निवास करने लगे। सती शिवभग्ता धुष्मा के अराध्य होने के कारण वे यहां धुमेश्वर महादेव के नाम से विख्यात हुये।

यह स्थान महाराष्ट्र के दौलतावाद से लगभग 12 किलोमीटर पर ग्राम वेरूल में स्थित है।

.

श्री केदारनाथ महादेवः–

इस ज्योतिलिंग कि कथा पुराणों में इस प्रकार है इस भूमि पर महातपस्वी श्री नर और नारायण ने बहुत वर्षो तक भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की। कई हजार वर्षों तक निराहार रहकर एक पैर पर खड़े होकर शिव के नाम का जप करते रहे। अन्त में भगवान शिव उनकी कठीन साधना से प्रसन्न हो उठे। उन्होंने इन ऋषियों को दर्शन कर कृतार्थ किया। दर्शन पाने के पश्चात् वर मांगने के लिये कहा इस पर ऋषियों ने नर–नारायण ने कहा कि आप भक्तों के कल्याण के लिये सदा एंव सर्वदा के लिये अपने स्वरूप को यहां स्थापित करने की कृपा करें उनकी प्रार्थना सुनकर भगवान शिव ने ज्योतिलिंग के रूप में वहां निवास करना स्वीकार कर दिया तभी से यहां पर शिव जी विराजमान हैं। यह स्थान उत्तराखण्ड में पर्वतराज हिमालय की केदार नामक घाटी के चोटी पर यह ज्योतिलिंग स्थित है।

श्री अम्बेकेश्वर महोदवः–

शिव पुराण में इस ज्योतिलिंग के संबंध में कथा है कि महर्षि गौतम पर छल पूर्वक गोहत्या का आरोप लगा कर ब्राम्हणों ने निष्काषित कर दिया और पश्चाताप के लिए घोर तपस्या का मार्ग बताया। इस तपस्या के मार्ग पर चलने एवं महर्षि गौतम ने घोर तपस्या की जिससे भगवान शिव ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए और ब्राम्हणों को दण्ड देने के लिए कहा, परन्तु महर्षि गौतम ने कहा कि प्रभु इन्हीं के निमित्त से मुझे आप के दर्शन प्राप्त हुए है। उन्हें मेरा परम हित समझकर उन पर क्रोध न करें। बहुत से ऋषियों और मुनियों ने वहां इकट्ठा होकर गौतम के बात का अनुमोदन करते हुए भगवान शिव से सदा वहां निवास करने की प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर भगवान शिव अम्बेकेश्वर ज्योतिलिंग के रूप में वहां निवास करने लगे। महर्षि गौतम द्वारा लायी गई मां गंगाजी भी वहीं पास में गोदावरी के नाम से प्रवाहित होने लगी। यह स्थान महाराष्ट्र प्रान्त में नासिक जनपद से 30 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।

श्री सेतुबन्ध रामेश्वरम् महादेवः–

इस ज्योतिलिंग के संबध में कहते हैं कि जब श्री राम जी श्रीलंकापर चढ़ाई के लिये जा रहे थे भगवान श्री राम इसी स्थान पर उन्होंने समुद्र

तट पर बालु का शिवलिंग बना कर उनका पुजन किया था। ऐसा भी कहा जाता है कि इस स्थान पर ठहर कर श्रीरामचन्द्र जी पानी पी रहे थे तभी आकाशवाणी हुई कि मेरी पूजा किये बिना ही जल ग्रहण कर रहे हो। इस वाणी को सुनकर भगवान श्रीराम ने बालु से शिवलिंग बनाकर उनकी पूजा की भगवान की अराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रगट हुए और उन्हें दर्शन दिए और वर मांगने को कहा। भगवान श्रीराम ने भगवान शिव से रावण पर विजय प्राप्त करने का वर मांगा उन्होंने प्रसन्नता के साथ यह वर श्रीराम को दिया। शिव ने लोक कल्याणर्थ ज्योतिलिंग के रूप में वहां निवास करने की सबकी प्रार्थना भी स्वीकार कर ली तभी से यह ज्योतिलिंग यहां पर विराजमान है। यह ज्योतिलिंग भगवान श्रीराम द्वारा बना कर पूजा किया गया है और यह शिवलिंक समुद्र के तट पर तमिलनाडु राज्य के रामनाथ पुरम जनपद में स्थापित है।

भगवान शिव का पुरा परिवार
शिव लिंग अरधा में ही समाहित है।

शिवलिंग के मध्य भाग में और पृथ्वी से उपरी भाग (हिस्सा) है उसे बोलचाल की भाषा में अरघा कंहा जाता है।

1. अरधा के मध्य भाग में एक छोटे आकार का गोलाकार गंड्डे का भाग होता है जिसमें शिवलिगं स्थापित किया जाता है वह भाग माता पार्वती जी के हस्त कमल का है उसे माता पार्वती जी का स्थान कहा जाता है।
2. इस हस्त कमल के ऊपर जो अन्डकार भाग होता है यह स्वयम् भगवान महादेव जी का स्थान है।
3. अरधा में शिवलिंग के दाहिने तरफ भगवान गणेश जी का चरण कमल का स्थान है।
4. अरधा में शिवलिंग के बाये तरफ भगवान कार्तीकेय जी का स्थान है।
5. भगवान गणेश जी एंव भगवान कार्तीकेय जी के बीच में एक सरपाकार आकार बना होता है वह भगवान शिव की सबसे छोटी पुत्री अशोक सुन्दरी का स्थान है।

6. शिवलिंग से होते हुये जो जलाधारी अरधा में गिरता है वहां से जिस स्थान पर जलाधारी पृथ्वी पर गिरता है उस स्थान पर 33 कोटी देवी देवता का घर या निवास स्थान होता है।
7. शिवलिंग के उपरी भाग में कलश में जो जलाधारी बन कर गिरता है उस कलश में शिवजी के पांच पुत्रियों का निवास स्थान है।

   इस प्रकार भगवान शिवजी का पुरा परिवार शिवं के साथ ही हमेशा विराजमान रहता है एवं सभी देवी देवता भी उन्ही के जलाधारी के सबसे निचले स्थान पर निवास करते है।

शिव की पूर्ण परिक्रमा क्यों नही की जा सकती है

शिव की आधी परिक्रमा इसलिये की जाती है कि क्योंकि शिवलिंग के नीचे से निकलने वाला सोममूत्र को लांघा नही जा सकता है यह जल शक्ति का स्त्रौत और पार्वती जी का अंश माना जाता है जिससे शरीर और मन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसलिये परिक्रमा जल हरि गौमुख तक जाकर वापस लौटकर पूरी की जाती है जिसे अर्ध चन्द्राकार परिक्रमा कहते है।

1. सोमसूत्र का सम्मान–
   क्योकि यह उर्जा के प्रभाव को वाधित करता है।
2. पार्वती जी का अंश–
   जलाधारी जलमुख के माता पार्वती जी का रूप माना जाता है।
3. उर्जा का संन्तुलन–
   आधी परिक्रमा अर्धचन्द्रकार करने से शरीर और मन में सकारात्मक उर्जा का संचार होता है।
4. आधी परिक्रमा से–
   नकारात्मक उर्जा कमजोर और समाप्त होती है।
5. शिव मन्दिर में <u>तीन ताली का महत्व</u>
   – अपनी भक्ति और उपस्थिति दर्ज कराने के लिये
   – मनोकामना पूर्ति के लिये
   – छमा याचना के लिये

शिव जी पर पिली सरसो चढ़ाने के लाभ

1. शत्रुनाथ होता है।
2. जीवन की बाधायें दूर होती है
3. नकारात्मक उर्जा समाप्त करने के लिये
4. घर में सौभाग्य और वृद्धि के लिये

बेलपत्र उल्टा क्यों चढाया जाता है।

बेलपत्र के उपर लक्ष्मी जी का वास होता है

बेल के निचले भाग पर भगवान शिव का वास होता है।

मॉ लक्ष्मी जी का और भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

बेलपत्र हमेशा साफ और आड संख्या में चढ़ाया जाता है।

शिव के सानिध्य का प्रभाव

1. स्वप्न में शिव को देखना या दर्शन करना शुभ माना जाता है।
2. स्वप्न में डमरू या त्रिशूल देखना शुभ माना जाता है।
3. स्वप्न में ओम का प्रतिबिम्ब देखना शुभ माना जाता है।
4. स्वयं आपका पग शिव मंदिर की तरफ अपने आप जाना शुभ माना जाता है।

भगवान शिव एंव शक्ति के 10 दस जुगल नाम जो एक साथ निवास करते है।

भगवान शिव एवं उनके संगनी माताओं के साथ सम्बोधन है। इनकी भी संख्या बहुत हो सकती है। लेकिन मुख्य शक्तिया 10 मानी गई है। जो एक दूसरे के पूरक हैं और शिव शक्ति जो एक साथ निवास करती है। जो इस प्रकार हैं।

क्र0 सं0	भगवान शिव का नाम	शक्ति	मां का नाम
1	महाकाल	शक्ति	मां महाकाली
2	तारा	शक्ति	मां तारादेवी
3	बालभुवनेश	शक्ति	मां काला भुवनेशी

4	शोड़श श्री विधेश	शक्ति	मां शोड़शी श्री विघा
5	भैरवी	शक्ति	मां भैरवी गिरिजा
6	छिन्न मस्तक	शक्ति	मां छिन्नमस्ता
7	धूमवान	शक्ति	मां घूमावती
8	बंगला	शक्ति	मां बंगलामुखी (मुखी)
9	मातंग	शक्ति	मां मातंगी
10	क्मल	शक्ति	मां कमला

भगवान शिव के 28 अवतारो के नाम

मान्यता है कि भगवान शिव के 12 ज्योतिलिंग के अतिरिक्त 28 और अवतार हुए हैं जिनका नामकरण निम्नवत है जो सभी प्रकार से शुभ, सुख, समृद्धि, मोक्ष प्रदान करने वाले हैं और श्रावण माह में इनकी महत्ता अत्यधिक बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो श्रावण मास शिव मास है। और हर छोटे बडे मंदिरो में इनकी पूजा अर्चना की जाती है।

क्र0सं0	शिव अवतार के नाम	क्र0सं0	शिव अवतार के नाम
1	दुर्बाशा	15	अश्वथामा
2	हनुमान	16	किरात
3	महेश	17	नतेश्वर
4	वृशभ	18	कपाली
5	पिप्पलाद	19	पिंगल
6	वैश्यानाथ	20	भीम
7	द्विजेश्वर	21	विरुयाक्ष
8	हंशरुप	22	विलोहित
9	अवटूतेश्रवर	23	शास्ता
10	भिक्षुवर्य	24	अज्याद
11	सुरेश्रवर	25	अपिबुर्ध्य
12	ब्रम्हचारी	26	शम्भू
13	सुनटनतर्क	27	चन्ड
14	द्विज	28	भव

चित्रगुप्त खण्ड

भगवान चित्रगुप्त जी

स्कंध पुराण के अनुसार कायस्थ के लक्षण

1. विद्या प्रेमी
2. पवित्र
3. धैर्यवान
4. दानी
5. परोपकारी
6. राष्ट्रभक्त
7. क्षमाशील

भगवान धर्मराज द्वारा ब्रह्मांड के रचियता से व्यक्ति विशेष के लिये आग्रह

सृष्टि की रचना हो जाने के फलस्वरूप इसे सुचारू रूप से सृष्टि – उतरोत्तर विधि एवं जन्म मरण की पूर्ति के लिये सुयोग्य धर्मनिष्ट महापुरूष/शक्ति की आवश्यकता है।

इस पुनित कार्य के लिये भगवान धर्मराज को धर्म प्रधान जानकर ब्रम्हा जी ने उन्हे सभी लोको का अधिकारी प्रदान किया और निर्देश दिया कि

जीवों ने जैसा कर्म किया है उसी अनुसार न्यायपूर्वक वेदशास्त्रों के निर्देशो का पालन विधि अनुसार कर्ता को कर्मफल दे और मेरी आज्ञा का पालन करे।

भगवान धर्मराज ने ब्रम्हा जी से निवेदन किया और कहा कि इस सारे जगत के कर्मो को विवरण विवेक पूर्वक फल देने की आज्ञा दी है। यह एक महान कठिन कर्म है आप की आज्ञा सिरोधार्य है परन्तु पूर सृष्टि में जीव और उनके कर्म तथा देह भी अनन्त है। और साथ ही साथ ज्ञात और अज्ञात भेदो से कर्म भी अनन्त है। इसमें किसने कराया, किसने किया कितना भोगे कितना शेष बचा इसका भोग किया होगा इसे किस प्रकार भोगे जायेगें इत्यादि यह एक गहन कर्म चक्र है जिसका विशलेषण भी करना अनिवार्य है।

इसे अकेले किस प्रकार कर सकूगां इस कारण आप मुझे कोई धार्मिक बुद्धिमान शीघ्रकारी लेखकर्म में प्रवीण, चमत्कारी, तपस्वी, ब्रम्हनिष्ठ, वेदज्ञाता कर्मनिष्ट एवं सब प्रकार से निपुरण ऐसा सहायक प्रदान किजिये जिससे उपरोक्त कार्य गुणवत्ता पूर्वक एवं निष्ठा पूर्वक किया जा सके। इस भावना को सुनकर ब्रम्हा जी विचार करने लगे और आत्म मंथन करके हुये भगवान धर्मराज से कहा मैं इस कार्य में तुम्हारी अवश्य सहायता करूगां। लेकिन इस कार्य के लिये धैर्य एवं संयम की आवश्यकता है इसे अवश्य पूरा किया जायेगा।

परम पिता ब्रम्हा जी द्वारा भगवान धर्मराज जी को सुयोग्य धर्मनिश्ठ एवं सर्वगुण सम्पन्न महापुरूष के लिए समाधि में जाना।

परम पिता ब्रम्हा जी उपरोक्त कार्य के पुर्ति के लिए दस हजार एक सौ वर्ष की समाधि लगाई जिसके प्रभाव से भगवान चित्रगुप्त जी है। भगवान ब्रम्हा जी के अंश से (काया) श्याम वर्ण महापुरूष उत्पन्न हुए जो कायस्थ कहलाये और उनका नाम चित्रगुप्त पड़ा। अपने प्रागट्य के साथ ही वयस्क अवस्था में हाथों मे कर्म की किताब, कलम, दवात और कलनाल ग्रहण किए हुये उत्पन्न हुये जिसकी शारीरिक रचना इस प्रकार है–

श्याम वर्ण कमला नयन चतुर्भुज रूप पिताम्बर वस्त्रों मे सुशोभित गले में रूद्राक्ष की माला चन्द्रमा के सामान सुन्दर मुख अत्यन्त बुद्धिमान

अवलौकिक तेज उत्तम पुरूष धर्मनिष्ठ ज्ञान के भण्डार वेद पुरणों के निधी से परिपूर्ण जिनका जन्म वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथी हो हुआ और इस तिथि का हिन्दु धर्म में अत्यन्त महत्व है। वहीं माँ गंगा स्वर्ग लोक से भगवान शिव की जटाओं तक इसी दिन पहुँची, इस लिए इस दिन को गंगा सप्तमी/गंगा जयन्ती के रूप में भी पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है।

भगवान चित्रगुप्त जी है। एक प्रमुख हिन्दु देव हैं। वेद पुराणों के अनुसार भगवान धर्मराज जी ने श्री चित्रगुप्त जी को अपने दरबार में मनुष्यों के पाप–पुण्य का लेखा–जोखा (हिसाब–किताब) रखते हुए कर्मो के अनुसार न्याय करने वाले एक मात्र देव बताये गये एंव नियमानुसार बिना–भेदभाव के अपना कार्य निष्पक्ष रूप से करने में निपुण है। जिस प्रकार शनिदेव सृष्टि के प्रथम दण्डाधिकारी देव है उसी प्रकार भगवान चित्रगुप्त जी है। सृष्टि के प्रथम न्यायाधिश हैं और इन्हें न्याय का देवता भी कहते हैं।

चित्रगुप्त वंशजों के प्रति ब्राह्मण एंव क्षत्रीय समाज द्वारा वैश्य समाज में लाने की साजिस

परम पिता ब्रम्हा जी द्वारा एक सुयोग्य धर्मनिष्ठ एवं सर्वगुण संम्पन्न महापुरुष के प्रगट के लिए दस हजार एक सौ वर्ष की तपस्या करनी पड़ी। उस कुल के हम संतान/वंशज है। जिसे कायस्थ नाम से ब्रम्हा जी ने स्वयं ही संबोधन किया है। और जिसे न्याय का देवता कहा जाता है। उसे संतान परम्परा बनाए रखने के लिए पाणि ग्रहण संस्कार ऋषि कन्याओं से हुआ हो वह जगत में सर्वश्रेष्ठ नहीं होगा तो कौन हो सकता है ?

लाला–

लाला कायस्थ के लिए आम तौर पर प्रयोग होने वाला वहुप्रचलित सम्बोधन है। लाला शब्द की उत्पत्ति पर, लाला एक अरबी भाषा का शब्द है। जिसका उद्भव भारत में मुस्लिम राज्य के स्थापना के समय ग्यारवी से बारवी शताब्दी के बीच हुआ। लाला शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है। आदेश देने वाला, जिसका प्रयोग मुस्लिम शासको ने जमींदारों एवं जागीदारों को सम्बोधन करने के लिए किया। कुछ देशों – जैसे पाकिस्तान अफगानिस्तान तथा एक राज्य जम्मू कश्मीर के कुछ इलाकों

में आज भी जमींदारों एवं जागीदारों को लाला शब्द से ही संबोधित किया जाता है।

यह एक गर्व का विषय है। की मुस्लिम राज्य के समय भारत में भी लगभग 90 प्रतिशत कायस्थ जमींदार एवं जागीदार थे। इसका मुख्य करण यह था की कायस्थोंको उर्दू अरबी व फारसी भाषाओं में सर्वप्रथम निपुणता हासिल कर लेना था । इस कारण से लाला शब्द एक विशिष्ट सम्बोधन का रुप ले लिया और इसे कायस्थ समाज के तत्कालीन समय में स्वीकार भी कर लिया।

कायस्थों के लिए इस विशिष्ट सम्मान से तत्कालीन ब्राह्मण समाज जल – भून गया तथा खड़यंत्र के तहत लाला सम्बोधन को तुच्छ संम्बोधन के रुप में स्थापित करने के लिए (वैश्य) वनियों को लाला कहना प्रारम्भ कर दिया ताकि कायस्थ हीन भावना से ग्रसित हो जाए। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि तत्कालीन समय में राय शब्द कायस्थों के उपनाम से सम्बन्धित है।

कायस्थ भारत में रहने वाले हिन्दू समुदाय की एक जातियों का वााशिक कुल है। हमारे ग्रन्थों के अनुसार कायस्थ प्रशासनिक कार्यों का निर्वहन करते है। कायस्थ को वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण धारण करने का अधिकार प्राप्त है।

कोलकता के एक कायस्थ हिन्दू धर्म की मान्यता है कि कायस्थ धर्मराज श्री चित्रगुप्त जी भगवान की संन्तान है तथा श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने के कारण इन्हे ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों धर्मो को धारण करने का अधिकार प्राप्त है।

बनारस (काशी) उत्तर प्रदेश के अनुसार चित्रगुप्त के वंशज कायस्थ को पेशवा दरबार में दिए गए उत्तर के अनुसार ब्राह्मण और क्षत्रिय से श्रेष्ठ कायस्थ है।

हम चित्रगुप्त के बेटे है,। कायस्थ हमारा नाम है।

कूट– कूट के कर्ममठ हम , हर तुलना में अतुल्य वांन है।

योग्य तो पैदा ही लेते , हम हर अनुभव की खान है।

शिष्टाचार हमारी खूबी , तेजस अपनी पहचान है।

सबके लिए है हम`हितकारी, आदर्श हमारे महान है।

ज्ञान बांटना काम हमारा , किताब कलम पहचान हैं

कायस्थ कुल में जन्म लिया है।, तभी तो हम महान है

अलौकिक वृतान्त
युधिष्टिर चित्रगुप्त जी के पुत्र थे

चित्रगुप्त जी यदि धर्मराज नहीं थे बल्कि यमराज को ही धर्मराज भी कहा जाता है और श्री चित्रगुप्त जी यमराज के मुन्शी थे तो प्रश्न उठता है कि क्या महारानी कुंती ने यमराज (धर्मराज) का आह्वान किया था उन्हें पुत्र प्रदान करने के लिए?? तो क्या युधिष्ठिर यमराज (धर्मराज) के पुत्र थे??? इस सवाल मे वो षड्यंत्र छिपा है जिसे उस समय के ब्राह्मणों नै श्री चित्रगुप्त को नीचा दिखाने के लिए कहा था. ये लोग एक तरफ तो कहते रहे कि युधिष्ठिर धर्मराज के पुत्र थे जिन्हें महारानी कुंती ने देवताओं मे श्रेष्ठ मानकर पुत्र प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया था और दूसरी तरफ ये उस समय खामोश हो जाते है जब सवाल उठाया जाता है कि कुंती ने अखिर यमराज (धर्मराज) को क्यों श्रेष्ठ माना और

क्या युधिष्ठिर यमराज के पुत्र थे?? दरअसल भगवान श्री चित्रगुप्त ही धर्मराज हैं.

यमराज तो यम लोक के **अधिशाषी प्रमुख** हैं जबकि श्री चित्रगुप्त सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हैं, धर्मराज हैं जिनके फैसलों का अनुपालन यमराज – प्रशासन करता है.

सच तो यह है कि चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) के साथ ही उपनिषद, रामायण व महाभारत काल तक किसी भी ग्रंथ मे चित्रगुप्त जी का कहीं उल्लेख नहीं है. उस समय तक धर्मराज एवं यमराज का ही उल्लेख है. बाद में पुराणों की रचना जब की गयी तो ब्राह्मणों ने साजिशन इनमे धर्मराज की जगह चित्रगुप्त जी के नाम का उल्लेख कर दिया. पद्म पुराण मे श्री चित्रगुप्त को कहीं कहीं धर्मराज जरूर कहा गया क्योंकि वेदों में स्वर्ग के न्यायाधीश को धर्मराज ही कहा गया था. पुराण मे कहीं कहीं चौदह यमों का मंत्र व वर्णन आता है मंत्र धर्मराज शब्द से प्रारंभ होकर चित्रगुप्त शब्द पर समाप्त होता है. स्कंद पुराण में एक वर्णन में भगवान विष्णु को समर्पित होने वाली भक्तों की भेंट का एक भाग यमदेव व चित्रगुप्त देव को स्वतः जाने कानिर्धारण स्वयं विष्णु जी करते हैं. अतः चित्रगुप्त किसी देवता के सहायक कैसे हो

सकते हैं. क्योंकि यदि वे देवता नहीं होते कोई रिकार्ड कीपर या मुन्शी होते तो विष्णु यमराज के साथ श्री चित्रगुप्त जी की चर्चा यहां क्यों करते. वे तो स्वयं धर्म देव अर्थात धर्मराज हैं और दशमी ही उनका दिवस है.

स्पष्ट है कि गंगा सप्तमी का चित्रगुप्त जी से कोई संबंध नहीं है. सारे देश में धर्मराज दशमी पर घरों में दीप प्रज्ज्वलित हुये थे जो सोशल मीडिया में बड़े स्तर पर दिखाये भी गये थे. उज्जैन और अयोध्या मे स्थित भारत के सबसे पुराने दोनों चित्रगुप्त मंदिर आज भी धर्मराज मंदिर व धर्म हरि मंदिर के नाम से सैंकड़ों वर्षों से जाने जाते हैं. दोनों का वर्णन स्कंदपुराण में हैं. सभी पुराणों में भी चित्रगुप्त जी को न्याय व धर्म के अधिकारी के रूप में दर्शाया गया है।

नादान लोग बतायेंगे कि युधिष्ठिर व हरिश्चन्द्र किस धर्मराज के अंश से उत्पन्न हुये थे. क्या यमराज के? जैसा कि कुछ धर्मराज व यमराज के एक होने पर जोर देते रहते हैं दरअसल दोनों श्री चित्रगुप्त अर्थात धर्मराज के ही अंश हैं.

ब्रह्मा ने चित्रगुप्त जी को कर्मानुसार पाप पुण्य का निर्णय करने व तदानुसार जीव को मृत्योपरांत उचित लोक में भेजने का फैसला करने का दायित्व सौंपा था और देवताओं मे श्रेष्ठ मुख्य न्यायाधीश होने की वज़ह से ही श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने के लिए कुंती ने भगवान श्री चित्रेगुप्त अर्थात धर्मराज का आव्हान किया था.

केवल अहंकार व द्वेष वश चित्रगुप्त जी के देवत्व को नकारना व उन्हें सहायक या मुनीम बना देना पौराणिक और वैदिक इतिहास के साथ 48 जानबूझकर की गई छेड़–छाड़ है. श्री चित्रगुप्त ही युधिष्ठिर के पिता और धर्मराज पद पर आसीन देव हैं जो न्याय व धर्म का नियंत्रण करते हैं. इसीलिए मंत्र है

"" "ओम यमाय धर्मराजाय श्री चित्रगुप्ताय वै नमः. मतलब यम यानि

नियम, धर्म यानि संहिता के अधिष्ठाता श्री चित्रगुप्त को प्रणाम." ""

उज्जैन के प्राचीनतम धर्मराज चित्रगुप्त मंदिर में जाकर देखना चाहिए. वहाँ आज भी चित्रगुप्त जी की प्राचीन प्रतिमा धर्मराज के नाम से जानी

जाती है. इसीलिये धर्मराज दशमी को प्राकट्य दिवस प्रचारित करते रहना चाहिए ताकि भ्रम दूर हो. है.

– राष्ट्रीय कायस्थ महापरिषद् जयपुर एवं राजस्थान कायस्थ महासभा एवं साथी संस्थायें

भगवान चित्रगुप्त का जीवन दर्षन एंव पौराणिक कथा

श्री नारायण के चौथे अवतार श्री दत्तात्रेय जी ने श्री पुलिस्त जी से पुछा कि हे मुनि श्रेष्ठ मेरी यह जानने की तीव्र इच्छा् है कि कायस्थ् वर्ण की उत्पति कैसे हुई? कृपया विस्तार से बताने की कृपा करें। श्री पुलिस्त मुनि ने श्री दत्रात्रेय जी से कहा कि आपने बहुत ही श्रेष्ठ प्रश्न किया हैं, यही प्रश्न एक बार गंगापुत्र भीष्म ने भी किया था जों मै बताता हूं, ध्यान पूर्वक सुनो । देवलोक में ब्रह्मा जी को चिन्तित मुद्रा में देख नारद जी ब्रह्मा जी के पास पहुचे और चिन्ता का कारण पूछा। ब्रह्मा जी ने बताया कि सृष्टि रचना के उपरान्त ब्राह्मण ,क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आदि को उनके कर्मो के अनुसार फल देने का कार्य धर्मराज जी को सौपा गया था, किन्तु मृत्यु लोक में निरन्तर आबादी बढनें से धर्मराज जी ने अब मुझे सकंट में डाल दिया हैं, सृष्टि बढ जाने से मनुष्य के कर्मो का लेखा जोखा रखना असम्भव हो गया है। नारद अब तुम ही कोई उपाय सुझाओं ताकि धर्मराज मृत्यु लोक का कार्य सुचारू रूप से कर सकें। नारद जी ने कहा कि हे प्रभु आपकी इस समस्र्ाा का समाधान तो महाप्रभु विष्णु जी के ही पास है, आपको उन्हीं का ध्यान करना चाहिये। ब्रह्मा जी महाप्रभु विष्णु जी की घोर तपस्या में लीन हो गये तथा उन्होने ११ हजार वर्षो तक तपस्या की । तदोपरान्त जब ब्रह्मा जी ने अपने नेत्रों को खोला तो सामने पाया कि अत्यन्त तेजस्वी, श्यामवर्ण, कमल नयन, चतुर्भज रूप, पीताम्बर वस्त्रों से सुशोभित, गले में रुद्राक्ष की माला को धारण किये, हाथ में कलम दवात लिये, चन्द्रमा के समान सद्रश मुख, अत्यन्त बुद्विमान एक अलौकिक उत्तम पुरूष खडा है। उत्तम पुरूष को सामने देख ब्रह्मा जी अत्यन्त हर्षित हुये तथा उन्होने पूछा कि हे पुरूषोत्तम आप कौन है, तब उन्होने बताया कि हे ब्रह्मा जी आपकी तपस्या् के दौरान ही मेरी उत्पत्ति आपकी काया से हुई है। हे तात् कृपया मेरा नामकरण कीजिये और मेरे योग्य जो सेवा हो उसकी आज्ञा दीजिये। ब्रह्मा जी अत्यन्त प्रसन्न हुये और उस उत्तम पुरूष से कहा कि चूंकि तुम्हारी उत्पत्ति मेरी काया अर्थात शरीर से हुई है, अतः तुम कायस्थ वर्ण से जाने जाओगे तथा हमने भगवान विष्णु का ध्यान अपने चित्त में गुप्त रखकर किया था और मेरी तपस्याकाल में ही तुम आश्चर्य रूप में प्रकट हुये हो इस कारण तुम चित्रगुप्त नाम से जाने जाओगे । ब्रह्मा जी ने कहा कि हे उत्तम पुरूष आप चारों वेद, छहों, अठारह पुराणों के ज्ञाता हैं, आप प्रभु, शिवजी एवं दुर्गाजी की आराधना कीजिये और वर्णो के कर्मो का हिसाब रखिए। ब्रह्मा जी से आज्ञा पाकर चित्रगुप्त जी कुटनगर पहुंचे और वहां जाकर उन्हानें मां दुर्गा जी की उपासना की । दुर्गा जी ने श्री चित्रगुप्त जी को उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें लेखन कला की जानकारी दी। लेखन कला की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् श्री चित्रगुप्त जी अवन्तिकापुर गये जहां उन्होने शिवजी की आराधना की तथा वहीं रहकर उन्होनें विधान तैयार किया जिसे सभी देवताओं तथा ऋषियों ने अंगीकृत किया। श्री चित्रगुप्त जी ने कार्तिक पक्ष की दुज के दिन न्याय करने का कार्यभार धर्मराज के सहायक के रूप में ग्रहण किया। इसी दिन यमराज अपनी बहन जमुना जी के घर गये थे तभी से भाई दुज की प्रथा प्रचलित हुई। इसी तिथि को यम द्वितीया भी कहा जाता है ।

दुज पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है, कार्तिक पक्ष की दुज एवं चैत्र पक्ष की दुज की तिथियां भगवान चित्रगुप्त जी के पूजन की विशेष तिथि है। महर्षि पुलिस्त ने कहा कि संसार को कोई भी प्राणी जो दुज पर्व पर प्रभु चित्रगुप्त जी की पूजा करेगा वह इच्छित स्वर्गलोक का अधिकारी होगा। पुलिस्त मुनि श्रेष्ठ कायस्थ वर्ण उत्पत्ति का वृतान्त सुनाते हुये बताते है कि एक समय सूर्य नारायण अपनी पत्नी तथा सुशर्मा ऋषि की पुत्री शोभावती के साथ अवन्तिा पुर पहुंचे जहां उन्होने चित्रगुप्त जी को भगवान शिव जी को आराधना में ध्यानमग्न देखा शोभावती चित्र गुप्त जी पर मोहित हो गयी। सूर्य देव तथा उनकी पत्नी शोभावती की इच्छा शक्ति को भाप गये तब उन्होने शोभावती को समझाया कि वो पार्वती का पूजन करे तभी उनको मन वाच्छित फल प्राप्त होगा। श्री चित्रगुप्त जी को अर्न्तयामी भी कहा जाता है। क्योंकि मृत्यु लोक असंख्या प्राणियों जन्म मृत्यु का लेखाजोखा रखना उनके कर्मों के अनुसार फल देना आदि इत्यादि कार्य साधारण के लिये संभव नही था इसिलये श्री चित्रगुप्त जी को महा प्रभु विष्णु जी का दूसरा रूप भी कहा गया है।

एक समय की बात शिवजी अपनी अर्द्धागनी पार्वती के साथ विचरण करते हुये सूर्य लोक पहॅुचे जहॉ उन्होने अत्यन्त सुशील रूपवती गुणवती कन्या को देखकर सूर्यदेव से सारा वृतान्त कह सुनाया। भगवान शिव ने कहा कि इस कन्या के लिये चित्रगुप्त जी से अधिक उत्तम और कोई वर नही होगा। वही शोभावती इरावती के लिये श्रेष्ठ वर है। शिवजी सूर्य देव को साथ लेकर सू शर्मा ऋषि के पास गये। तथा उन्होने सारा वृतान्त बताया यह सुनकर सुशर्मा ऋषि अत्यन्त प्रशन हुये तथा सुकर्मा ऋषि सूर्यदेव ब्रम्हा जी तथा समस्त देवताओं तथा 88 हजार ऋषियों को लेकर चित्रगुप्त जी के पास गये तथा चित्रगुप्त जी का विवाह शोभावती इरावती के साथ कराया।

(इरावती) के साथ कराया। सभी ऋषियों एवं विधिवत चित्रगुप्त जी का यज्ञोपवीत कराया सभी ऋषियों एवं देवताओं ने हर्षित होकर पुष्पवर्षा की। चित्रगुप्त जी के विवाह के अवसर पर सूर्यदेव की पौत्री नन्दिनी (सुदक्षिणा) भी उपस्थित थी जो मन ही मन इस विवाह को देखकर सोच रही थी कि काश मेरा विवाह भी चित्रगुप्त जी से हो जाता तो कितना अच्छा होता । भगवान शिवजी एवं ब्रह्मा जी नन्दिनी की इच्छा शक्ति को

भांप गये तथा यह बात उन्होने सूर्य नारायण को बताई कि उन्हें अपनी पौत्री नन्दिनी का विवाह भी चित्रगुप्त जी के साथ कर देना चाहिये, तब श्राद्वदेव मनु की पुत्री नन्दिनी का विवाह भी सभी देवताओं एवं ऋषियों की उपस्थिति में श्री चित्रगुप्त जी के साथ सम्पन्न कराया गया तथा सभी देवताओं ने हर्षित होकर पुष्प वर्षा की ।

कायस्थ वंष के सिरमौर्य भगवान चित्रगुप्तजी एंव उनका भरा पुरा परिवार

पद्म पुराण के अनुसार धर्मराज श्री चित्रगुप्त जी महाराज का परिवार

पत्नियां माता सुदक्षिणा/नंदनी (श्राद्धदेव की पुत्री) एवं माता इरावती/शोभावती (धर्मशर्मा की पुत्री)

माता सुदक्षिणा/नंदिनी से पुत्रों का विवरण

क्रमांक	नाम	उपनाम	राशि नाम	पत्नी का नाम	उपासना देवी	अल	गोत्र
1	भानू	श्रीवास्तव	धर्मध्वज	पद्मिनी	देवी नर्मदा	56 अल	मठ
2	विभानू	सूर्यध्वज	श्याम सुंदर	मालती	भद्रकालिनी	अल	सूर्यध्व्ज
3	विश्वभानू	बाल्मीकि	दीनदयाल	देवी बिम्ववती	देवी शाकंभरी	अल	हंस
4	वीरभानू	अष्ठाना	माधवराव	देवी सिंघध्वनि	देवी शाकंभरी	5 अल	हर्ष

माता इरावती/शोभावती से पुत्रों का विवरण

क्रमांक	नाम	उपनाम	राशि नाम	पत्नी का नाम	उपासना देवी	अल	गोत्र
1	चारू	माथुर	धुरंधर	पंकजाक्षी	देवी दुर्गा	84 अल	सोमर
2	सुचारू	गौड	धर्मदत्त	मंधिया	देवी शाकंभरी	32 अल	गौतम
3	चित्र	भटनागर	चित्राख्य	भद्रकालिनी	देव जयंती	84 अल	देव जयंती
4	मतिभान	सक्सेना	हस्तीवर्ण	कोकलेश	देवी शाकंभरी	106 अल	माण्डव
5	हिमवान	अम्बष्ठ	सरंधर	देवी भुंजगाक्षी	अम्बा माता	190 अल	दाल्भय
6	चित्रचारू	निगम	सुमंत	अशगंधमति	देवी दुर्गा	83 अल	कश्यप
7	चित्रचरण	कर्ण	दामोदर	देवी कोकलसुता	देवी लक्ष्मी	360 अल	हरित
8	चरूण	कुलश्रेष्ठ	सदानंद	देवी मंजूभाषणी	देवी लक्ष्मी	75 अल	कश्यप

सार्वदेशिक कायस्थ युवा प्रतिनिधि संस्था मध्यप्रदेश

श्री चित्रगुप्त पूजा विधि (Chitragupta Pooja Vidhi)

भगवान चित्रगुप्त जी के हाथों में कर्म की किताब, कलम, दवात और जल है। ये कुशल लेखक हैं और इनकी लेखनी से जीवों को उनके कर्मों के अनुसार न्याय मिलता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि को भगवान चित्रगुप्त की पूजा का विधान है। इस दिन भगवान चित्रगुप्त और यमराज की मूर्ति स्थापित करके अथवा उनकी तस्वीर रखकर श्रद्धा पूर्वक सभी प्रकार से फूल, अक्षत, कुमकुम, सिन्दूर एवं भांति भांति के पकवान, मिष्टान एवं नैवेद्य सहित इनकी पूजा करें और फिर जाने अनजाने हुए अपराधों के लिए इनसे क्षमा याचना करें। यमराज और चित्रगुप्त की पूजा एवं उनसे अपने बुरे कर्मों के लिए क्षमा मांगने से नरक का फल नहीं भोगना पड़ता है। ऊ0 नमो भगवत चित्रगुप्त देवाय का आहवान करते हुए धूप, दीप, चन्दन, लाल पुष्प से पूजन करे। श्रद्धानुसार नैवेघ, खील, भुने चने, मिठाई, ऋतुफल का प्रसाद चढायें। एक कलम बिना चिरी लेकर दवात में पवित्र जल छिड़कते हुए प्रभु का ध्यान करें।

आसन

हे प्रभु चित्रगुप्तदेव आपका सेवक आपके समक्ष यह आसन समर्पित करता है, कृपया इसे स्वीकार करें :

ॐ इदमासनं समर्पयामी । भगवते चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

पाद्य

हे प्रभु चित्रगुप्त आपके चरण कमल धोने के लिये मैं जल समर्पित करता हूं इसे स्वीकार करें :

ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामी । भगवते चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

आचमन

हे देवाधिदेव प्रभु चित्रगुप्त भगवान यह पवित्र जल आचमन के लिये प्रस्तुत करता हूं इसे स्वीकार करें :

ॐ मुखे आचमनीयं समर्पयामि । भगवते चित्रगुप्तापय नमः ।।

स्नान

हे सनातन देव आप ही जल है, पृथ्वी है, अग्नि और वायु है यह सेवक जीवन रूपी जल आपके स्नान हेतु समर्पित करता है इसे स्वीकार करें :

ॐ स्नासनार्थ जलं समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्ताय नमः ।।

वस्त्र

हे देवादिदेव, प्रभु चित्रगुप्त जी आपके चरणों में यह सेवक तुच्छ वस्त्र भेंट करता है इन्हें स्वीकार कीजियें :

ॐ पवित्रों वस्त्रं समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

पुष्प

हे परम उत्तम दिव्य महापुरूष प्रभु चित्रगुप्त भगवान आपके श्री चरणों में यह सेवक सुगन्धित पुष्प अर्पित करता है इन्हे स्वीकार कीजियें :

ॐ पुष्परमालां च समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

धूप

हे अर्न्तयामी देव आपके श्री चरणों में यह सेवक सुगन्धित धूप प्रस्तुत करता है, इसे स्वीकार कीजियें :

ॐ धूपं माधापयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

दीप

हे देवादिदेव उत्तम प्रकाश से युक्त अंधकार को दूर करने वाला धृत एवं बत्तीयुक्त दीप आपके श्री चरणों में प्रकाशमान है इसे स्वीकार कीजिये।

ॐ दीपं दर्शयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः

नैवैद्य

हे प्रभु चित्रगुप्त जी आपके श्री चरणों में स्वादिष्ट शुद्ध, मधुर फलों से युक्त नैवैद्य समर्पित करता हूं, इन्हें स्वीकार कीजियें ।

ॐ नैवैद्य समर्पयामि । भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः ।।

ताम्बूल (दक्षिणा)

हे प्रभु चित्रगुप्ताजी आपके श्री चरणों में ताम्बूंल एवं दक्षिणा समर्पित करता हूं, इन्हें स्वीकार कीजिये ।

ॐ ताम्बूरलं समर्पयामि । ॐ दक्षिणा समर्पयामि।।
भगवते श्री चित्रगुप्त देवाय नमः

लेखनी दवात पूजन

लेखनी दवात पर शुद्ध जल, रोली, चावल, पुष्प जल आदि अर्पित करते हुये प्रभु चित्रगुप्त जी एवं धर्मराज जी का ध्यान कीजिये :

ॐ लेखनी देवते इहागच्छ । में पूजां ग्रहाण, आवाहनं करोमि।।

प्रभावशाली मंत्र

मसिभाजक संयुक्त ध्यानेस्त च महावलभ

लेखनी पटि्टका हस्तं चित्रगुप्त नमाम्यहम

श्री चित्रगुप्त भगवान जी स्तुति

जय चित्रगुप्त यमेश तव, शरणागतम शरणागतम।
जय पूज्य पद पद्मेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय देव देव दयानिधे, जय दीनबन्धु कृपानिधे।
कर्मेश जय धर्मेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय चित्र अवतारी प्रभो, जय लेखनी धारी विभो।
जय श्याम तन चित्रेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
पूर्वज भगवत अंश जय, कायस्थ कुल अवतंश जय।
जय शक्ति बुद्धि विशेष तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय विज्ञ शाश्वत धर्म के, ज्ञाता शुभाशुभ कर्म के।
जय शांति न्यायाधीश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
जय दीन अनुरागी हरि, चाहे दया दृष्टि तेरी।
कीजै कृपा करुणेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2
तव नाथ नाम प्रताप से, नर जाय छुट भय ताप से।
हों दूर सर्व क्लेश तव, शरणागतम शरणागतम।। 2

श्री चित्रगुप्त भगवान पत्नी नंदिनी

पुत्र भानु

1—भानु

प्रथम पुत्र भानु कहलाये जिनका राशि नाम धर्मध्वज था चित्रगुप्त जी ने श्रीभानु को श्रीवास (श्रीनगर) और कान्धार क्षेत्रों में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा था उनका विवाह नागराज वासुकी की पुत्री पद्मिनी से हुआ था एवं देवदत्त और घनश्याम नामक दो पुत्रों हुए। देवदत्त को कश्मीर एवं घनश्याम को सिन्धु नदी के तट का राज्य मिला। श्रीवास्तव २ वर्गों में विभाजित हैं —

श्रीवास्तव वंश की वंशावली
भगवान विष्णु जी की नाभी से उत्पन्न

भगवान ब्रम्हाजी

भगवान ब्रम्हा जी के काया और तप से उत्पन्न हुये

भगवान चित्र गुप्त जी महाराज

भगवान चित्रगुप्त की प्रथम
पत्नी नन्दनी से उत्पन्न प्रथम पुत्र

भानू पुत्र चित्रगुप्त

1. देवदत
कार्य क्षेत्र कश्मीर

2 घनश्याम
कार्य क्षेत्र सिन्धू नदी तट

घनश्याम के एक पुत्र
1 श्रीवास्तव

देवदत के दो पुत्र

1 गौड
2 भटनागर

श्रीवास्तव के दो पुत्र

1 खरे
2 दूसरे

अपने सिद्धान्तों और धर्म प्रति अत्यन्त कठोर रहे जिसके कारण अल्प समय में ही विस्थापित होना पडा

वर्तमान समय में श्रीनगर के आसपास क्षेत्र प्रचीनकाल में श्रीनिवास क्षेत्र कहा जाता है था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार कश्मीर के चैतवशी राजा श्रीवास्तव चैत्र भोज परशुराम के हाथों मारे गये थे शेष कायस्थ जान बचाकर अवध आयें और श्रावणी नगर वसायें जो बहुत दिनों तक बोध जैन संस्कृति का गढ बना रहे।

<u>पुत्र श्रीवास्तव</u> धार्मिक मान्याताओं के अनुसार कायस्थवंश भानू जी कश्मीर का राज्य दिया गया था बाद में इस वंश के लोग दूसरे उत्तर प्रदेश के अवध ओर पूर्वाचंल के साथ लगा हुआ क्षेत्र विहार और मध्य प्रदेश के क्षेत्रों में वश गये जिसके कारण इनकी उपजातियों का दायरा बढ गया।

प्रमुख विशेषतायें श्रीवास्तव

1. बौद्धिक क्षमता राजाओं के दरबार में सलाकार मंत्री कोषाध्यक्ष और रिकोर्ड को सुरक्षित रखने वाले रहे।
2. शिक्षा इस समुदाये में शिक्षा को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। धन आये न आये शिक्षा जरूर आयें।

श्रीवास्तव वशं की विभूतिया उदाहरण स्वरूप

1. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति
2. मुंशी प्रेमचन्द भारत के महान साहित्यकार
3. लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री
4. अमिताभ बच्चन भारत के महान फिल्मकार
5. जय प्रकाश नारायण भारत के महान जनसेवक

श्रीवास्तव वंश की कुल देवी

1. माता लक्ष्मी – धन की देवी
2. माता सरस्वती– विद्या की देवी

श्रीवास्तव वंश का **गोत्र**

इसके अलावा अलग अलग **गोत्र** भी है

नोटः–सनातन/हिन्दु धर्म के जो भी संस्कार होते है वही संस्कार श्रीवास्तव वंश के भी है

विशेष मान्यता–ऐसी मान्यता है कि भगवान चित्रगुप्त जी की पुजा करने से व्यक्ति को बुद्धि वाणी का बल और कानूनी कार्यों में सफलता अवश्य मिलती है इसके साथ ही साथ यह भी मान्यता है कि उनकी कृपा मरणोउपरान्त यम लोक में जिवात्मा को न्याय पूर्वक स्थान अवश्य प्राप्त होता है।

खर एवं दूसरे। इनके वंशज आगे चलकर कुछ विभागों में विभाजित हुए जिन्हें अल कहा जाता है। श्रीवास्तवों की अल इस प्रकार हैं – वर्मा, सिन्हा, अघोरी, पडे, पांडिया,रायजादा, कानूनगो, जगधारी, प्रधान, बोहर, रजा सुरजपुरा,तनद्वा, वैद्य, बरवारिया, चौधरी, रजा संडीला, देवगन, इत्यादि।

नोटः–इस दुखद घटना की याद में कायस्थ यम द्वितीय को पूजा के दिन कलम नही उठाते है तथा पठन–पाठन से भी बचने का प्रयास करते है।

2–विभानू पुत्र भगवान चित्रगुप्त जी महाराज

द्वितीय पुत्र विभानु हुए जिनका राशि नाम श्यामसुंदर था। इनका विवाह मालती से हुआ। चित्रगुप्त जी ने विभानु को काश्मीर के उत्तर क्षेत्रों में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा। इन्होंने अपने नाना सूर्यदेव के नाम से अपने वंशजों के लिये सूर्यदेव का चिन्ह अपनी पताका पर लगाने का अधिकार एवं सूर्यध्वज नाम दिया। अंततः वह मगध में आकर बसे।(6)

3–विश्वभानू पुत्र भगवान चित्रगुप्त जी महाराज

तृतीय पुत्र विश्वभानु हुए जिनका राशि नाम दीनदयाल था और ये देवी शाकम्भरी की आराधना करते थे। चित्रगुप्त जी ने उनको चित्रकूट और नर्मदा के समीप वाल्मीकि क्षेत्र में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा था। इनका विवाह नागकन्या देवी बिम्ववती से हुआ एवं इन्होंने अपने जीवन का एक बड़ा भाग नर्मदा नदी के तट पर तपस्या करते हुए बिताया जहां तपस्या करते हुए उनका पूर्ण शरीर वाल्मीकि नामक लता से ढंक गया था, अतः इनके वंशज वाल्मीकि नाम से जाने गए और वल्लभपंथी बने। इनके पुत्र श्री चंद्रकांत गुजरात जाकर बसे तथा अन्य पुत्र अपने परिवारों के साथ उत्तर भारत में गंगा और हिमालय के समीप प्रवासित हुए।

वर्तमान में इनके वंशज गुजरात और महाराष्ट्र में पाए जाते हैं , उनको "वल्लभी कायस्थ" भी कहा जाता है।(6)

4—वीर्यभानू पुत्र भगवान चित्रगुप्त जी महाराज

चौथे पुत्र वीर्यभानु का राशि नाम माधवराव था और इनका विवाह देवी सिंघध्वनि से हुआ था। ये देवी शाकम्भरी की पूजा किया करते थे। चित्रगुप्त जी ने वीर्यभानु को आदिस्थान (आधिस्थान या आधिष्ठान) क्षेत्र में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा। इनके वंशजों ने आधिष्ठान नाम से अष्ठाना नाम लिया एवं रामनगर (वाराणसी) के है। ने उन्हें अपने आठ रत्नों में स्थान दिया। वर्तमान में अष्ठाना उत्तर प्रदेश के कई जिले और बिहार के सारन, सिवान , चंपारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी,दरभंगा और भागलपुर क्षेत्रों में रहते हैं। मध्य प्रदेश में भी उनकी संख्या है। ये ५ अल में विभाजित हैं द्य(

चित्रगुप्त महाराज की पत्नी ऐरावती

1—चारु पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

प्रथम पुत्र का नाम चारु था एवं ये गुरु मथुरे के शिष्य थे तथा इनका राशि नाम धुरंधर था। इनका विवाह नागपुत्री पंकजाक्षी से हुआ एवं ये दुर्गा के भक्त थे। चित्रगुप्त जी ने चारू को मथुरा क्षेत्र में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा था अतः इनके वंशज माथुर नाम से जाने गये। तत्कालीन मथुरा राक्षसों के अधीन था और वे वेदों को नहीं मानते थे। चारु ने उनको हराकर मथुरा में राज्य स्थापित किया। तत्पश्चात् इन्होंने आर्यावर्त के अन्य भागों में भी अपने राज्य का विस्तार किया। माथुरों ने मथुरा पर राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं जैसे इक्ष्वाकु, रघु, दशरथ और राम के दरबार में भी कई महत्त्वपूर्ण पद ग्रहण किये। वर्तमान माथुर ३ वर्गों में विभाजित हैं —देहलवी,खचौली एवं गुजरात के कच्छी एवं इनकी ८४ अल हैं। कुछ अल इस प्रकार हैं— कटारिया, सहरिया, ककरानिया, दवारिया,दिल्वारिया, तावाकले, राजौरिया, नाग, गलगोटिया, सर्वारिया,रानोरिया इत्यादि। एक मान्यता अनुसार माथुरों ने पांड्या राज्य की स्थापना की जो की वर्तमान में मदुरै, त्रिनिवेल्ली जैसे क्षेत्रों में फैला था।(7) माथुरों के दूत रोम के ऑगस्टस कैसर के दरबार में भी गए थे।(6)

2–सुचारु पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

द्वितीय पुत्र सुचारु गुरु वशिष्ठ के शिष्य थे और उनका राशि नाम धर्मदत्त था। ये देवी शाकम्बरी की आराधना करते थे। चित्रगुप्त जी ने सुचारू को गौड़ देश में राज्य स्थापित करने भेजा था एवं इनका विवाह नागराज वासुकी की पुत्री देवी मंधिया से हुआ।(6) इनके वंशज गौड़ कहलाये एवं ये ५ वर्गों में विभाजित हैः – खरे, दुसरे, बंगाली, देहलवी, वदनयुनि। गौड़ कायस्थों को ३२ अल में बांटा गया है। गौड़ कायस्थों में महाभारत के भगदत्त और कलिंग के रुद्रदत्त राजा हुए थे।

3–चित्र पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

तृतीय पुत्र चित्र हुए जिन्हें चित्राख्य भी कहा जाता है, गुरू भट के शिष्य थे, अतः भटनागर कहलाये। इनका विवाह देवी भद्रकालिनी से हुआ था तथा ये देवी जयंती की अराधना करते थे। चित्रगुप्त जी ने चित्राक्ष को भट देश और मालवा में भट नदी के तट पर राज्य स्थापित करने के लिए भेजा था। इन क्ष्त्रों के नाम भी इन्हिं के नाम पर पड़े हैं। इन्होंने चित्तौड़ एवं चित्रकूट की स्थापना की और वहीं बस गए।(6) इनके वंशज भटनागर के नाम से जाने गए एवं ८४ अल में विभाजित हैं, इनकी कुछ अल इस प्रकार हैं– डसानिया, टकसालिया, भतनिया, कुचानिया, गुजरिया,बहलिवाल, महिवाल, सम्भाल्वेद, बरसानिया, कन्मौजिया इत्यादिद्य भटनागर उत्तर भारत में कायस्थों के बीच एक आम उपनाम है।

4–मतिभान पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

चतुर्थ पुत्र मतिमान हुए जिन्हें हस्तीवर्ण भी कहा जाता है। इनका विवाह देवी कोकलेश में हुआ एवं ये देवी शाकम्भरी की पूजा करते थे। चित्रगुप्त जी ने मतिमान को शक् इलाके में राज्य स्थापित करने भेजा। उनके पुत्र महान योद्धा थे और उन्होंने आधुनिक काल के कान्धार और यूरेशिया भूखंडों पर अपना राज्य स्थापित किया। ये शक् थे और शक् साम्राज्य से थे तथा उनकी मित्रता सेन साम्राज्य से थी, तो उनके वंशज शकसेन या सक्सेना कहलाये। आधुनिक इरान का एक भाग उनके राज्य का हिस्सा था।(6) वर्तमान में ये कन्नौज, पीलीभीत, बदायूं, फर्रुखाबाद, इटाह,इटावा, मैनपुरी, और अलीगढ में पाए जाते हैंद्य सक्सेना लोग खरे और दूसर में विभाजित हैं और इस समुदाय में १०६ अल हैं, जिनमें से कुछ अल इस

प्रकार हैं– जोहरी, हजेला, अधोलिया, रायजादा, कोदेसिया, कानूनगो, बरतरिया, बिसारिया, प्रधान, कम्थानिया, दरबारी, रावत, सहरिया,दलेला, सोंरेक्षा, कमोजिया, अगोचिया, सिन्हा, मोरिया, इत्यादिद्य

5–हिमवान पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

पांचवें पुत्र हिमवान हुए जिनका राशि नाम सरंधर था उनका विवाह भुजंगाक्षी से हुआ। ये अम्बा माता की अराधना करते थे तथा चित्रगुप्त जी के अनुसार गिरनार और काठियवार के अम्बा–स्थान नामक क्षेत्र में बसने के कारण उनका नाम अम्बष्ट पड़ा। हिमवान के पांच पुत्र हुएः नागसेन, गयासेन, गयादत्त, रतनमूल और देवधर। ये पाँचों पुत्र विभिन्न स्थानों में जाकर बसे और इन स्थानों पर अपने वंश को आगे बढ़ाया। इनमें नागसेन के २४ अल, गयासेन के ३५ अल, गयादत्त के ८५ अल, रतनमूल के २५ अल तथा देवधर के २१ अल हैं। कालाम्तर में ये पंजाब में जाकर बसे जहाँ उनकी पराजय सिकंदर के सेनापति और उसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य के हाथों हुई। मान्यता अनुसार अम्बष्ट कायस्थ बिजातीय विवाह की परंपरा का पालन करते हैं और इसके लिए "खास घर" प्रणाली का उपयोग करते हैं। इन घरों के नाम उपनाम के रूप में भी प्रयोग किये जाते हैं। ये "खास घर" वे हैं जिनसे मगध राज्य के उन गाँवों का नाम पता चलता है जहाँ मौर्यकाल में तक्षशिला से विस्थापित होने के उपरान्त अम्बष्ट आकर बसे थे। इनमें से कुछ घरों के नाम हैं– भीलवार, दुमरवे, बधियार, भरथुआर, निमइयार, जमुआर,कतरयार पर्वतियार, मंदिलवार, मैजोरवार, रुखइयार, मलदहियार,नंदकुलियार, गहिलवार, गयावार, बरियार, बरतियार, राजगृहार,देढ़गवे, कोचगवे, चारगवे, विरनवे, संदवार, पंचबरे, सकलदिहार,करपट्ने, पनपट्ने, हरघवे, महथा, जयपुरियार, आदिद्य(6)

6–चित्रचारु पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

छठवें पुत्र का नाम चित्रचारु था जिनका राशि नाम सुमंत था और उनका विवाह अशगंधमति से हुआ। ये देवी दुर्गा की अराधना करते थे। चित्रगुप्त जी ने चित्रचारू को महाकोशल और निगम क्षेत्र (सरयू नदी के तट पर) में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा। उनके वंशज वेदों और शास्त्रों की

विधियों में पारंगत थे जिससे उनका नाम निगम पड़ा। वर्तमान में ये कानपुर, फतेहपुर, हमीरपुर, बंदा, जलाओं,महोबा में रहते हैं एवं ४३ अल में विभाजित हैं। कुछ अल इस प्रकार हैं– कानूनगो, अकबरपुर, अकबराबादी, घताम्पुरी,चौधरी, कानूनगो बाधा, कानूनगो जयपुर, मुंशी इत्यादि।

7–चित्रचरण पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

सातवें पुत्र चित्रचरण थे जिनका राशि नाम दामोदर था एवं उनका विवाह देवी कोकलसुता से हुआ। ये देवी लक्ष्मी की आराधना करते थे और वैष्णव थे। चित्रगुप्त जी ने चित्रचरण को कर्ण क्षेत्र (वर्तमाआन कर्नाटक) में राज्य स्थापित करने के लिए भेजा था। इनके वंशज कालांतर में उत्तरी राज्यों में प्रवासित हुए और वर्तमान में नेपाल, उड़ीसा एवं बिहार में पाए जाते हैं। ये बिहार में दो भागों में विभाजित हैः गयावाल कर्ण दृ गया में बसे एवं मैथिल कर्ण जो मिथिला में जाकर बसे। इनमें दास, दत्त, देव, कण्ठ, निधि,मल्लिक, लाभ, चौधरी, रंग आदि पदवी प्रचलित हैं। मैथिल कर्ण कायस्थों की एक विशेषता उनकी पंजी पद्धति है, जो वंशावली अंकन की एक प्रणाली है। कर्ण ३६० अल में विभाजित हैं। इस विशाल संख्या का कारण वह कर्ण परिवार हैं जिन्होंने कई चरणों में दक्षिण भारत से उत्तर की ओर प्रवास किया। यह ध्यानयोग्य है कि इस समुदाय का महाभारत के कर्ण से कोई सम्बन्ध नहीं है।

8–चारुण पुत्र श्री चित्रगुप्त जी महाराज

अंतिम या आठवें पुत्र चारुण थे जो अतिन्द्रिय भी कहलाते थे। इनका राशि नाम सदानंद है और उन्होंने देवी मंजुभाषिणी से विवाह किया। ये देवी लक्ष्मी की आराधना करते थे। चित्रगुप्त जी ने अतिन्द्रिय को कन्नौज क्षेत्र में राज्य स्थापित करने भेजा था। अतियेंद्रिय चित्रगुप्त जी की बारह संतानों में से सर्वाधिक धर्मनिष्ठ और सन्यासी प्रवृत्ति वाले थे। इन्हें 'धर्मात्मा' और 'पंडित' नाम से भी जाना गया और स्वभाव से धुनी थे। इनके वंशज कुलश्रेष्ठ नाम से जाने गए तथा आधुनिक काल में ये मथुरा, आगरा, फर्रूखाबाद, एटा, इटावा और मैनपुरी में पाए जाते हैं द्य कुछ कुलश्रेष्ठ जो की माता नंदिनी के वंश से हैं, नंदीगांव – बंगाल में पाए जाते हैं।

भगवान चित्रगुप्त का जीवन दर्शन

सभी कायस्थों से विशेष आग्रह——"नागपंचमी" पे सभी कायस्थ अपने कुल पूर्वज "नागों"की पूजा अवश्य करे —पद्म पुराण के अनुसार,चित्रगुप्त जी के बारह पुत्रों का विवाह नागराज वासुकी की बारह कन्याओं से सम्पन्न हुआ। इसी कारण कायस्थों की ननिहाल नागवंश मानी जाती है और नागपंचमी के दिन नाग पूजा की जाती है।इसलिए आप सभी जिस प्रकार भगवान चित्रगुप्त जी का अवतरण दिवस धूमधाम से मनाते है,उसी प्रकार ये भी अवश्य मनाए—जय चित्रगुप्त—जय चित्रांश—— भगवान चित्रगुप्त के 12 पुत्रों का विवाह और उनका विवरण इस प्रकार है—

इन बारह पुत्रों के दंश के अनुसार कायस्थ कुल में १२ शाखाएं हैं जो — श्रीवास्तव, सूर्यध्वज, वाल्मीक, अष्ठाना, माथुर, गौड़, भटनागर, सक्सेना, अम्बष्ठ, निगम, कर्ण, कुलश्रेष्ठ नामों से चलती हैं।(6) अहिल्या, कामधेनु, धर्मशास्त्र एवं पुराणों के अनुसार इन बारह पुत्रों का विवरण इस प्रकार से हैः

सिसोदिया वंश एवं हमारे खानदान का संबंध

हमारे पिता स्व0 गोरखानाथ श्रीवास्तव ग्राम चिलकहर, तहसील रसड़ा, परगना कोपाचीटगर्वी, जनपद बलिया ने अपने आत्मकथा में इस बात का उल्लेख किया है कि हमारे पूर्वजों का इतिहास राजस्थान के मेवाड़, चितौड़गढ़ से जुड़ा हुआ है और मेवाड़, चितौड़गढ़ का इतिहास गौरवशाली गहलोत वंश अर्थात सिसोदिया वंश के राजपूतों का ही है और यहाँ मुख्य सलाकार के रूप में अपना योगदान इस वंश को देते आये हैं। इनके विस्तारवादी निति के कारण हमारे पूर्वज पुत्र उन्हीं के शासन काल में सत्ता के सहयोग से विस्थापित होकर उत्तर—प्रदेश के जनपद बलिया परगनाकोपाचीटगर्वी, तहसील रसड़ा ग्प्रम खड़ीचा में आए और वहीं पर निवास कर सत्ता में सहयोगी बनें।

उपरोक्त तथ्यों पर ध्यान देने पर यह आवश्यक हो जाता है कि शासन सत्ता एवं सलाहकार के मुख्य कड़ी के बारे में जो भी जानकारी उपलब्ध हो उसका उल्लेख किया जाय।

इसी को आधार मानकर सिसोदिया वंश के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन किया जाय।

सिसोदिया वंश की उत्पत्ति और विस्तार

सिसोदिया वंश की उत्पत्ति सिसोदिया गाँव से हुई। तत्कालीन समय में रोहितास्व भिल को पराजित कर करण सिंह ने अपना अधिपत्य कायम कर लिया और उसी गाँव के आधार पर सिसोदिया शब्द प्रचलन में आया।

सिसोदिया भारतीय राजपूत जाति में पाये जाने वाला एक गोत्र है जिनका राजस्थान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

मान्यता है कि सिसोदिया क्षत्रिय भगवान श्री राम के कनिष्ठ पुत्र लव के वंशज हैं।

1. सूर्यवंश के आदि पुरूष की 65वीं पीढ़ी में भगवान श्री राम हुए।
2. सूर्यवंश के आदि पुरूष की 95वीं पीढ़ी में श्री वृहंतक हुए।
3. सूर्यवंश के आदि पुरूष की 125वीं पीढ़ी में श्री सुमित्र हुए।
4. सूर्यवंश के आदि पुरूष की 155वी पीढ़ी में श्री गुहिल हुए।

गुहिल ही गहलोत वंश का इतिहास ही सिसोदिया वंश का इतिहास है।

सिसोदिया वंश की मुख्य शाखाएं

1 सुहिलोत	2. सिसोदिया	3. पीपाड़ा	4. भालया
5 भगरोया	6. अजवरया	7. केवला	8. कुंपा
9. भीमल	10. धोरण्या	11. हुल	12. गोधा
13. अहाड़ा	14. नन्दोत	15. सोवा	16. आशायत
17. वोढ़ा	18. कोढ़ा	19. करा	20. मठेवरा
21. मुदौत	22. धालरयो	23. कुछेल	24. दुसन्छा
25. कवेड़ा			

सिसोदिया वषं के गोत्र

वंश –	सूर्यवंश	गोत्र –	बैजवायापन

वेद – यजुर्वेद प्रवर – कच्छ, भुज और मेश

कुलगुरू – वशिष्ठ (दलोचन) शाखा– वाज सनेही

ऋषि – हरित कुल माता – (बाज माता राजेश्वरी

कुल देवता – सूर्य नारायण

सिसोदिया वशं की मुख्य शाखाओं के लगभग सभी शाखाओं के उपशाखायें भी हैं जिनके कारण इनका व्यापक प्रचार एवं प्रसार भी हुआ।

उदाहरण के तौर पर कुछ शाखाओं का वर्णन इस प्रकार है।

1. गहलोत की शाखा सिसोदिया हैं जो लाहौर से बल्लभीपुर–गुजरात में रहा जिसे मुसलमानों ने खुब लुटा और तहस–नहस कर दिया।
2. शिल्प दित्य की रानी पुष्पावती का राज्य नष्ट हो जाने के कारण मलियागिरी की खोह में चली गई और अपने बच्चे को वही जन्म दिया। इस जन्म के कारण इस वंश का नाम गोह या खोह पड़ा बाद में यह गहलोत हो गया।
3. महाराणा प्रताप सिंह के छोटे भाई शक्ति सिंह से शक्तावत या सरलतावत गोत्र की शाखा निकली जिसका अपभ्रंश खिलावत माना जाता है। नेपाल में खिलावत जाति का वर्णन है जिसकी उप शाखा खाप है।
4. राणा हरी सिंह का दूसरा बेटा चन्द्र सिंह था उसकी संतान भोमिया (भुमिहार) लोंगों के तौर पर रही। आगे चलकर चन्द्रावत या चुण्डा रतनाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रकार अलग–अलग समय पर इसका समय के अनुसार विस्तार हुआ।

सिसोदिया वशं का संक्षिप्त परिचय

1. गुहिल राजवंश की स्थापना राजा गुहा दिव्य ने 566 ई0 की राजवंश गुहिल के वशंज नागा दिव्य को 727 ई0 में भीलों ने मार डाला और इस वंश को स्थापित किया।

2. इनका शासन काल 566 ई0 से 1284 ई0 तक उतार–चढ़ाव के साथ चलता रहा इसी बीच लगभग 68 शासक हुये लेकिन अन्तिम शासक महाराणा सिंह संवत् 1230 से 1255 तक रहा तत् पश्चात् दो शासक केवल नाम मात्र के रहे और केवल राज्य का कार्य ही किया कोई अन्य कार्य नहीं किया जिनका नाम इस प्रकार है।

पीढ़ी 69. महाराण भगवल सिंह 1955 से 1984 तक

पीढ़ी 70. श्री जी अरविन्द सिंह }

पीढ़ी 71– महाराण महेन्द्र सिंह

महाराणा हम्मीर सिंह की कार्य सैली एवं ख्याति

महाराणा हम्मीर सिंह को मेवाड़ का उद्वारक कहा जाता है। इन्होंने अपनी सैन्य क्षमता के आधार पर मेवाड़ के खैदवाड़ा (उदयपुर) नामक स्थान को मुख्य केन्द्र बनाया। राजस्थान के इतिहास में राणा हम्मीर ने चित्तौड़गढ़ से मुस्लिम सत्ता को उखाड़ने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मेवाड़ की विषम परिस्थिति होते हुए भी इन्होंनें चितौड़ पर विजय श्री प्राप्त की। इसी प्रकार 1326 ई0 में राणा हम्मीर को पुनः चितौड़गढ़ प्राप्त हुआ इस कारण राणा हम्मीर सिंह को विषम–घाटी पंचानन के नाम की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन्होंने बहुत से मन्दिर का निर्माण भी कराया जिसमें एक प्रमुख नाम माता अन्नपुर्णा का मन्दिर का निर्माण भी है।

महाराणा हम्मीर सिंह एक कुशल शासक, कुशल लड़ाकू यो़द्धा , गोरिला युद्ध कौशल में निपुण एंव विस्तार वादी स्वभाव के वीर पुरूष, कर्म निष्ठावान , मान–मर्यादा के धनी एवं बहु–आयामी व्यक्तित्व के पुरूष थे जिसके कारण राणा से महाराणा की उपाधि से सम्मानित किया गया। और यह सम्मान पूरे वंश आने वाली पीढ़ी को भी प्राप्त हुआ।

महाराण हम्मीर सिंह की वंश्वली एवं उसका विवरण

33	वीं0 पीढ़ी	राणा जैत्र सिंह	1250 से 1261 ई0 तक
34	वीं0 पीढ़ी	राणा तेज सिंह	1261 से 1273 ई0 तक
35	वीं0 पीढ़ी	राणा सम सिंह	1273 से 1301 ई0 तक

}

36	वीं0 पीढ़ी	राणा रतन सिंह	उर्फ राणा लक्ष्मण सिंह
37–	वीं0 पीढ़ी	राणा अजय सिंह	उर्फ अरी सिंह
38–	वीं0 पीढ़ी	महाराणा हम्मीर सिंह	1326 से 1364ई0 तक
	महाराणा हम्मीर सिंह का जन्म		1314 ई0 में

महाराणा हम्मीर सिंह के माता का नाम महारानी उर्मिला देवी

महाराणा हम्मीर सिंह की पत्नी का नाम राज कुमारी सोनगिरी देवी

39–	वीं0 पीढ़ी	महाराणा क्षेत्र सिंह	1364 से 1382 ई0 तक
40–	वीं0 पीढ़ी	महाराणालाखा सिंह	1382 से 1421 ई0 तक
41–	वीं0 पीढ़ी	महाराणा भौकल सिंह	1512 से 1433 ई0 तक
42–	वीं0 पीढ़ी	महाराणा कुम्भा सिंह	1433 से 1468 ई0 तक
43–	वीं0 पीढ़ी	महाराणा उदा सिंह	1468 से 1473ई0 तक

मेवाड़ चितौड़गढ़ राजस्थान से विस्थापित होने का कारण

जिस प्रकार भगवान चित्रगुप्त जी महारज धर्मराज जी के न्यायधीश हैं उसी प्रकार हमारे तत्कालीन पूर्वज भी सिसोदिया वंश ;खानदानद्ध के सलाहकार के रूप में इस वंश का सहयोग एवं परामर्स दाता के रूप में कार्य करते रहे हैं और इसी शासन काल में सिसोदिया वंश के महा प्रतापी महाराणा हम्मीर सिंह जो इस वंश के 38 (अड़तीसवें) राजा रहे हैं और इन्होंने गद्दी (सिंधासन) 1326 ई0 में अपनी खोई हुई वंश की प्रतिष्ठा पुनः वापस लेने के पश्चात् अपनी प्रतिष्ठा को उन्नति के पक्ष पर ले जाने के लिये विस्तार वादी निति की धारणा को अग्रसरित किया। इसके कुछ ही समय पश्चात् जिसका विस्थापित का वास्तविक समय ज्ञात नहीं है एक निर्णय लिया कि उत्तर–प्रदेश के जनपद बलिया परगना कोपाचीट गर्वी, तहसील रसड़ा के ग्प्रम – खडिचा में अपना शासन स्थापित किया जाय। इसके लिये सभी परामर्स दाताओं, सामन्तों एवं शासकों से विचार विमर्स किया और सभी आवश्यक रूप रेखा तैयार कर शासन सत्ता हस्ताक्षरण करने के लिये शासक, सलाहकार सामन्तों और

परामर्श दाताओं तथा कुछ सेनानियों को नियुक्त कर सभी साधन उपलब्ध करा कर उसे कार्य रूप में परिणित किया।

इस कार्य योजना में हमारे तत्कालीन सलाहकार के रूप में योगादास का नाम भी सम्मिलित था। तत्कालीन समय में योगादास भी मेवाड़ , चितौड़गढ़ राजस्थान में कार्यरत थे और वहीं से विस्थापित होकर इस स्थान पर निवास किया, कुछ समय पश्चात् यहाँ के निवासी हो गये और शासन सत्ता को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग देकर आगे बढ़ाया जो एक मिसाल बना और यहीं से इस वंश हमारे की वंशावली का प्रारम्भ होता है।

वंषवृक्ष

<u>योगादास (प्रथम खड़िचा निवासी)</u>

महाराणा हम्मीर सिंह का यह निर्णय की हमारे राज्य का विस्तार होना है इस उद्देश्य कि पूर्ति के लिये सभी आवश्यक संनसाधन के साथ उन सभी को जो शासन चलाने के योग्य थे दे कर राज्य का गठन किया। तत्कालीन समय में हमारे पूर्वज योगादास को खड़िचा राज्य के प्रथम मुख्य सलाहकार के रूप में राजस्थान के चितौड़गढ़ से विस्थापित कर खड़िचा भेज दिया गया। और उन्ही के साथ शासकों , सामतों , सुबेदारों कुछ सैनिको के साथ सामजस्य बनाकर राज्य को सुचार रूप से कार्य करने और राज्य को समृद्धि बनाने का निर्देश दे कर स्वंय को अपने निगरानी में रखकर कार्य का संचालन किया। इस प्रकार राज्य का विस्तार और गठन किया गया।

सभी ने शासन सत्ता में अपना पूर्ण सहयोग देकर से शासन को अच्छी प्रकार से चलाया और अपने कर्तव्यों का पालन किया।

हमारे खानदान के प्रथम पुरूष के रूप में ग्राम खड़ीचा , तहसील रसड़ा परगना कोयाचिट गर्वी जनपद बलिया उत्तर–प्रदेश में अपना निवास बनाया और सत्ता से सामजस्य बनाकर कार्य करते रहे। कुछ समय तक मेवाड़ के खैदबाड़ा (उदयपुर) राजस्थान से अपने माता–पिता एवं सगे सम्बन्धियों से मेल–जोल आना–जाना लगा रहा, तत्पश्चात समय के साथ अपना स्थाई निवास बनाकर ग्प्रम खडिचा में निवास करने लगे।

समय के साथ इनके चार पुत्र हुये जो वयस्क होने पर ग्प्रम खड़ीचा के आस–पास ही अपना निवास बनाकर रहने लगे जो इस प्रकार है–

योगादास की वंशावली

योगादास हमारे कुल के प्रथम ग्राम खडिचा तहसील रसड़ा जनपद बलिया उत्तर–प्रदेश के निवासी हैं। उनके दाम्पत्य जीवन में चार पुत्रों को जन्म हुआ और जहाँ–जहाँ निवास किये वहाँ–वहाँ हमारे कुल की शुरूआत भी हो गयी जो निम्नवत् है।

क्रम0सं0	नाम	निवास स्थान
1.	लालादास	हजौली
2.	गिरधर दास	चिलकहर
3.	यादव दास	कुरेजी
4.	रामचन्दर दास	लोहटा एवं जिगनी

रामचन्दर दास के पुत्रों ने अलग–अलग अपना निवास स्थान बनाया जो जिगनी एंव लोहरा नाम से जाना जाता है।

नोटः– हमारे पूर्वजों द्वारा जो स्थान का चयन किया गया वहाँ पर अभीतक हमलोगों का आपसी सहयोग बना हुआ है लेकिन आज के परिवेश में वह विलुप्त होता जा रहा है लेकिन एक परम्परा कायम है कि किसी विशेष कार्य में भैवदी (आपसी खान–पान की व्यवस्था कायम है) तथा कभी–कभी इस परम्परा का निर्वहन भी किया जाता है।

Family -	Lala Das
Village -	Hajawali

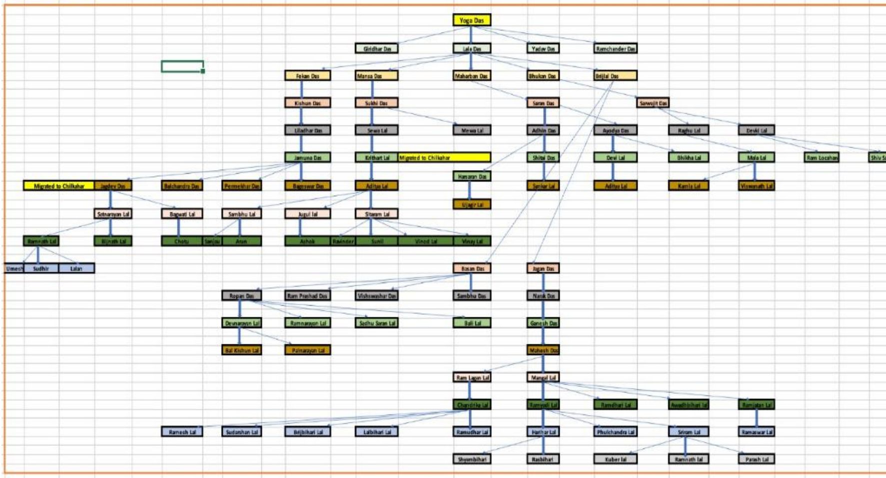

Family -	Yadav Das
Village -	Kuraji

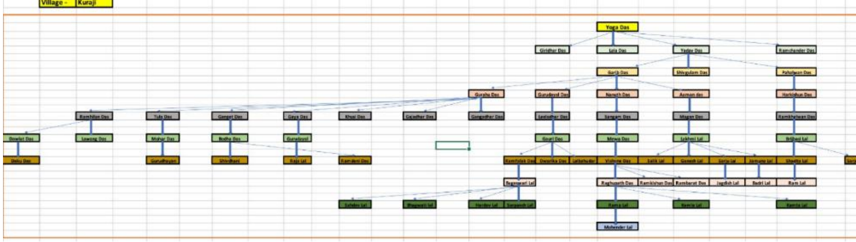

Family -	Ramchander Das
Village -	Lohata and Jigani

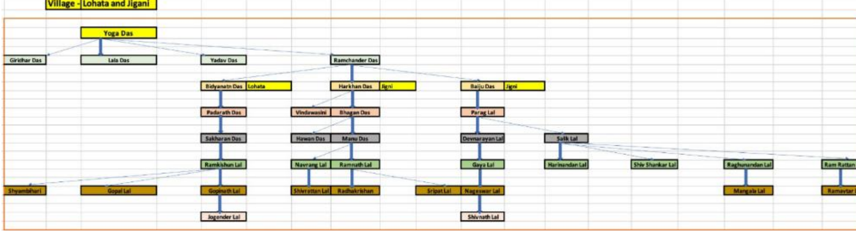

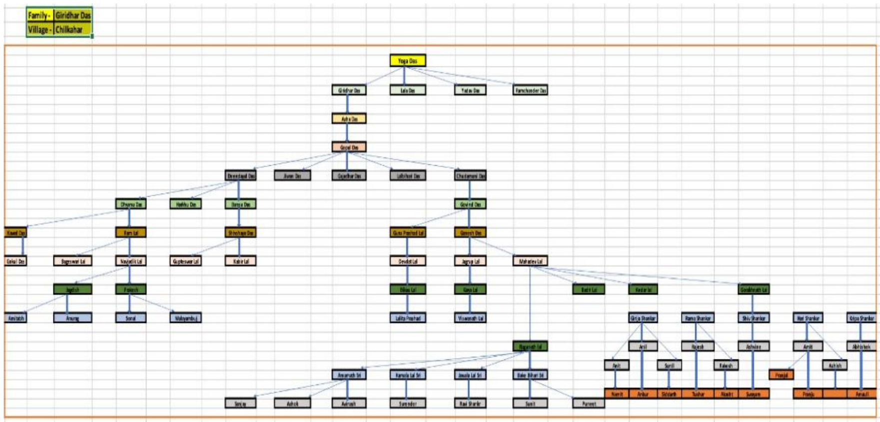

गिरधरदास पुत्र योगादास को जीवनदान प्राप्त होना

समय में यह आवश्यक भी था।

विवाह के कुछ समय के पश्चात् ही गिरधर दास का स्वर्गवास हो गया और अपने खानदान के एकमात्र सदस्य होने के कारण इनका कोई उत्तराधिकारी भी नहीं था और कुल यहीं समाप्त हो रहा था जिसके कारण ग्राम में कोहराम मच गया तथा दाह–संस्कार के लिये भी कोई उपलब्ध नहीं था।

विषम परिस्थित को ध्यान में रखकर सभी शुभचिन्तक एवं ग्रम निवासी एक मात्र दाह–संस्कार एवं वारिस के लिये इनकी पत्नी ही हैं इस कारण यह कार्य भी उन्ही के हाथों से होना ही न्यायसंगत है।

सभी के सहमती से गिरधर दास की पत्नी को अन्तिम दाह–संकार स्थल पर लाया गया और दाह–संस्कार की पूरी विधि विधान के साथ तैयारी की गई तथा चिता भी तैयार कर दिया गया और शव को चिता पर रख दिया गया था।

तत्पश्चात् वहा श्रीमति गिरधर दास के पत्नी एवं सम्बन्धित व्यक्ति को देखकर वहाँ का माहौल बहुत ही असहनीय हो गया था।

यह असहनीय पीड़ा ईश्वर द्वारा भी नहीं देखा गया और उन्हीं की कृपा से वहाँ एक महात्मा का आवागमन हो गया। इस विलाप एवं असमय शरीर का त्याग पर उन्हें झक–झोर कर रख दिया। इसके पश्चात् महात्मा

को इस परिवार पर दया आ गई और उन्होंने कहा कि आपलोग कपड़े के चारो तरफ एक दिवाल बनाकर खड़े हो जाइए। तब तक मैं गंगा जी से जल लेकर आ रहा हूँ। इस प्रकार महात्मा गंगा जी स्नान कर कवडंल में जल लेकर आये कुछ समय ध्यान में रहने के पश्चात् कवडंल से जल लेकर तीन बार कुछ गुनगुनाते हुए गिरधर दास की शव के ऊपर छिड़कर कहने लगे बच्चा उठो इस प्रकार तीन बार किये और स्वर्गवासी गिरधर दास चिता पर थोड़ी ही देर में बैठ गये।

इस परिवार एवं ग्रामवासियों की धारणा मन में बैठ गई की स्वयं ईश्वर ही आकर यह कार्य किये हैं और उन्हें जीवन दान प्रदान किया।

पुरी परिस्थिति से गिरधर दास अवगत होने के पश्चात् महात्मा के पैरों पर गिर गये और कहने लगे की हमारी जीवन लीला समाप्त हो चुकी थी इस लिये मैं आप के साथ ही चलूँगा और आप के सेवा में ही अपना षेश जीवन व्यतित कर दूँगा क्योंकि यह हमारा जीवन नहीं है।

इस प्रकार के वाक्य सुनने के पश्चात् महात्मा ने कहा बच्चा अभी इस जीवन में बहुत कुछ कार्य करना है इसलिये तुम हमारे साथ नहीं चल सकते हो कृपया अपने घर जाओ।

महात्मा के इस कथन को सुनने के पश्चात हमारे पूर्वज ने कहा आप हमें अपना शिश्य ही बना लिजिए, जिससे आप का दास बना रहूँगा और दर्शन का लाभ भी मिलता रहेगा। इस बचन को सुनकर महात्मा ने कहा कि अभी तुम्हें शिश्य भी नहीं बना सकता हूँ।

तुम आर्शीवाद के पात्र हो, तुम्हें मैं निर्देश देता हूँ कि आज के एक वर्ष के पश्चात् आज के ही दिन एक महात्मा तुम्हारे घर जायेगा, उसे तुम अपना गुरू बना लेना, और उसी के आदेशानुसार अपना जीवन का शेष समय बिताना। इस प्रकार गिरधर दास को अपना आर्शीवाद देकर महात्मा कुछ दूर जाने के पश्चात् अन्तरध्यान हो गये और सभीलोग अपने–अपने घर वापस आ गये और गवना की रस्म भी पूरी हो गई।

गिरधर दास पर गुरू की असीम कृपा

महात्मा के कथनानुसार ठीक एक वर्ष के पश्चात् उसी दिन एक दिव्य महात्मा का आगमन हुआ एवं जो घटना घटित हुई थी उसका व्यापक एवं

विस्तार पूर्वक वर्णन करने के पश्चात् घर एवं ग्रामवासियों को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह महात्मा उसी महात्मा के प्रतिरूप ही हैं जिसे घर एवं ग्रामवासीयों को इन्तजार था।

उस गुरू कृपा को आदर एवं सत्कार करने के पश्चात् दीक्षा ग्रहण किया तत्पश्चात् उनके आज्ञा का पालन करने लगे और इस गुरू को उसी भाव से देखते हुये स–सम्मान कुछ दिनों के बाद गुरू के इच्छा के अनुसार एवं अपने सामर्थ के अनुसार दान–दक्षिणा देकर विदा कर दिया गया।

गुरू जी अपनी इच्छा के अनुसार साल में एक या दो बार आया करते थे और इस परिवार के समस्या को जानने एवं समझने के पश्चात् उसका निवारण कर के जो कुछ शिष्यों द्वारा भेंट किया जाता उसे सहर्ष स्वीकार करके अपने निज अध्यात्मिक स्थल को चला जाया करते थे।

गुरू के शरीर त्यागने एवं ईश्वरीशक्ति में विलीन होने के पश्चात् उनके शिष्य एवं उत्तराधिकारी इस परम्परा को सही तरह से गुरू के अनुसार ही पूर्ण निष्ठा से निभाते रहते थे। समय के अनुसार परिस्थित एवं स्वभाव में परिवर्तन आया और अपने शिष्यों एवं ग्रमवासियों से घनिष्ठता और निकटता बढ़ती गई जिसके परिणाम स्वरूप महात्मा के इच्छा एवं शिष्यों के अनुरोध तथा ग्राम वासीयों के लगाव वस एक प्रस्ताव गुरू के समझ रखा गया कि आप के इच्छा के अनुरूप एवं सन्यासी जीवन के उपयोग के लिए एक सुन्दर स्थल चयन कर आप के यहाँ निवास के लिये स्थान बनाया जाय जिससे आप को मार्ग दर्शन भी मिलेगा और हमलोंगों को सेवा प्रदान करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता रहेगा।

इस कथन को स्वीकार करते हुए कहा आप लोंगों की जो इच्छा हो करें इसके लिए हमारी सहमति है। तत् पश्चात् बड़े उसाह और उमंग के साथ सभी साधन सम्पन्न एक सन्यासी के रहने योग्य एक झोपड़ी का निर्माण गाँव के पश्चिम तरफ कराया गया और उसी स्थान पर गुरू जी अपना पुराना स्थल छोड़कर यहाँ रहने लगे। वर्तमान समय में गाँव के बीच में यह नगीना कोइरी के घर के समीप पश्चिम तरफ में स्थित है जिसे आज भी पाण्डे एवं लाला को कोल्हाड़ कहा जाता है साथ ही तहसील रसड़ा के रजिस्टार कार्यालय के अभिलेख में सादीक मठिया कोल्हाड़ का हाता एंव रामदन्त पाण्डे इत्यादि का नाम अंकित है।

जो स्थान गुरू के निवास के लिए बना था वहाँ पर गुरू ने इमली का एक पेड़ लगाया था जो आज सुख गया है और उसका नामों निसान नहीं है क्यों कि यहाँ अधिक आबादी हो जाने के कारण संन्यासी तथा उनके शिष्यों को पुजा–पाठ ध्यान इत्यादि नित्य कर्म में अवरोध होने के कारण उन्हें नया स्थान दिया गया। जो गाँव के पश्चिम तरफ एक अन्य संम्प्रदाय के गुरू निवास करते थे और उनकी समाधि स्थली भी वहीं थी उसी के पास उनका समाधि निवास स्थल बना दिया गया जो आज गुरू की समाधि मठिया के नाम से विख्यात है।

कुछ समय बीतने के बाद दोंनों संम्प्रदाय के महात्माओं में मेल–जोल होनें लगा और धीरे–धीरे दोनो सम्प्रदाय के महात्मा मठीया पर ही एक साथ अपना ध्यान योग करने लगे और आगे चल कर दोनों पंथ के महात्मा एक हो गये।

चुड़ामनी दासपुरा पुत्र आशादास की वंशावली

चुड़ामनी दास पुत्र आशादास का दाम्पति जीवन अवेयस्थ अवस्था में ही प्रारम्भ हो गयी क्योकि तत्कालीन समय में वाल विवाह की प्रथा ज्यादे प्रभावी थी जिसके कारण विवाह हो जाने के पश्चात या कुछ समय तक जब दोनो पति–पत्नि वयस्थ हो जाने पर गंवना हुआ करता था तब तक जाकर दाम्पति जीवन प्रारम्भ हुआ करता था।

दाम्पत्य जीवन के लम्बे समय के पश्चात् इस दाम्पत्य जीवन से एक संन्तान की प्राप्ति हुई जिसके नामकरण संस्कार को बड़े धुमधाम से बनाया गया और उसी साल प्लेग के महामारी के पत्नी का असमय स्वर्गवास हो गया जिसके कारण परिवार में यह धारणा बन गई की यह संस्कार हमारे परिवार में नही मनाया जायेगा। जो आज भी वही अंधविश्वास व्याप्त है। जो आज भी अंधविश्वास की परम्परा अभी तक चली आ रही है।

गिरधर दास की वंशावली

आशा दास

आशा दास के पाँच पुत्र हुये

1.जीवन दास

2.गजाधर दास

3.लाल विहारी दास

4.दीन दयाल दास

5.चुड़ामनीदास

इनमें से जीवन दास , गजाधर दास , लालविहारी दास पुत्र आशादास इन पुत्रों की मृत्यु अल्प समय में हो जाने के कारण इनकी कोई संतान की परम्परा आगे नहीं बढ़ सकी।

4.**दीन दयाल** दासः– पुत्र आशादास

चुड़ामड़ीदास इनके दाम्पत्य जीवन से तीन पुत्रों का जन्म हुआ।

5. **पुत्र आशादासः—**इनका जीवन वयस्थ होने के पहले ही समाप्त हो गया जिसके कारण इन्हें कोई संतान सुख प्राप्त नहीं हो सका।

दीन दयाल दास पुत्र आशादास के पुत्रों का विवरण

1.हरखुदास पुत्र दीनदयाल इनका जीवन वयस्थ होने के पहले ही स्वर्गवास समाप्त हो गया जिसके कारण इन्हें कोई संतान सुख प्राप्त नहीं हो सका।

2.वसुदास पुत्र दीनदयाल इनके जीवन में दाम्पत्य जीवन सुख प्राप्त होने के पश्चात् एक सन्तान सुख की भी प्राप्ति हुई जिसका नाम शिव सहाय था। इनका जीवन भी बहुत ही कम समय का था।

3..ध्यानदास पुत्र दीनदयाल ध्यानदास के जन्म के कुछ वर्षो के पश्चात् ही पिता दीन दयाल दास का स्वर्गवास हो गया। पिता के स्वर्गवास होने के लगभग 12 वर्ष (बारह वर्ष) के बाद एक रहस्यमय घटनाक्रम से पूर्व की पारिवारिक घटनाओं को लेना भी यहाँ आवश्यक हो जाता है कि इन्हीं के पूर्वज गिरधर दास को जीवन दान मिला था। उसी परम्परा के प्रमुख उद्धारक कबीर पंत से जुड़ा हुआ है। इसी कारण हमारे समस्त कुल खानदान कबीर पन्थी था और संन्तान की उत्पति होने पर या कुलदीपक के आगमन पर कबीर पन्थ के गुरू जो मठीया पर निवास करते थे उन्हें बुलाकर बहुत ही छोटी उम्र में ही गुरू मंत्र अथवा दीक्षा लेने की परम्परा या यह धारणा बन गई थी। साथ ही साथ गुरू द्वारा गले में तुलसी जी का छोटी से छोटी माला या एक मनियां या गोटी पहना दिया जाता था। इसका महत्व यह था कि इसे पहनने के पश्चात् मांस – मछली या शराब इत्यादि वस्तुओं अथवा अभोज्य पदार्थ का परित्याग करना और इसे निभाना ही इसका मुख्य उद्देश्य था। दीनदयाल दास जी भी इस परम्परा के अनुयायी थे और जो रामायण उनके द्वारा पढ़ी जाती थी उसी में कबीर पंथ की माला रखी गयी थी। जब उनके पुत्र ध्यान दास रामायण को लेकर पढ़ना चाहे तो माला उसी स्थान पर पृथ्वी पर गिरपड़ी उसे लेकर अपने माता के यहाँ गये और उसे दिखाकर माँ को दे दिया। जिसके फलस्वरूप एक चमत्कारी घटना घटी जो हमारे कुल के लिए गौरव बढ़ाने वाला थी जिसका वर्णन हमस ती खण्ड मे करेगें

दीनदयाल दास की वंशावली

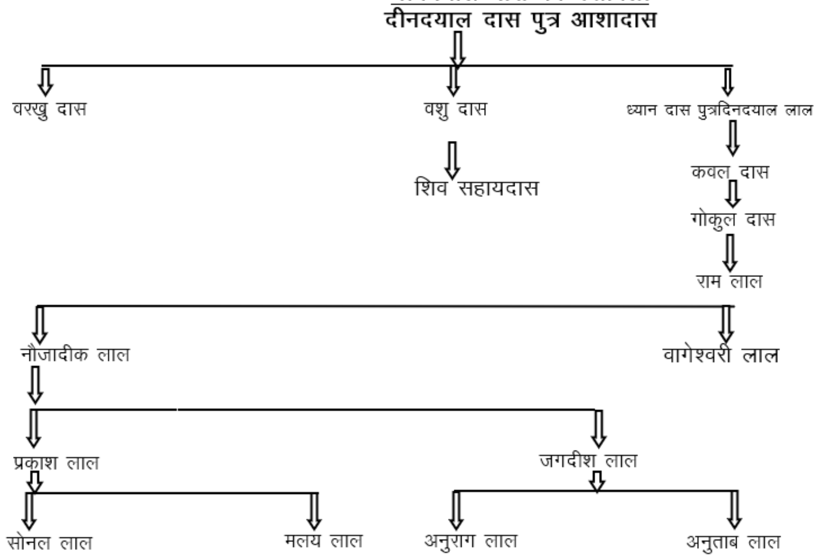

नोटः— आगे के वंशावली का विवरण ज्ञात नहीं है इसलिए यहीं पर इस विवरण का विराम दिया जा रहा है।

गनेश लाल दास की वंशावली (प्रथम पुत्र की वंशावली)

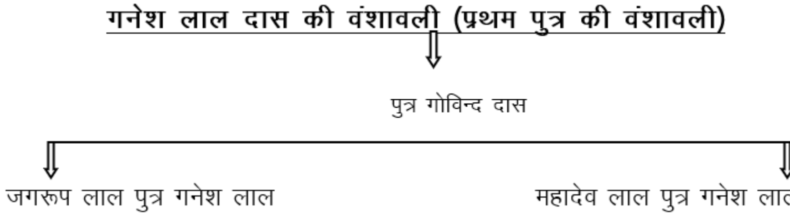

जगरूप लाल पुत्र गनेशलाल की वंशावलीः—

जगरूप लाल के पुत्र गनेशलाल को अपने दाम्पत्य जीवन से केवल एक सन्तान की उत्पत्ती हुई जिसका नाम गयालाल रखा गया।

गयालाल पुत्र जगरूप लाल की वंशावलीः—

गयालाल पुत्र जगरूप लाल की शादी भगवती लाल के पुत्री कौलेश्वरी देवी ग्राम खिरौली , तहसील रसड़ा, जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हुई

जो तहसील रसड़ा के दक्षीण तरफ ग्राम मुड़ेरा के पास स्थित है। इनके भाई का नाम ब्रम्हदेव लाल था जो सम्बन्ध को अपने जीवन के अन्तिम समय तक निभाए रखा। इसके साथ ही साथ सभी अच्छे एवं बुरे समय में बहन के न रहने के पश्चात् भी यथा सामर्थ चिलकहर परिवार को बिना भेदभाव के सहयोग एंव परामर्श देते रहे।

ब्रम्हदेव लाल के दो लड़के प्रथम लड़के का नाम केशव प्रसाद जो दिल्ली में कार्यरत रहे और वहीं पर उनका स्वर्गवास भी हो गया।

ब्रम्हदेव लाल के दूसरे पुत्र का नाम गनेश लाल जो कलकत्ता में रेलवे में वरिष्ठ लिपिक के पद पर कार्यरत थे और जब भी उन्हें मौका मिलता वे चिलकहर आया जाया करते थे और संबन्धों को बनाये रखा जो एक अनुकरणीय मिशाल रहा।

श्रीमति कौलेश्वरी देवी को बड़ी माँ के नाम से पुकारा जाता था तथा घर की पुरी मालकिन बन कर रही साथ ही साथ इनके संबन्ध में जो भी घर के कार्य करने वाले स्त्री–पुरूष एवं मजदूर थे उनसे अत्यधिक प्रसन्न रहा करते थे तथा गाँव के किसी भी परिवार या व्यक्ति के यहां से किसी प्रकार की मदद की आवश्यकता होती उसे बड़ी माँ अवश्य पूरा करती थी। इस कारण ग्राम के सभीलोग इनका अत्यधिक सम्मान व आदर करते थे।

यह एक बहुत अच्छा इन्सान एवं मदद करने वाली महिला का सम्मान इन्हें प्राप्त था। इन्हें अपने दाम्पत्य जीवन से एक संतान की प्राप्ति हुई जिसका नाम–विश्वनाथ लाल रखा गया इसके पश्चात् गयालाल का स्वर्गवास हो गया।

विश्वनाथ लाल पुत्र गया लालः–

विश्वनाथ लाल पुत्र गयालाल अपने माँ और पिता के एकलौती संतान थी जो वयस्क होने के पहले ही स्वर्गवासी हो गये।

इस प्रकार यह पीढ़ी यहीं पर समाप्त हो जाती है।

गोविन्ददास पुत्र चुड़ाभड़ी दास की वंशावली

गोविन्द दास पुत्र चुड़ामनी दास ने अपने बच्चों के नाम करण में अत्यधिक दूरदर्शिता का परिचय दिया जो विचारणीय एवं ध्यान देनें योग्य बात है। जो उपाधि राजा मेवाड़ चितौड़गढ़ राजस्थान से प्राप्त हुआ था उस संबोधन को हटाकर दास के स्थान पर लाल शब्द जोड़ा तथा एक बच्चे का नाम राजा के संबोधन के साथ रखा जिससे भविष्य में दास संबोधन को समाप्त किया जा सके और उसके बच्चों के नाम में विरोधाभास भी न हो सके।

इस प्रकार अपने वंशज अर्थात भगवान चित्रगुप्त जी है। के शरण में रहकर अपने धर्म के ज्ञान की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और अपने कुल के प्रति न्याय किया तथा कुल गौरव को स्थापित किया।

गोविन्द दास के दो पुत्र हुये जो इस प्रकार है–

1. गनेश दास (लाल) पुत्र गोविन्ददास
2. गुरूप्रसाद लाल पुत्र गोविन्दलाल

गुरू प्रसाद लाल पुत्र गोविन्द दास के दूसरे पुत्र की वंशावली

गुरू प्रसाद लाल पुत्र गोविन्द दास के जीवन संगीनी से एक सन्तान की उत्पत्ति हुई जिसका नाम देवदत्त लाल से संबोधन था।

गुरू प्रसाद लाल का जीवन भी अल्प समय का ही था। संतान उत्पत्ति के पश्चात् इनका और इनके पत्नी का भी स्वर्गवास फ्लेग महामारी से हो गया जो एक दुर्गाभाग्य पूर्ण घटना रही तथा इसके भरपाई में काफी समय लग गया।

देवदत्त लाल पुत्र गुरू प्रसाद लाल

देवदत्त लाल पुत्र गुरू प्रसाद के वयस्थ होने के पश्चात् इनकी शादी से एक पुत्र का जन्म हुआ जिनका नाम विकाऊ लाल रखा गया।

गोविन्द दास पुत्र चुडा मनी दास की वंशावली

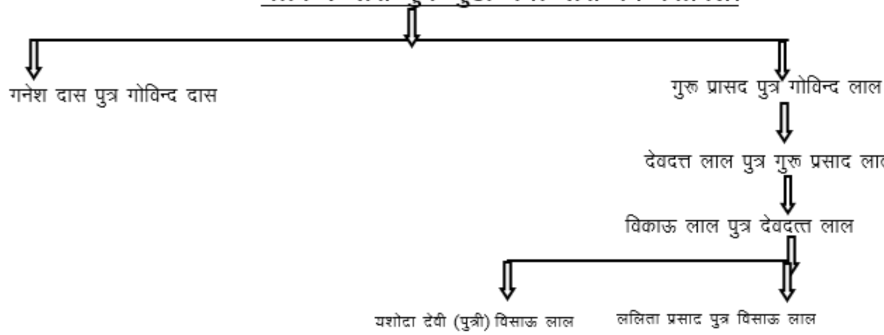

विकाऊ लाल पुत्र देवदत्त लालः–

विकाऊ लाल की शादी ताड़ी बढ़ागाँव के वीर चन्द्रहा के शिव गोविन्द लाल शीतल प्रसाद लाल राजारामलाल एवं बलदेव लाल के बहन से हुई थी। इनके पिता का नाम ज्ञात नहीं।

विकाऊ लाल के दाम्पत्य जीवन में एक पुत्र जिनका नाम ललिता लाल एवं इनकी एक लड़की भी थी जिसका नाम यशोदा देवी था।

फ्लेग के कारण विकाऊ लाल की पत्नी का स्वर्गवास सन् 1910 में हो गया।

ललिता प्रसाद पुत्र विकाऊ लाल

विकाऊ लाल के प्रथम पुत्र ललिता प्रसाद की शादी गनेश लाल की पुत्री धुपा कुंवर ग्रम बसन्तपुर जिला बलिया से सन् 1914 में हुई और कुल दाम्पत्य जीवन केवल आठ माह का ही रहा जिसके कारण कोई सन्तान की प्राप्ती नहीं हुई । ललिता प्रसाद की मृत्यु सन् 1915 में फ्लेग महामारी की कारण हो गयी। जिसके कारण परिवार को बड़ा आघात लगा जिसको सम्भलने में बहुत समय लगा। इस प्रकार ललिता प्रसाद लाल का वशंज यहीं समाप्त हो जाता है।

धुपा कुंवर पत्नी ललिता प्रसादः–

धुपा कुंवर अपने पति के देहान्त हो जाने के पश्चात् बहुत दिनों तक जीवित रही तथा इनका स्वर्गवास 1970 में हो गया। यह भी एक कुशल

पारिवारिक एवं उदार स्वभाव की थी एवं इन्हें बच्चों से बहुत लगाव था और अन्तिम समय में इनके दोनों आखों का आपरेशन हुआ। दुर्भाग्य वशं इनके आखों का आपरेशन सफल नहीं हो सका और अन्ततः आँख विहीन होकर स्वर्गवासी हुई।

गनेश लाल की वंशावली

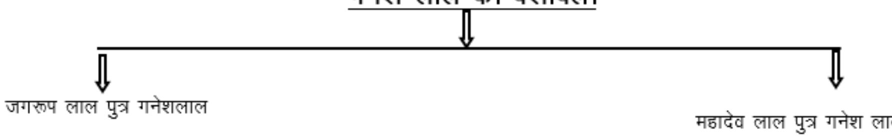

महादेव लालः—

महादेव लाल पुत्र गनेश लाल की जीवन संगनी श्रीमती नोहरा देवी पुत्री पिताम्बर लाल ग्राम दस्तेपर,जनपद गाजीपुर उत्तर प्रदेश के साथ सम्पन्न हुई थी।

इस दाम्पत्य जीवन में चार पुत्रों का जन्म हुआ था जो इस प्रकार हैं—

1. बद्री लाल पुत्र महादेव लाल
2. केदार लाल पुत्र महादेव लाल

बद्रीलाल एवं केदार लाल वयस्क होने के पहले ही स्वर्गवासी हो गये जिसके कारण इनकी कोई सन्तान नहीं है और इनका वंशज यहीं पर विराम अवस्था में हो गया।

3. रधुनाथ लाल श्रीवास्तव पुत्र महादेव लाल
4. गोरखनाथ श्रीवास्तव पुत्र महादेव लाल

   रधुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं गोरखनाथ श्रीवास्तव का विस्तार से वर्णन आगे प्रस्तुत है।

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं गोरखनाथ श्रीवास्तव पुत्र महादेव श्रीवास्वत लाल श्रीवास्तव की जीवनी

महादेव लाल की शादी श्रीमती नोहरा देवी पुत्री पिताम्बर लाल ग्राम दस्तेपुर जिला गाजीपुर उत्तर प्रदेश के साथ सम्पन्न हुई थी। पिताम्बर लाल के दाम्पत्य जीवन से केवल पुत्रियां ही थीं। इस कारण वे दाम्पत्य

जीवन से हमेशा उदास रहा करते थे और लड़के की कमी हमेशा महसूस किया करते थे। पति एंव पत्नी ने यह विचार किया कि चिलकहर से अपनी बड़ी पुत्री को ही यहाँ बुला लिया जाए क्योंकि उसके दो पुत्र बहुत अल्प समय में स्वर्गवासी हो चुके हैं। जिनका नाम क्रमशःबद्री लाल एवं केदार लाल था। यहाँ पर पुत्री के आ जाने से उसका भी मन बहल जायेगा और हमलोग भी उसे सम्भाल सकेंगे।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी पुत्री नोहरा देवी को बुला लिया और अपने साथ रख लिया। इसी के कारण रघुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं गोरखनाथ श्रीवास्तव का जन्म अपने ननिहाल दत्तेपुर, जिला गाजीपुर में ही हुआ और वहीं लालन–पालन एवं शिक्षा–दिक्षा भी ग्रहण किया। यह क्रम लगभग दश मे पन्द्रह वर्ष तक चलता रहा।

इसी क्रम में यह दोनों भाई अपने नाना के साथ पटवारी का काम भी सिखने लगे। क्योंकि उस समय कायस्थ परिवार का यही कर्म और व्यवसाय हुआ करता था। इस कार्य के लिए और कोई जाति चयनित नहीं हुआ करती थी।

विधि का विधान बदला और चिलकहर में इस परिवार पर हृदय विदारक घटना सन् 1910ई0 में घटीत हुई। महादेव लाल के बड़े भाई जगरूप लाल तथा गुरू प्रसाद के बड़े लड़के देवदत्त लाल एवं देवदत्त लाल के पुत्र विकाऊ लाल का स्वर्गवास एक सप्ताह के अन्दर ही महामारी (फ्लेग) के कारण हो गई। जो परिवार की जड़ को ही हिलाकर रख दिया। इस विकट समस्या से परिवार को उबारने के लिए परिवार में कोई वयस्क व्यक्ति नहीं रह गया। जिसके कारण अगला कार्य किस प्रकार किया जाय यह सोच–विचार कर सभीलोग ननिहाल से रघुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं गोरखनाथ श्रीवास्तव को स्थाई नौकरी से त्यागपत्र देकर गाजीपुर से चिलकहर बुलाया गया और ये दोनों भाई को आना ही पड़ा। जगरूप लाल के पटवारी का काम सम्भालना पड़ा। जगरूप लाल के पास दो जगह का कार्य – भार था। इसमें से एक ग्राम नरांव का काम गोरखनाथ श्रीवास्वत को मिला जबकि चिलकहर का कार्य–भार रघुनाथ लाल श्रीवास्तव को मिला। इस प्रकार दोनों भाइयों की वापसी अपने गाँव चिलकहर परिवार में हो सकी। जिसके फलस्वरूप चिलकहर का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा।

ग्राम चिलकहर गाँव के कायस्थ परिवार एवं जमींदार का आपसी संम्बन्ध

दोनों भाइयों के घर वापसी के कुछ समय के पश्चात गाँव के जमीदारों के आपसी सम्पत्ति का बंटवारा होने लगा, तो सभी जमींदार एंव गाँव के माननीय लोंगों ने मिलकर सर्व समस्त से निर्णय लिया कि आपलोग हमारे ही पूर्वज के साथ राजस्थान से आए हैं। इस परिस्थिति में आप भी हमारे सगे संबधी ही हैं। इसलिए आप भी इसके हिस्सेदार होंगे। तत्कालीन समय में सभी कार्य की हिस्सेदारी रूपया आना, पाई में हुआ करता था। इसलिए सभी के हिस्से निकाल कर आपसी सहयोग ऐवं व्यवहार से गाँव के हिस्से में एक आना 16/1 की हिस्सेदारी बनाई गई जिसे इस कायस्थ परिवार ने स्वीकार नहीं किया।

चिलकहर गाँव के इस परिवार को बहुत ही उच्च आदर्श मानकर एक राय होकर 80(80 विघा) जमीन कायस्थ परिवार को देकर अपने समकक्ष जमींदार बनाया तथा इस जमीन की मालगुजारी भी स्वयं जमींदार लोग अपने ऊपर ले लिया जो एक सम्बन्धों का उच्च आदर्श मिसाल भी है। और यह अनुकरणीय व्यवस्था उस समय कायम किया गया।

चिलकहर गाँव के जमींदारों का समस्त विवाद एवं यहाँ तक की निजी घर की समस्या होती रही उसे भी इस कायस्थ परिवार के अगुवाई में आपसी मेल–जोल एवं ताल–मेल बैठाकर यह परिवार हल किया करता था।

इस प्रकार गाँव एवं परिवार की कोई भी समस्या न्यायालय में जाती ही नहीं थी। जो एक आदर्श गाँव का मिशाल बना रहा ।

गाँव में किसी भी तालुकदार एवं जमींदारों के यहाँ कोई भी मांगलिक या अमागलिक कार्य में भी दोनों पक्ष जमींदार एवं कायस्थ परिवार (कुल) मिलजुल कर सभी कार्य करते थे। तथा सभी लोग मर्यादित रहते हुए एक साथ खान–पान भी किया करते थे जो एक अनुपम भाई–चारे का मिशाल है।

उपरोक्त उपलब्धी के आधार पर गाँव के सभी जमींदार एक गणमान्य व्यक्तियों द्वारा यह निर्णय लिया गया कि जब इस परिवार ने हम लोंगों के पूर्वजों द्वारा 16/1 की हिस्सेदारी छोड़ दिया है। उसे पुनः दूसरे रूप

में दिया जाए इस परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए गाँव के जो सराकत कि हिस्सेदारी है। जैसे छुटी हुई जमीन, बगीचा, तालाब इत्यादि कोई भी क्रय एवं विक्रय किया जाए तो उसका कुछ हिस्सा इस परिवार को भी दिया जाए। इस पर सभी लोग सहमती होकर 16/1 की हिस्सेदारी पुनः कायम कर परोक्ष रूप से देना स्वीकार किया जो इस सम्बन्ध को और प्रगाढता प्रदान किया।

इसी क्रम में ग्राम वासीयों द्वारा यह भी निर्णय लिया गया कि इस कायस्थ परिवार को किसी भी मांगलिक कार्य अथवा अमांगलिक कार्य में जो भी खर्च आता है उसे गाँव के सामूहिक हिस्सेदारी द्वारा प्राप्त धन से पूरा किया जाएगा।

इस प्रकार इस परिवार को शादी विवाह एवं घर बनाने मांगलिक कार्य एवं अमांकलिक कायों को जमींदारों द्वारा ही पुरा किया जाता रहा है। इस प्रकार इस परिवार को जो सम्मान गाँव द्वारा मिला उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है।

वंश–वृक्ष

रघुनाथ लाल की वंशावली

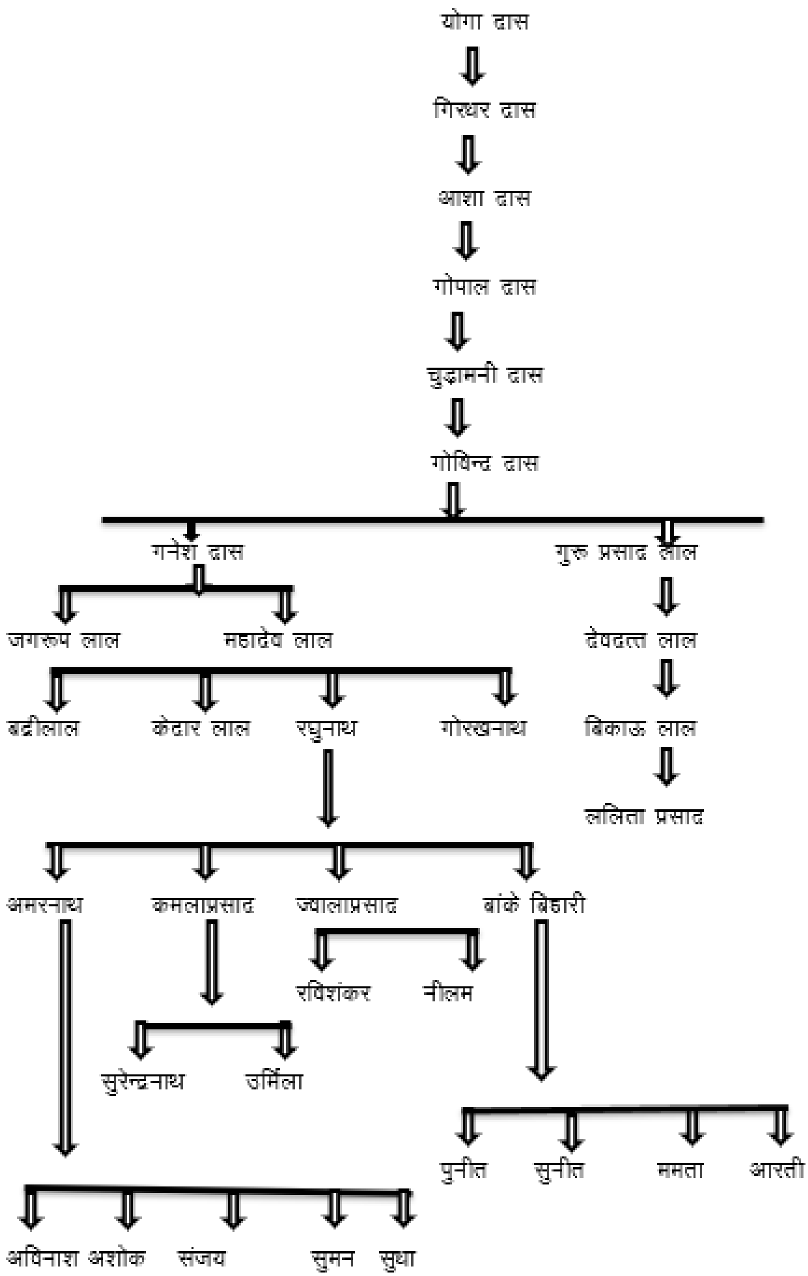

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
पुत्र
महादेव लाल श्रीवास्तव का
दाम्पत्य जीवन

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव का दाम्पत्य जीवन नाबालिक अवस्था में ही प्रारम्भ हो गया इनके जीवन काल में चार बार एक दुजे का होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है।

प्रथम जीवन संगीनीः—श्री सुखदेव लाल की प्रथम पुत्री धनवन्ति देवी ग्राम बसन्तपुर जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हुई जो चार वर्षो के अन्तर पर ही स्वर्गवासी हो गई जिसके कारण इनसे कोई सन्तान उत्पत्ति नहीं हो सकी।

द्वितीय जीवन संगीनीः—श्री सुखदेव लाल की द्वितीय पुत्री श्री मति सुमित्रा देवीग्राम बसन्तपुर जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हुई जिनकी मुत्यु दो वर्ष के अन्दर ही हो गई जिसके कारण इनके द्वारा भी कोई सन्तान की उत्पत्ति नहीं हो सकी।

तृतीय जीवन संगीनीः—श्री कामता प्रसाद की पुत्री श्रीमति शान्ति देवी ग्राम सागरपाली जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हुई। इस शादी से एक कन्या का जन्म हुआ कन्या के जन्म के लगभग 3 वर्ष के पश्चात् ही श्रीमति शान्ति देवी का स्वर्गवास हो गया।

इस कन्या की शादी वयस्क होने पर श्री पशुपति नाथ श्रीवास्तव गग्रम कैथवली जनपद आजमगढ़ के साथ सम्पन्न हुई और इससे कोई सन्तान नहीं हो सकी और पत्नी का स्वर्गवास हो गया।

श्री पशुपतिनाथ श्रीवास्तव की दूसरी शादी से चार बच्चों की उत्पत्ति हुई ।

चतुर्थ जीवन संगीनीः—श्री राम जनम लाल श्रीवास्तव की सुपुत्री लाल बच्ची देवी गग्रम पकड़ी जनपद बलिया से सम्पन्न हुई। इस जीवन संगीनी

से चार पुत्र और तीन पुत्री का जन्म हुआ और इन्हीं के द्वारा खानदान आगे की ओर अग्रसर हुआ जो इस प्रकार है।

1. शान्ती देवी सु0 पुत्री रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
2. अमर नाथ श्रीवास्तव पुत्र रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
3. कमला प्रसाद श्रीवास्तव पुत्र रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
4. ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव पुत्र रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
5. बाके बिहारी श्रीवास्तव पुत्र रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
6. विद्या देवी सुपुत्री रघुनाथ लाल श्रीवास्तव
7. राम दुलारी देवी सुपुश्री रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

श्री अमरनाथ श्रीवास्तव
पुत्र
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव के बड़े पुत्र अमरनाथ श्रीवास्तव का जन्म विक्रम समत् 1983 माह अगहन अर्थात सन् 1927 माह नवम्बर में हुआ था। अपनी शिक्षा ग्रहण करते हुए इनका दाम्पत्य जीवन 16 वर्ष की अवस्था में रतन–पुरा निवासी जिला बलिया जो वर्तमान समय में जनपद मऊनाथ भंजन के लक्ष्मीलाल श्रीवास्तव की कन्या श्रीमति सिगारी देवी के साथ सन् 1943 में के साथ सम्पन्न हुई। शिक्षा ग्रहण करने समय ही इनकी नौकरी इलाहाबाद राशनिंग विभाग में नियुक्ति हो गई तत् पश्चात् लम्बे इन्तजार के बाद इन्हें सन्तान सुख की प्राप्ती हुई जो इस प्रकार है।

1. अभिनाश कुमार श्रीवास्तव — पुत्र अमरनाथ श्रीवास्तव
2. अशोक कुमार श्रीवास्तव — पुत्र अमरनाथ श्रीवास्तव
3. संजय कुमार श्रीवास्तव — पुत्र अमरनाथ श्रीवास्तव
4. सुमन श्रीवास्तव — पुत्री अमरनाथ श्रीवास्तव
5. सुधा श्रीवास्तव — पुत्री अमरनाथ श्रीवास्तव

कुछ समय पश्चात् राशनिंग विभाग उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समाप्त कर दिया गया और शासनादेश निर्गत किया गया कि जब भी उत्तर प्रदेश में किसी भी विभाग में नियुक्ति की जायेगी तो वरीयता के आधार पर प्रथम नियुक्ति इस विभाग के कर्मचारियों की जायेगी, साथ ही साथ इनके पुराने सेवाकाल एवं वरियता भी प्रदान की जायेगी और पद उन्नति में भी इसे जोड़कर पदोन्नति की जायेगी।

उपरोक्त आदेश के आधार पर ही अमरनाथ श्रीवास्तव को तहसील रसड़ा जनपद बलिया के वरिष्ठ लिपिक के पद पर नियुक्ति हो गई और इसके कारण वे घर के पास ही नौकरी करने लगे और जो कुछ कठीनाई थी वह दूर होने लगी।

समय का परिवर्तन के साथ ईश्वर की महान कृपा हुई और खाद्य (राशनिंग) विभाग में कार्यरत रहे तथा अमरनाथ श्रीवास्तव के प्रिय मित्र रहे श्री हरिमोहन सिंह पी0सी0एस0 की परीक्षा उत्तीर्ण कर बलिया जनपद के रसड़ा तहसील के उपजिला अधिकारी होकर अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया।

इसके पश्चात रसड़ा तहसील में कार्य के समय दोनों के आपसी संबंध को पुनः ताजा कर दिया और निरीक्षण के पश्चात् रिटायरिंग रूप में मुलाकात हुई पूर्व की तरह व्यवहार होने के कारण संबन्धों में और प्रगाढ़ता आ गई। इस सम्बन्धों का गहनता से अध्ययन किया जाय तो समस्त समस्याओं और सम्भावनाओं को हल करने में चाहे जमीन, जायदात और नौकरी एवं घर के मानमर्यादा को बनाये रखने का श्रेय इस मित्रता को ही जाता है। इस प्रकार की कृपा को ईश्वरी कृपा ही कहा जा सकता है।

अभिनाश कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
अमरनाथ श्रीवास्तव

अमरनाथ श्रीवास्तव के द्वितीय सन्तान अभिनाश कुमार श्रीवास्तव हैं। इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति बीना श्रीवास्तवा के साथ सम्पन्न हुआ। इस दाम्पत्य जीवन से चार सन्तान की उत्पत्ति हुई जिसमें दो कन्या का जन्म एक के बाद दूसरी की उत्पत्ति हुई तत्पश्चात् दो पुत्र का जन्म भी एक के बाद दूसरे का जन्म हुआ ळें

अशोक कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
अमरनाथ श्रीवास्तव

अमरनाथ श्रीवास्तव के द्वितीय पुत्र अशोक कुमार श्रीवास्तव जिनका दामपत्य जीवन श्रीमति रश्मी श्रीवास्तव के साथ सम्पन्न हुआ जो विहार प्रान्त के निवासी हैं। इनके दामपत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ति हुई जिसमें एक पुत्र और एक पुत्री है। ये अपना निजी आवास बनाकर तहसील रसड़ा, जनपद बलिया में निवास कर रहे हैं।

संजय कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
अमरनाथ श्रीवास्तव

अमरनाथ श्रीवास्तव के तृतीय पुत्र संजय कुमार श्रीवास्तव का दाम्पत्य जीवन श्रीमति सीमा श्रीवास्तवा जनपद गाजीपुर उ0प्र0 के साथ सम्पन्न हुआ। इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्ताने प्राप्त हुई। प्रथम संतान पुत्र और दूसरी संतान पुत्री के रूप में है। वर्तमान समय में दोनो शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा संजय कुमार श्रीवास्तव अपना निजी आवास प्रयागराज (इलाहाबाद) में बनाकर रह रहे हैं।

कमला प्रसाद श्रीवास्तव
पुत्र
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव के द्वितीय पुत्र कमला प्रसाद श्रीवास्तव का जन्म संवत 1984 के माह फाल्गुन अर्थात सन् 1928 माह मार्च में हुआ था। पिता रघुनाथ लाल श्रीवास्तव के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् उन्हीं के

स्थान पर बिना पटवारी की ट्रेनिंग के ही इनकी नियुक्ति चिलकहर तहसील रसड़ा जिला बलिया में हो गई। कुछ समय पश्चात् पटवारी के ट्रेनिंग के लिये जनपद गाजीपुर ट्रेनिंग सेन्टर भेज दिया गया और ट्रेनिग पूर्ण हो जाने पर इनकी नियुक्ति नहीं हो सकी। फिर एक वर्ष व्यतीत हो जाने पर पुनः नियुक्तिग्राम चिलकहर तहसील रसड़ा जिला बलिया में हो सकी। लेकिन इन्हे अपने कार्य में रूची न होने के कारण दूसरे व्यक्ति से कार्य कराना शुरू किया गया और इस प्रकार किसी तरह से उनका कार्य चलता रहा। इस बीच इनका दाम्पत्य जीवन का चक्र चला और इनकी शादी ग्राम कोदई जनपद बलिया के रामबृक्ष लाल के सुकन्या गुलाबी देवी के साथ सन् 1945 में सम्पन्न हुई। दुख की बात यह रही कि शादी के 15 दिन के पश्चात् ही इनके पिता रघुनाथ लाल श्रीवास्तव का स्वर्गवास हो गया।

इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की उत्पत्ति हुई जो निम्नवत् है।

1. उर्मिला देवी पुत्री कमला प्रसाद श्रीवास्तव
2. सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव पुत्र कमला प्रसाद श्रीवास्तव

समय का चक्र कुशलतापूर्वक चलता रहा और सन् 1952 में जमीदारी उन्मूलन का कार्य प्रारम्भ हुआ और इसी बीच पटवारी वर्ग का भी आन्दोलन चलने लगा। पटवारी वर्ग के यूनियन ने यह निर्णय लिया कि सभीलोग अपना त्यागपत्र उच्च्य अधिकारियों को मेज देंगें जिससे सरकार पर दबाव बनाया जा सके और यही हुआ भी, उस समय उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री माननीय श्रीचरणसिंह जी थें इन्हीं के आदेशानुसार सभी का त्यागपत्र मंजुर कर लिया गया और सभी के स्थान पर सभी वर्ग के लोंगों को पटवारी के स्थान पर लेखपाल बनाकर नियुक्त कर दिया गया। उस समय इस कार्य के लिए कायस्थ वर्ग का ही एकाधिकार था। इस प्रकार कायस्थ वर्ग का इस पद का अधिकार समाप्त हो गया और सभी लेखपाल को बिना ट्रेनिंग के ही स्थाई कर दिया गया।

जो पटवारी लोग उस समय त्यागपत्र नहीं दिये थे उन्हें एक शपथ पत्र के आधार पर पहले वाले स्थान से स्थानान्तरित करते हुये एंव पटवारी पद को समाप्त करतें हुए लेखपाल पद पर नियुक्त कर दिया गया साथ ही साथ जिस व्यक्ति की आयु 45 वर्ष से कम थी उन्हें भी पद से हटाते

हुए लेखपाल बना कर रख लिया गया। चूकि कमला प्रसाद श्रीवास्तव अपने कार्य के प्रति अत्यधिक उदासीन एवं लापरवाह थे इस कारण उच्च अधिकारी के संतुती के आधार पर इन्हें पद से पदमुक्त कर दिया गया, जिसके कारण इन्हें आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। कुछ समय पश्चात् इन्हीं के बड़े भाई के संबन्धित एक उच्च अधिकारी (उपजिला अधिकारी) आ गये, और उनके समक्ष इनके अपील के आधार पर इन्हें दोषमुक्त कर दिया गया। फिर कार्य पर नियुक्त होने के पश्चात् मन लगाकर कार्य करने लगे और अपने सेवाकार्य में ही स्वर्गवासी हो गये। तत्पश्चात् सरकारी शासना आदेशों के अनुसार और योग्यता के आधार पर अपने पिता के स्थान पर लेखपाल के पद पर ही सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जो एक मात्र पुत्र हैं नियुक्ति हो गई। कमला प्रसाद श्रीवास्तव की पत्नी श्रीमति गुलाबी का स्वर्गवास सितम्बर माह सन् 1984 में हुआ तत्पश्चात् उनके पति का स्वर्गवास जनवरी माह सन् 1990 में हो गया।

सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
पुत्र
कमला प्रसाद श्रीवास्तव

सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव का जन्म ग्राम चिलकहर जनपद बलिया में सन् 1965 दिनांक 15 जून को हुआ था। इनके शिक्षा के पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति अर्चना पुत्री अनीरूद्ध लाल श्रीवास्तव ग्राम मनीयर जनपद बलिया के साथ सन् 1993 के नवम्बर में सम्पन्न हुआ। इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ती हुई जो इस प्रकार है।

1. श्रीमति चादनी श्रीवास्तवा पुत्री, सुरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव जन्म दिनांक 16 जनवरी 1997 को हुआ जो वर्तमान में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।
2. अनु श्रीवास्तव पुत्र सुरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव का जन्म दिनांक 03 जुलाई सन् 2000 को हुआ और यह भी वर्तमान समय में शिक्षा ग्रहण कर रहे है। सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव वर्तमान समय में लेखपाल के पद पर कार्यरत करते हुये सेवानिवृत होकर ग्राम चिलकहर में स्थाई रूप से निवास कर रहे है।

ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव
पुत्र
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव के तृतीय पुत्र ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव का जन्म सवंत् 1987 अषाढ़ माह में हुआ था अर्थात सन् 1931 माह जुलाई 1931 मे हुआ था। इसका पठन–पाठन में कोई रूची नहीं थी इस कारण इनकी शिक्षा कक्षा पँाच तक होने के कारण इन्हें किसी भी प्रकार की कोई नौकरी नहीं मिल सकी और न कोई नौकरी का प्रयास ही हुआ।

इनके दाम्पत्य जीवन के प्रयास में तीन बाधायें आ रही थी जिसके कारण शादी में विलम्ब हो रहा था।

1. पिता का स्वर्गवासी होना।
2. शिक्षा की कमी होना।
3. समय के अनुसार इनके उम्र का अधिक होना।

इसी बीच गाँव के माननीय लोग जो जमीदार थे उनके साथ शंकरपुर गाँव के राम किशुन लाल आये और गिरजाशंकर श्रीवास्तव की शादी के लिये दबाव बनाने लगे अत्यधिक दबाव होने के कारण शादी के लिये राजी भी होना पड़ा। लेकिन शर्त यह रखी गई की थी कि पहले हमारे बड़े भाई के तृतीय पुत्र ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव के शादी करने के पश्चात् ही यह शादी स्वीकार करेंगें इसपर रामकिशुन लाल तैयार हो गये।

कुछ समय बितने के पश्चात् शंकरपुर के पंडित के साथ (गिरधर पाण्डे) और राम किशुन लाल आये कहने लगे की शादी तो मुझे इसी वर्ष करनी है यदि संभव हो तो आप ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव से ही कर लिजिए। इस पर दोनों पक्ष तैयार हो गये और यह दाम्पत्य जीवन शंकरपुर ग्राम निवास मुकुट लाल की सुपुत्री सरोज देवी के साथ सन् 1952 के माह अषाढ़ में सम्पन्न हो गई।

ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव के दाम्पत्य जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिये काफी प्रयास किया गया जिसमें मुख्य रूप से दो प्रयास का वर्णन किया गया है।

1. होमियोपैथिक की पुस्तके एंव दवा मंगवाकर योग्य व्यक्ति के सानिध्य में रहे और डाक्टरों परामर्स से कारोबार ठीक ढंग से चले सके और अपने पैरों पर खड़ा हो सके। कुछ समय तक ठीक ढंग से चला और इनके अरूची न होने के कारण पुस्तक एवं दवा गाँव के ही रामदेव पाण्डे को दे दिया गया और इस प्रकार यह प्रयास विफल रहा।
2. फिर विचार करके इनके लिये चक्की,स्पेलर, धान की कुटाई की मशीन इत्यादि लगाकर जीवन को आगे करने का प्रयास किया गया लेकिन असफलता ही हाथ लगी और यह मानकर उनके भाग्य पर ही छोड दिया गया।

इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की उत्पत्ति हुई जो इस प्रकार है–

1. नीलम श्रीवास्तवा पुत्री ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव
2. रविशंकर श्रीवास्तव पुत्र ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव

   तत्पश्चात् लम्बी विमारी के कारण माह सितम्बर 1982 में ज्वाला प्रसाद श्रीवास्त का स्वर्गवास हो गया एवं उनकी पत्नी का सितम्बर माह 2020 में स्वर्गवास हो गया।

बाके बिहारी श्रीवास्तव
पुत्र
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तवके सबसे छोटे एवं चतुर्थ पुत्र का जन्म विक्रम सवंत 1993 अर्थात सन् 1937 में हुआ अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिशद में लिपिक के पद पर जनपद आजमगढ़ के अधिशासी अभियन्ता के कार्यालय में नियुक्ती हो गई। तत्पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति गायत्री देवी पुत्री तेज बहादुर श्रीवास्तव ग्राम बनहरा जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हो गई। इस दाम्पत्य जीवन से चार सन्ताने प्राप्त हुई जो इस प्रकार हैं।

1. पुनीत कुमार श्रीवास्तव पुत्र बांके बिहारी श्रीवास्तव

2. सुनीत कुमार श्रीवास्तव — पुत्र बांके बिहारी श्रीवास्तव
3. ममता श्रीवास्तवा — पुत्री बांके बिहारी श्रीवास्तव
4. आरती श्रीवास्तवा — पुत्री बांके बिहारी श्रीवास्तव

इन्होंने अपना स्थाई निवास मोहल्ला मड़या (राहुलनगर) जनपद आजमगढ़ में बनाकर निवास कर रहे हैं। अपने जीवन काल में ही तीन बच्चों की शादी कर चुके हैं। तत्पश्चात् सन् 2010 जून में स्वर्गवासी हो गये।

पुनीत कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
बांके बिहारी श्रीवास्तव

जो सबसे बड़े पुत्र हैं। शिक्षा पूर्ण करने के बाद सन्यासी/वैराग्य की दीक्षा प्राप्त कर लिया जिसके कारण इनका दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नहीं हो सका और अविवाहित ही हैं।

सुनीत कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
बांके बिहारी श्रीवास्तव

जो दूसरे पुत्र हैं। अपनी शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात इनकी शादी श्रीमति बबीता श्रीवास्तव पुत्री गुण्डन लाल श्रीवास्तव , ग्राम कैथली जनपद आजमगढ़ से सन् 2001 में सम्पन्न हुई। इस वैवाहिक जीवन से दो पुत्रीयों का जन्म हुआ जो इस प्रकार है।

1. हास्या श्रीवास्तवा पुत्री सुनीत कुमार श्रीवास्तव
2. करूणा श्रीवास्तवा पुत्री सुनीत कुमार श्रीवास्तव

जो अभी शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं और इनका दाम्पत्य जीवन अभी प्रारम्भ नहीं हुआ है।

ममता श्रीवास्तवा
पुत्री
बाके बिहारी श्रीवास्तव

ममता श्रीवास्वतवा पुत्री बाके विहारी श्रीवास्तव की सबसे बड़ी पुत्री हैं। अपनी शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन आलोक कुमार श्रीवास्तव पुत्र राज समुझ लाल श्रीवास्तव मोहल्ला पाण्डेबाजार जनपद आजमगढ़ के साथ सम्पन्न हुआ। इनके इस जीवन से दो सन्तान प्राप्त हुई जो इस प्रकार है।

1. मिताली श्रीवास्तवा पुत्री अशेक कुमार श्रीवास्तव
2. अशोक अशोक श्रीवास्तव पुत्र आलोक कुमार श्रीवास्तव

मिताली श्रीवास्तवा का दाम्पत्य जीवन शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् बाम्बे, महाराश्ट्र के अनसुल श्रीवास्वत के साथ सम्पन्न हुई। आकाश श्रीवास्तव अभी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आरती श्रीवास्तवा
पुत्री
बाके बिहारी श्रीवास्तव

आरती श्रीवास्वतव पुत्री बाके विहारी श्रीवास्वत के सबसे छोटी पुत्री हैं। शिक्षा प्राप्त के उपरान्त इनका दाम्पत्य जीवन संजय कुमार श्रीवास्तव पुत्र गंगा प्रसाद श्रीवास्तव जनपद गोरखपुर से सम्पन्न हुआ। इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान प्राप्त हुई जो इस प्रकार हैं।

1. कैसीकी श्रीवास्तवा पुत्री संजय कुमार श्रीवास्तव
2. आर0 एन0 श्रीवास्वत पुत्र संजय कुमार श्रीवास्तव

दोनों सन्ताने अभी शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

शान्ती देवी
पुत्री
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव की जेष्ठ पुत्री शांति देवी का जन्म संवत् 1980 कार्तिक माह अर्थात सन् 1924 अक्टूबर माह में हुआ था। इनका दाम्पत्य जीवन रतसड़ निवासी जिला बलिया के शम्भूनाथ श्रीवास्तव से शुरू हुआ जो शाहगढ़ जनपद जौनपुर में शुगर मील में कार्यरत थे। इनसे दो सन्तान प्राप्त हुई जो इस प्रकार है।

1. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव पुत्र शम्भू नाथ श्रीवास्तव
2. अखिलेश चन्द्र श्रीवास्तव पुत्र शम्भू नाथ श्रीवास्तव

ये दोनो भाई बी0टेक0 पास कर बड़े भाई अर्थात रमेशचन्द्र श्रीवास्तव लखनऊ में

अपना निजी निवास बनाकर रहे हैं और सेवा निवृत्त हो चुके हैं।

दूसरे भाई इलाहाबाद में अपना निजी निवास बनाकर निवास कर रहे हैं तथा यह भी सेवा निवृत्त हो चुके हैं।

श्रीमति विद्या देवी
पुत्री
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्वत की द्वितीय पुत्री श्रीमति विद्या देवी का जन्म सवंत् 1996 भादों मास अर्थात सन् 1940 के सितम्बर माह में हुआ था। इनका दाम्पत्य जीवन जनपद गोरखपुर के बासगाँव के तहसील कौड़ीराम ग्राम गोड़सरी से हुई। इनके पति का नाम प्रेम शंकर श्रीवास्तव जो गोरखपुर में अपना निजी निवास बनाकर निवास कर रहे है। इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ति हुई जो इस प्रकार है।

1. ब्रम्ह प्रकाश श्रीवास्तव पुत्र प्रेम शंकर श्रीवास्तव
2. नन्हें प्रकाश श्रीवास्तव पुत्र प्रेम शंकर श्रीवास्तव

ये उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिशद गोरखपुर में कार्यरत थे और अपना स्थाई निवास भी गोरखपुर में बनाकर रहते हैं और वर्तमान समय में सेवा निव्त भी हो चुके हैं।

श्रीमति राम दुलारी देवी
पुत्री
रघुनाथ लाल श्रीवास्तव

रघुनाथ लाल श्रीवास्तव की तृतीय पुत्री श्रीमति राम दुलारी देवी का जन्म विक्रम संवत् 2000 के कार्तीक माह अर्थात सन् 1944 माह अक्टूबर में हुआ था। इनका दाम्पत्य जीवन ग्राम अतरसुबा , जिला बलिया जो वर्तमान समय में जनपद मऊनाथ भंजन में आता है। इस ग्राम के निवासी श्याम विहारी श्रीवास्तव के साथ सम्पन्न हुआ था और कुछ आपसी विवाद के कारण सुचारू रूप से आपसी संबन्ध ज्यादा दिनों तक नहीं चल सका जिसके कारण कोई सन्तान की प्राप्ती नहीं हो सकी।

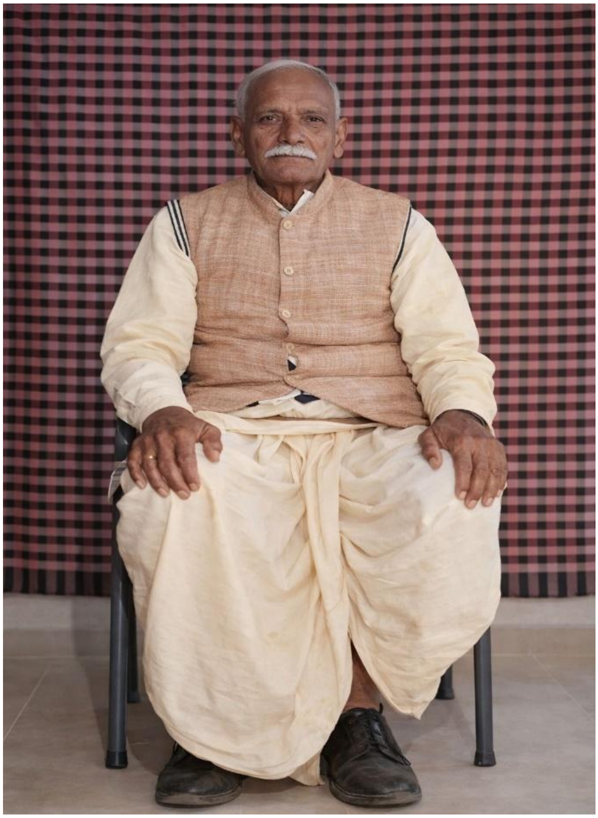

स्व0 गोरखनाथ श्रीवास्तव

वंश–वृक्ष

गोरखनाथ श्रीवास्तव की वंशावली

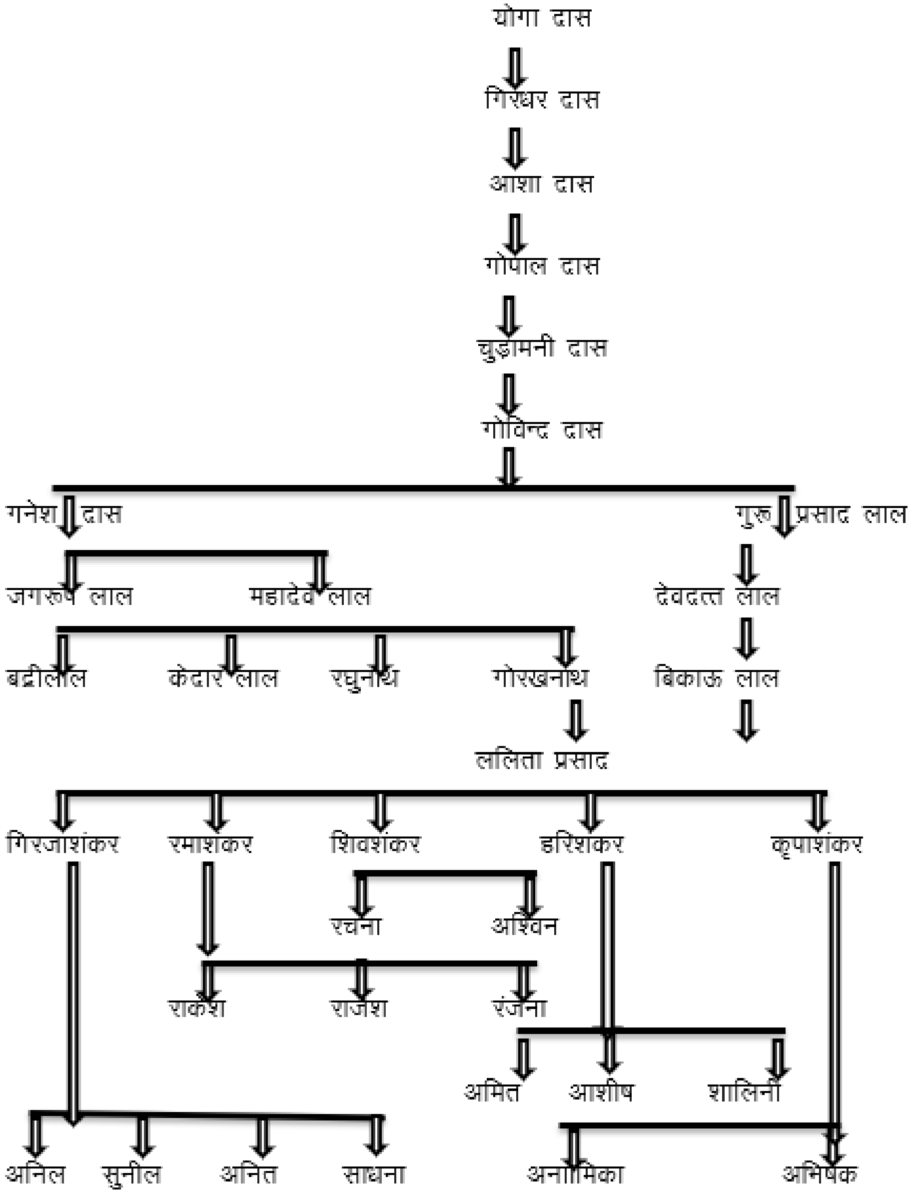

गोरखनाथ श्रीवास्तव पुत्र

महादेव लाल श्रीवास्तव का दाम्पत्य जीवन

गोरखनाथ श्रीवास्तव का दाम्पत्य जीवन भी अपने बड़ी भाई से मिलता जुलता है। इन का वैवाहिक जीवन भी नाबालिक अवस्था से ही प्रारम्भ हो गया और नाबालिक होने के कारण जीवन–मरण की अनुभुत भी कम हुई क्योंकि तत्कालीन समय में महामारियों का अत्यधिक प्रकोप था और कोई विशेष उपचार भी नहीं था इस कारण मृत्यु की संख्या भी अधिक से अधिक थी इनका भी प्राणी ग्रहण संस्कार चार बार हुआ जो इस प्रकार है।

प्रथम सुत्र बंन्धनः–श्री गोकुल लाल श्रीवास्तव की सुपुत्री सुनरी देवी ग्राम बसन्तपुर जनपद बलिया के सुत्र बन्धन में बंध गये। इस दाम्पत्य जीवन से एक सुपुत्री का जन्म हुआ। इस पुत्री के होने के तीन वर्षो के पश्चात् श्रीमति सुनरी देवी का स्वर्गवास हो गया। उस पुत्री का नाम स्वरस्वती देवी था।

स्वरस्वती देवीः–श्रीमति स्वरस्वती देवी जब शादी लायक हो गई तो इनकी शादी श्री वृजचन्द्र श्रीवास्तव ग्राम कैथवली जनपद बलिया के पुत्र श्री शिवनन्द लाल श्रीवास्तव से हुई। इस दाम्पत्य जीवन के कोई सन्तान नहीं हो सकी।

श्रीबृजचन्द्र श्रीवास्तव की दूसरी शादी भगवती लाल श्रीवास्तव की पुत्री से सम्पन्न हुई जो ग्रम राजपुर जनपद आरा राज विहार के निवासी हैं। इस दाम्पत्य जीवन से दो पुत्रों का जन्म हुआ जो इस प्रकार है। इनके माता–पिता का नाम ज्ञात नही है।

1. हेरिओम श्रीवास्तव पुत्र वृजचन्द श्रीवास्तव
2. दाऊ जी श्रीवास्तव पुत्र वृजचन्द श्रीवास्तव

द्वितीय सुत्र बंन्धनः–श्री सत्यनरायन लाल श्रीवास्तव की सुपुत्री सुमित्रा देवी ग्राम विसुकिया जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हुई जो अल्प समय में ही स्वर्गवासी हो गई इनसे कोई सन्तान नहीं हो सकी।

तृतीय सुत्र बंन्धनः–श्री गंगालाल श्रीवास्तव सुपुत्री सुशीला देवी ग्राम खोड़ी पाकड़ जनपद बलिया से सम्पन्न हुआ लेकिन इनका भी दाम्पत्य जीवन कम समय का रहा और इनका भी स्वर्गवास बिना संतान की उत्पत्ति के समाप्त हो गया।

चतुर्थ सुत्र बंन्धनः–श्री रामजनम लाल श्रीवास्तव की सुपत्री सुदामा देवी ग्राम पकड़ी जनपद बलिया से सम्पन्न हुई। इनका जीवन काल एवं दाम्पत्य जीवन काफी लम्बा एवं सफल रहा इनके द्वारा पाँचों पुत्रों की उत्पत्ति हुई जो इस प्रकार है।

1. गिरजा शंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव
2. रमा शंकर श्रीवास्वत पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव
3. शिव शंकर श्रीवास्वत पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव
4. हरिशंकर श्रीवास्वत पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव
5. कृपाशंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव

बड़का लाला बनने का इतिहास

बलिया जनपद ग्राम चिलकहर के जमीदारों एवं तालूकदारों के आपसी संपत्ति एवं जमीन के बटवारे के समय (कायस्थ परिवार) इस परिवार से 16/1 के हिस्सेदारी को लेने से इन्कार कर देने के कारण क्षत्रीय समाज में अत्यधिक सम्मान बढ़ गया था।

इस परिवार ने अपना नया घर बनाने के लिए जब प्रस्ताव रखा, उस समय क्षत्रीय समाज के माननीय व्यक्तियों द्वारा यह कहा गया कि आपलोग जिस प्रकार अपने घर में रह रहे उसी प्रकार रहे और हमलोंगों को थोड़ा समय दीजिए कि सभीलोग मिल बैठ कर इसपर गहन विचार विमर्श कर निर्णय कर और एक अच्छे नतीजे पर पहुँच सके।

सभी जमीदारों एवं तालूकदारों ने यह निर्णय लिया कि सबसे पहला कार्य यह होना चाहिए कि जब हमलोग इस परिवार को अपना मुखिया मान चुके है तो उसी के अनुरूप इस परिवार का घर भी होना चाहिए। इसलिए जिसके घर कोई मजदूर कार्य पर आयेगा वह सभी मजदूर सुबह और शाम आते और जाने के समय पर भी इस परिवार के घर के चारो तरफ एक–एक टोकरी मिट्टी डालकर ही कोई कार्य करेगा।

इसपर दोंनों भाई रधुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं गोरखनाथ श्रीवास्तव ने चिलकहर ग्रम के सभी क्षत्रीय समाज के अग्रणीय लोंगों कि एक सभा बुलाई कि किस कारण हमलोंगों के निवास के तीनों तरफ मिट्टी गिराई जा रही है। इसपर सभीलोंगो ने एकस्वर में कहा कि आप लोगों को परेशान होने की आवश्यकता नहीं है क्योकि आपलोग हमारे पूर्वजों के मार्गदर्शक रहे हैं और उन्हीं के साथ आये भी हैं। इसलिए हमलोंग भी वही सम्मान देना चाहते हैं। इसलिए सभी ने निर्णय लिया है आप का आवास एवं निवास भी उसी के अनुरूप रहें और आपलोग भी उसी के अनरूप कार्य और व्यवहार करेगें।

यह समाज आप से निवेदन करता है कि जो भी न्याय संगत एवं समाज हित में होगा वही निर्णय लेगे तथा हम सभीलोग पालन भी करेंगे। जहाँ तक सभंव होगा कोर्ट एवं कचहरी नहीं जायेंगे इस विचार के साथ ही आप के परिवार को सर्वसम्मत से (बड़े लाला) बड़का लाला के नाम से सबोधन भी करते रहेंगे।

उपरोक्त को ही आधार मानकर आप का निवास बनाया जायेगा जिसमें आपलोंगों का अशंदान नाम मात्र का होगा और मजदूरी क्षत्रीय समाज ही वहन करेगा । साथ ही साथ घर की सामग्री उपलब्ध भी कराने का भी प्रयास करेगा।

सर्व प्रथम कुंआ का निर्माण प्रारम्भ हुआ साथ ही साथ मजदूरों द्वारा प्रतिदिन मिट्टी भी गिराने का कार्य चलता रहा जब तक कुआ पुरा हुआ तब तक मिट्टी भी काफी मात्रा में पड़ गयी और जब घर का निर्माण शुरू हुआ उस समय चिलकहर ग्राम में सबसे ऊँचा स्थान बन चुका था।

सर्वसम्मत से निर्णय लिया गया कि सबसे पहले उत्तर तरफ से एक बड़ा कमरा और कमरे के आगे बरामदा बनाया जायेगा जिसका गाँव वालों द्वारा बगंला का नाम दिया गया। इसकी सभी दिवालें काफी मोटी–मोटी मिट्टी की बनाई गई जिससे धुप एवं जाड़े से बचाव हो सके। आगे का हिस्सा वरामदा का पाया ईटो का बनाया गया तथा दोंनों को एक साथ बास वल्लीं लकड़ी एवं नरिया थपुआ अर्थात खपरैल से तैयार कर दिया गया। इसके बन जाने के पश्चात् वारामदा के अगले हिस्से को दो भाग में काटकर एक छोटा सा चबूतरा बनाया गया। पुरब के चबूतरा के पूर्वी हिस्से को इस प्रकार बनवाया गया कि उस पर सर रख कोई भी व्यक्ति

आराम कर सके और बड़े चबूतरे को छोटे चबूतरे से 6 इंच निचे रखा गया जो पश्चिम तरफ के आवासीय मकान के साथ लगा हुआ था और इस स्थान पर पुरे गाँव की पंचायत एवं सभा हुआ करती थी।

इसके साथ गाँव के माननीय लोंगों एवं कामगारों के लिये जलपान एवं छोटी–छोटी प्रचलन के अनुसार जैसे बीड़ी तम्बाकू, खैनी,सुर्ती इत्यादि की व्यवस्था की गई और इसके लिये कोई न कोई कामगार अवश्य ही रहता था जिससे कभी भी किसी को असुविधा न हो सके। नये भवन बनाने के पश्चात् पुराना आवासीय भवन जिसमें सभी परिवार के लोग रहा करते थे उसे गिरा दिया गया। जब व्यवस्था सुचारू रूप से चलने लगी तब (कायस्थ परिवार) इस परिवार को लगा कि ग्राम वासियों के लिये भी हमें कुछ व्यवस्था करनी चाहिए क्योंकि उस समये के अधिकतर परिवार गरीबी रेखा के निचे ही थी इस को ध्यान में रखकर आवासीय भवन के ठीक सटे हुये एक बड़ा सा वारामदा और बगल से सिढ़ी निकाल कर दो मंजिला भवन बनाया गया वरामदे के उपर स्वयं घर के मुखिया रहा करते थे तथा निचे के वरामदा में आगन्तुकों एवं ग्राम वाले के लिये व्यवस्था की गई गर्मी के मौसम में चौकी पर हल्का विस्तर एंव जाड़े में ओढ़ने के लिये कम्बल रखा रहता था जो चाहे आकर रहें या विश्राम कर सकता था। गाँव में धन का अभाव था और दरवाजे पर गुड़ बनवाने के लिए गन्ने का रस निकाला जाता था और जो व्यक्ति गन्ने के रस ले जाना चाहे ले जाता था या यहीं अपनी प्यास/भुख मिटा सकता था और इसी प्रकार यहाँ हमेशा रात के समय आग जला करती थी और लोग अपने इच्छा अनुसार हमेशा आकर उसका लाभ ले सकते थे। रघुनाथ लाल श्रीवास्तव एवं उनके छोटे भाई गोरखनाथ श्रीवास्तव इस बात को हमेशा ध्यान में रखते कि आगन्तु को किसी प्रकार की परेशानी न हो इस लिये पुरब एवं पश्चिम दिशा से आने वाली रात एवं दिन के ट्रेनों के चले जाने के पश्चात् भोजन के लिये घर में जाते थे। इस व्यवस्था को अपने जीवन काल के अन्त तक निभाया जिसके कारण आने–जाने वाले व्यक्ति में सम्मान, ख्याति में बृद्धि हुई एवं कृति/यश भी बढ़ा। उस समय के अनुसार पठन एवं पाठन की व्यवस्था तथा प्रर्याप्त आवागमन का साधन न होने के कारण ग्राम चिलकहर में सगे संबन्धि एवं रिस्तेदार भी आकर इस गाँव से अपनी शिक्षा ग्रहण कर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इस कारण

धीरे–धीरे ख्याति एवं सम्मान में लगातार बृद्धि होती रही और हमारे पुर्वजों ने एक अनुपम उदाहरण भी पेस किया।

भगवान चित्रगुप्त मंदिर

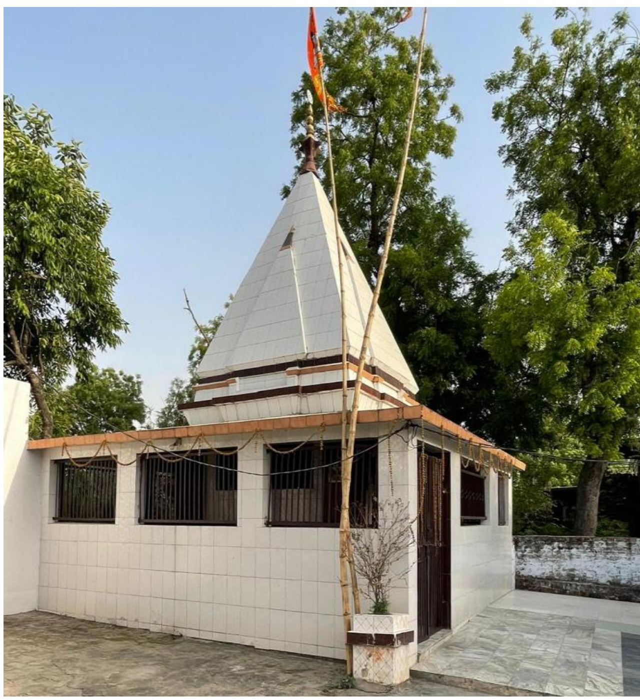

भगवान श्री चित्रगुप्त जी के मन्दिर का निर्माण

ग्राम चिलकहर रेलवे स्टेशन के निकट एवं रेलवे भूमि के दक्षिण तरफ के पास में एक व्यवसाइक प्रतिष्ठान पूर्वजों द्वारा स्थापित किया गया था जहां पर घरेलू चीनी(खडसारी) का निर्माण होता था। जिसका नाम करण गोला किया गया था।

गोला जिस कार्य के लिये स्थापित किया गया था उस उद्‌देश्य को कुछ समय के पश्चात् ही पुरा नहीं कर सका क्योंकि परिवार का कोई भी सदस्य इस कार्य में रूची नहीं रखता था और मजदूरों के सहारे चलाना

सम्भव नहीं हो सका इस कारण इस व्यवसाय को बन्द करना पड़ा। तत्पश्चात् इस प्रतिष्ठान की देख भाल न होने के कारण यह छिन्न–भिन्न की स्थित में पहुँच गया और भवन भी गिरने लगा। जिसके कारण बहुत ही क्षति उठानी पड़ी।

प्रतिष्ठान के क्षति को ध्यान में रखकर सभी परिवार के लोग इस पर विचार करने लगे कि इसमें लगे समान का किस प्रकार सदुपयोग किया जाय। बहुत सोच–विचार कर योगादास से सम्बन्धित चारो गाँव के (विरादरी) के लोंगों को बुलाकर विचार के बाद यह निर्णय लिया गया कि ग्राम चिलकहर में अपने कुल के जन्मदाता भगवान चित्रगुप्त जी है। का कोई मन्दिर नहीं है। इसलिए क्यों न अपने कुल के मर्यादा के अनुरूप देव तुल्य एंव पुज्य श्री चित्रगुप्त जी का मन्दिर का निर्माण ही इस सामग्री से कराया जाय।

तत्कालीन समय मे कायस्थ परिवार के ही एक कानूनगो जिनका नाम विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव था उनके मार्गदर्शन में यह कार्य प्रारम्भ हुआ और इसी के साथ यह भी निर्णय लिया गया कि अपने स्वेक्षा से जो सहयोग देना चाहते हैं वह अपना सहयोग किसी रूप में धनदान, अन्नदान या श्रमदानद्ध दे सकते हैं। यह कार्य सन् 1945 में आरम्भ हुआ लेकिन विधि के विधान के कारण अवरोध उत्पन्न हो गया और साथ ही साथ श्री विश्वनाथ लाल श्रीवास्तव का भी स्थानान्तरण बासड़ीह तहसील जनपद बलिया हो गया और इसी कारण कार्य सम्पन्न कराने में अवरोध उत्पन्न हो गया।

कुछ समय पश्चात् पुनः निर्माण की योजना बनी और इसमें यह निर्णय लिया गया कि गोला के सामग्री से ही मन्दिर का निर्माण करवाया जाय। इस व्यवस्था के कारण मन्दिर का निर्माण बहुत ही छोटे रूप में करके शिवलिंग ही स्थापना करा दिया गया। यह भी कहा जा सकता है कि मन्दिर न बना कर पूजा स्थल का रूप दे दिया गया और जिस उद्देश्य से यह मन्दिर का निर्माण होना था वह नहीं हो सका। पुनः इस कार्य पर विचार कर कार्य प्रारम्भ किया गया और कार्य चल ही रहा था कि शिवशंकर एवं हरिशंकर इस कार्य को देखने के लिए मन्दिर के अन्दर चले गये और बाहर निकलते समय अन्जाने में हरिशंकर कुंए में गिर गये और गिरते समय उनका सर नीचे चला गया और पैर उपर हो गया।

भगवान की कृपा से कुये के अन्दर सर उपर और पैर नीचे हो गया। उस समय में निर्माण कार्य के मजदूर भगेलू तत्काल रस्सी के सहारे कुएं में उतर गया और अन्दर से पानी उपर फेंका तो भगेलू के हाथ में हरिशंकर का हाथ आ गया और इस प्रकार हरिशंकर को भगेलू द्वारा कुएं में होने के पश्चात् दूधनाथ सिंह ने कुएं में खचौली बान्धकर कुएं में लटका दिया और खचोली के सहारे हरिशंकर को बाहर निकाल लिया गया। तत्पश्चात् भगेलू भी रस्सी के सहारे बाहर आ गये।

उपरोक्त घटना के कारण भगवान शिव पर पूर्ण आस्था और प्रगाढ़ हो गई इस परिस्थिति के प्रभाव से मन्दिर निर्माण की गति तेज हो गई और इस लक्ष्य को शिघ्र पुरा कर लिया गया तथा मन्दिर का निर्माण सन् 1951 में पूरा कर लिया गया।

भविष्य को ध्यान में रखते हुए मन्दिर के साथ लगे हुए कुआं पर 2.5 फिट की रेलिंग बनाई गई साथ ही साथ कुआं के आधे हिस्से को पाट/ढक दिया गया जिससे किसी प्रकार की भविष्य में कोई घटना न हो सके।

मन्दिर निर्माण के पश्चात् होली के दूसरे दिन विधी विधान एवं वास्तु कला के आधार पर मुर्ती की स्थापना पंड़ित द्वारा करा दिया गया।

ईश्वर के विशेष कृपा से मन्दिर का पुनः निर्माण एवं भूमि शोधन श्री राधेश्याम त्रिपाठी , ग्राम दिलौरी , रानी की सराय जनपद आजमगढ़ के महान विद्यावान एवं तात्रिंक पन्डित थे और उन्हें गुरू जी के नाम से जाना जाता था। गुरूजी के कहने पर इस मन्दिर के चारो तरफ बरामदा जो परिक्रमा स्थल बना उसे जाली से बन्द कर दिया जाय तो बहुत ही अच्छा हो। इस कार्य में शिवशंकर ने चारो तरफ की जाली और रमाशंकर ने मुख्य गेट बनवाकर इस कार्य को पुरा कराया।

मन्दिर के अन्दर जंगले की भी एक विशेष कहानी है। जिसका उल्लेख भी आवश्यक है। हमलोग के घर के पूरब तरफ एक गुप्ता परिवार निवास करता है। उस परिवार के मुखिया का नाम महावीर प्रसाद गुप्ता था। उनके पुत्र हरिहर प्रसाद गुप्ता की पत्नी ने राधा–कृष्णा एवं गणेश जी की प्रतिमा की पुजा किया करती थी।

उनकी लडकी का स्वर्गवास हो जाने के कारण उपरोक्त प्रतिमा को लाकर मन्दिर में रख दिया जो कि खन्डित मुर्ती थी, उस प्रतिमा को हमारे पूर्वजों ने सिमेन्ट से जुड़वा दिया और मन्दिर में ही रहने दिया।

भगवत् की कृपा से कुछ समय से अन्तराल मे एक पहाडी ज्योतिषि जी आ गए और मन्दिर में चलें गये तथा खन्डित मुर्तीयों को देखकर कहा कि खन्डित प्रतिमा की पूजा नहीं की जाती है। आप एवं परिवार को महावीर प्रसाद गुप्ता के पश्चिम का जंगला भी नहीं देखना चाहिए क्यों कि यह आप लोंगो के परिवार के लिए अशुभ एवं हानिकारक है इसका हमेसा ध्यान रखना चाहिए।

इसका परिणाम यह हुआ कि राधा–कृष्ण एवं गणेश जी की प्रतिमा अपने आप खन्डित होकर जमीन पर गिर गई इसके साथ ही साथ जो भी छोटी–छोटी प्रतिमा थी वह अपने आप गायब होती चली गई। इस कारण घर परिवार पर तरह–तरह की परेसानियां भी आने लगी।

इस बातों को ध्यान में रखते हुए श्री राधेश्याम त्रिपाठी जी को बुलाया गया और सभी बातों एवं घटनाक्रम को विस्तार से संज्ञान में लाया गया तो त्रिपाठी जी सर्वप्रथम खन्डित प्रतिमा को उसके वजन के बराबर चावल एवं वस्त्र के साथ बहते जल में प्रवाहित कराया और साथ ही साथ जो प्रतिमा खन्डित नहीं थी और दूसरे परिवार से लाकर रखी गई थी उसे उनके घर भेजवा दिया तथा जो प्रतिमा दूसरे घर की बच गई थी उसे भी जल में उसी प्रकार विसर्जित करा दिया। उसके पश्चात् कुछ पुजा पाठ एवं हवन कराकर आये हुए प्रभाव को प्रभाव हीन कराया।

आपलोग मन्दिर के उत्तर वाली गर्भ गृह के दिवाल में 32 अंगुल का एक जाली का जगंला अवश्य लगवादें जिससे घर में सुख शान्ति बनी रहेगी और मन्दिर में कोई दोष नहीं रहेगा।

आपलोंगो को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि आप का घर ऊँचाई पर है और महावीर प्रसाद गुप्ता का घर आप से नीचे है। इस कारण कभी भी घर से बाहर निकलते समय उपर न देखे और अपने ईष्ट देव को ध्यान में रखकर अथवा मन्दिर को ध्यान में रखकर ही बाहर जाया करें। यह आप के और आप के परिवार के लिये शुभ रहेगा।

परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा से गिरजाशंकर के तृतीय पुत्र अनित कुमार श्रीवास्तव (बबलू) को प्रेरणा मिली की चिलकहर में अपने पूर्वजों की कृति (धरोहर) को सहेजा और सवारा जाय इस क्रम में अमित कुमार ने सर्वप्रथम मन्दिर के अन्दर और बाहर टाइल्स से सजाया गया तत्पश्चात् घर के सम्मानित सती स्थान को भी सुसज्जित किया गया। और साथ ही साथ माता भवानी के मन्दिर को भी भव्य रूप दिया गया जिसमें महावीर प्रसाद गुप्ता के परिवार ने भी अपना सहयोग देकर इस कार्य में हाथ बटाया और मां का मन्दिर भी अपने भव्यता को प्राप्त हो गया।

यह उल्लेख भी आवश्यक हो जाता है कि अपने परिवार में दो ब्रम्ह का स्थान जो घर के अन्दर उत्तर वाले कमरे में था उसे श्री राधेश्याम त्रिपाठी के दिशानिर्देशन में इन लोंगो को भी सन् 1988 में मन्दिर में दक्षिण की तरफ स्थान खाली था उसी में स्थापित कर दिया गया जिससे उनकी भी पुजा अर्चना सभी देवी देवताओं के साथ हो जाती है और घर का एक कमरा जो ब्रम्ह के नाम से था उसे भी खाली कर निवास के कार्य में व्यवस्थित कर दिया गया।

गोरखनाथ श्रीवास्तव की वंशावली

गिरजा शंकर श्रीवास्तव
पुत्र
गोरखनाथ श्रीवास्तव

गिरजाशंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव के प्रथम पुत्र का जन्म संवत् 1992 अषाढ़ माह सन् 1936 माह जुलाई में हुआ। शिक्षा ग्रहण के मध्य ही इनका दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ हो गया। इनकी जीवन संगीनी श्रीमति कृष्णा श्रीवास्तवा पुत्री विश्वनाथ लाल , ग्राम ताजपुर, डेहमा , जनपद गाजीपुर के साथ 24 जून सन् 1953 को सम्पन्न हुआ। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इनको अत्यधिक परेसानियों एवं परिस्थिति के उतार–चढ़ाव के पश्चात् जनपद गोरखपुर के राज्य विद्युत परिशद उत्तर–प्रदेश में सब–स्टेशन इन्चार्ज के पद पर नियुक्ति हो गई। कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात् इन्हें आगे बढ़ने की लालसा एवं अपने कार्य के प्रति निष्ठा होने से विभागीय परीक्षा उत्तीर्ण करते गये और निरन्तर उन्नति करते रहे। इसी कार्य निष्ठा के बीच इन्हें अपने ग्राम चिलकहर के विद्युतीयकरण का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और अपने जन्म भूमि एवं कर्मभूमि समझकर इस ग्राम का विद्युतीयकरण इस प्रकार से कराया कि जो अनुकरणीय मिसाल बन गया। इस आधार पर इन्हें अन्य ग्रामों का कार्य करने का अवसर भी मिला और पूर्ण जिम्मेदारी से इनका निर्वाह भी किया।

काफी इन्तजार के बाद इनके जीवन संगीनी से तीन पुत्र एवं पुत्री हुई जो इस प्रकार हैं।

1. अनिल कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव
2. सुनील कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव
3. अनित कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव

4. साधना श्रीवास्तवा पुत्री गिरजाशंकर श्रीवास्तव

अपने सभी जिम्मेदारियों का पालन करने हुए विभागीय परीक्षा जो अवर–अभियन्ता के पद की थी उत्तीर्ण होकर हरद्वागंज पावर हाउस में अपना कार्य भार सभाला और कुछ समय पश्चात् इनका स्थानान्तरण मऊनाथ भंजन के पावर हाउस में हो गया तत् पश्चात् इनका स्थानान्तरण विद्युत वितरण खण्ड आजमगढ़ में हो गया। तत्कालीन समय में अपना निजी आवास मोहल्ला जनपद मड़या, आजमगढ़ में निर्माण कराकर उसी मे रहने लगे।

कुछ अन्तराल के बाद हृदय संम्बन्धित विमारी से ग्रसीत हो गये और अस्वस्थ्य रहने लगे इस कारण अपने अच्छे उपचार के लिए वाराणसी स्थानान्तरण करा लिया जिससे उपचार भी ठीक से हे जायेगा और विभागीय कार्य भी सूचारू रूप से होता रहेगा।

इस सोच के साथ वाराणसी जनपद के 33/11 के0वी0 सबस्टेशन राजा के तालाब पर अपना कार्यभार ग्रहण किया। समय के अनुसार कार्य ठीक ढंग से चल ही रहा था कि इसी बीच अपने दो बच्चों का आयुर्वेदाचार्य के पठन–पाठन के लिए विहार प्रान्त के कालेज में नामाकंन करा दिया। कुछ समय ठीक से कार्य चलता रहा। इसी बीच एक अप्रिय घटना घटी कि उन्हें 9 अगस्त सन् 1980 में अचानक हृदय आधात से मुत्यु हो गई। जिसके कारण बच्चों के पठन–पाठन बीच में ही छोड़कर घर वापस आना पड़ा और शिक्षा अवरूद्ध हो गई। इस प्रकार अन्त में अपने जिम्मेदारियों को छोड़कर स्वर्गवासी हो गये।

अनील कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
गिरजा शंकर श्रीवास्तव

अनील कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव का जन्म सन् 1961 में हुआ जो गिरजाशंकर श्रीवास्तव के प्रथम पुत्र हैं। इनकी शिक्षा विहार प्रान्त के आयुवेदाचार्य कालेज में प्रवेश के कुछ अन्तराल के पश्चात् पिता

गिरजाशंकर श्रीवास्तव के स्वर्गवासी हो जाने के कारण अवरूद्ध हो गया और बीच में ही पढ़ाई छोड़कर वापस घर आना पड़ा।

इनके पिता राज्य विद्युत परिषद उत्तर–प्रदेश में अवर–अभियन्ता के पद पर जनपद वाराणसी में कार्यरत थे इस कारण अनील कुमार श्रीवास्तव को उत्तर–प्रदेश के शासन के नियमानुसार इन्हें राज्य विद्युत परिषद के मुख्य अभियन्ता कार्यालय , वाराणसी में कार्यालय सहायक (लिपिक) के पद पर नियुक्ति हो गई जो वर्तमान समय में सेवानिवृत होकर वाराणसी में स्थायी रूप से निवास कर रहे है। इनका दाम्पत्य जीवन नियुक्ति के कारण समय से पहले ही श्रीमति चन्द्रा श्रीवास्तवा पुत्री कृष्ण माधो लाल श्रीवास्तव के सुपुत्री के साथ सन् 1982 में विवाह सम्पन्न हो गया। जिसका स्थाई निवास ग्राम कौड़िया जनपद आजमगढ़ है। इस दाम्पत्य जीवन से एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका विवरण इस प्रकार है।

रितु श्रीवास्तवा (विभा श्रीवास्तवा)
पुत्री
अनील कुमार श्रीवास्तव

रितु श्रीवास्तवा पुत्री अनील कुमार श्रीवास्तव का जन्म 07.01.1985 (सात जुलाई (1985) में हुआ। पूर्ण शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इनकी शादी अमीत कुमार श्रीवास्तव पुत्र हरिप्रकाश श्रीवास्तव ग्राम रानीपुर जनपद गाजीपुर के साथ सन् 2015 में सम्पन्न हुई। इस दाम्पत्य जीवन से वर्तमान समय में एक पुत्र को जन्म दिया है। जिसका विवरण इस प्रकार है।

1 कृषब श्रीवास्तव पुत्र – अमीत कुमार श्रीवास्तव के प्रथम पत्नी श्रीमति चन्द्रा श्रीवास्तवा का निधन रितु श्रीवास्तवा के पश्चात् दूसरी सन्तान के उत्पत्ति के साथ ही हो गयी थी इसी कारण से अनील कुमार श्रीवास्तव का दूसरा दाम्पत्य जीवन श्रीमति पम्मी श्रीवास्तवा पुत्री चन्द्रमणि वर्मा जनपद जौनपुर के साथ सन् 1988 में सम्पन्न हुआ। इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तानें प्राप्त हुई जो इस प्रकार हैं।

1. वैभव श्रीवास्तव पुत्र अनील कुमार श्रीवास्तव
2. प्रज्ञा श्रीवास्तवा पुत्री अनील कुमार श्रीवास्तव

वैभव श्रीवास्तव
पुत्र
अनील कुमार श्रीवास्तव

वैभव श्रीवास्तव का जन्म 05.07.1989 में हुआ। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति अप्रजिला श्रीवास्तव के साथ सितम्बर 2019 से प्रारम्भ हुआ। इस दाम्पत्य जीवन से एक सन्तान की उत्पत्ति हुई जिसका विवरण इस प्रकार है।

जन्म 10 मई 2020 जिसका नामकरण प्रान्जल श्रीवास्तवा पुत्री वैभव श्रीवास्तव है।

प्रज्ञा श्रीवास्तवा
पुत्री
अनील कुमार श्रीवास्तव

इनका जन्म 03.10.1994 को हुआ। पूर्ण शिक्षा करने के पश्चात् दिल्ली एन0सी0आर0 में फेशन डजाईनर के रूप में कार्य कर रह हैं। अभी इनका दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नही हुआ है।

सुनील कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
गिरजाशंकर श्रीवास्तव

सुनील कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव के द्वितीय पुत्र का जन्म 11.06.1963 में हुआ इनकी भी शिक्षा बड़े भाई अनील कुमार श्रीवास्तव के साथ ही विहार प्रान्त के आयुवेदाचार्य के कालेज से प्रारम्भ हुआ लेकिन दुर्भाग्यवस पिता गिरजाशंकर श्रीवास्तव का स्वर्गवास हो जाने के कारण अवरूद्ध हो गयी जिसके फलस्वरूप आयुर्वेद के डाक्टर नहीं बन सके। समय का परिवर्तन हुआ और इन्होने राजकीय पॉलीटेक्नीक स्कूल आजमगढ़ में सिविल इन्जीनियरिंग से डिप्लोमा किया, जिसके फलस्वरूप विहार प्रान्त में स्वर्ण रेखा परियोजना में अवर–अभियन्ता के परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् नियुक्ति हो गई और अपना कार्यभार सुचारू रूप से करने लगे।

इनका दाम्पत्य जीवन बिहार प्रान्त में ही श्रीमति चन्द्रा श्रीवास्तवा पुत्री मुक्तीनाथ श्रीवास्तव सिवान के साथ दिनांक 29.11.1993 के साथ सम्पन्न हो गई। इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ती हुई। जो इस प्रकार है–

1. सिद्धार्थ कुमार श्रीवास्तव — पुत्र सुनील कुमार श्रीवास्तव
2. श्रेया श्रीवास्तवा — पुत्री सुनील कुमार श्रीवास्तव

इन सबके बीच इन्होंने अपना निवास जमशेदपुर (टाटानगर) प्रान्त झारखण्ड में बनाया और वहीं पर रहने लगे। समय के साथ वर्तमान समय में जमशेदपुर (टाटानगर) से स्थानान्तण होकर रांची झारखण्ड में कार्य करते हुये सेवानिवृत होकर अपने निवास में रह रहे है।

सिद्धार्थ कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
सुनील कुमार श्रीवास्तव

सिद्धार्थ कुमार श्रीवास्तव पुत्र सुनील कुमार श्रीवास्तव के प्रथम पुत्र का जन्म 22.03.1995 को हुआ और इनका पठन–पाठन विहार प्रान्त में जमशेदपुर में ही हुआ और बी0टेक इन्होंने राजस्थान से उत्तीर्ण कर अपना ही व्यवसाय जमशेदपुर और रांची झारखण्ड में कर रहे हैं और अभी इनका दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नही हो सका है।

श्रेया श्रीवास्तवा
पुत्री
सुनील कुमार श्रीवास्तव

श्रेया श्रीवास्तवा पुत्र सुनील कुमार श्रीवास्तव की दूसरी सन्तान है जिसका जन्म 01.10.1998 को हुआ। इन्होनें भी अपनी शिक्षा जमशेदपुर से प्रारम्भ कर उच्च शिक्षा भी प्राप्त कर लिया है एवं जयपुर से फैशन डिजाइनिंग का कोर्स करने के पश्चात् अपने माता–पिता के साथ रह कर उनके कार्यो में हाथ बटा रही हैं। इनका भी अभी दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नहीं हुआ है।

अनित कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
गिरजाशंकर श्रीवास्तव

अनित कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव के तृतीय पुत्र का जन्म सन् 1966 में हुआ। इनकी शिक्षा भी आजमगढ़ में ही प्रारम्भ हुआ, तथा इन्जीनियरिंग भी राजकीय पालीटेक्निक से सिविल से इंजीनियरिंग करने के पश्चात् कुछ दिनों तक नौकरी करने के वाद अपना व्यवसाय करने लगे। इसी बीच इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति राखी श्रीवास्तवा पुत्री सत्यशरण श्रीवास्तव (एडवकेड) गाजीपुर के साथ 02.02.1997 को सम्पन्न हुआ जिससे एक सन्तान की उत्पत्ति हुई जो इस प्रकार है।

वर्तमान समय में अपना स्थाई निवास लखनऊ में बनाकर वहीं रह रहे हैं तथा अपना व्यवसाय भी उत्तर–प्रदेश के राजधानी लखनऊ में कर रहे हैं।

नमीत प्रकाश श्रीवास्तव
पुत्र
अनित कुमार श्रीवास्तव

नमीत प्रकाश श्रीवास्तव पुत्र अनित कुमार श्रीवास्तव के पुत्र हैं और इनका जन्म 16.10.1998 में हुआ है। इनकी प्राइमरी शिक्षा लखनऊ से ही प्रारम्भ होकर नोएडा से एम टेक करने के पश्चात् वर्तमान समय में अपने पिता के व्यवसाय में ही अपना योगदान दे रहे हैं। अभी इनका दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नहीं हुआ है।

साधना श्रीवास्तवा
पुत्री
गिरजाशंकर श्रीवास्तव

साधना श्रीवास्तवा पुत्री गिरजाशंकर श्रीवास्तव के चतुर्थ सन्तान के रूप में प्रथम पुत्री है जो अपनी शिक्षा पुरी करने के पश्चात् अजय कुमार श्रीवास्तव ग्राम अमीलो जनपद आजमगढ़ के साथ दाम्पत्य जीवन मार्च 1991 में प्रारम्भ हुआ। इनके पति आकाशवाणी लखनऊ में ही अधिशासी अभियन्ता के पद पर कार्यरत थे। इनके जीवन में दो सन्तानों की उप्तत्ति हुई। दोनों बच्चें उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे इसी बीच ट्रेन दुर्घटना में असमय में ही स्वर्गवासी हो गये जो बहुत कष्टदायक समय रहा। वर्तमान समय में साधना श्रीवास्तवा लखनऊ में ही अपने पति के बनाये निवास में रह रहीं हैं और दोनों बच्चे अन्तराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत हैं।

रमाशंकर श्रीवास्तव
पुत्र
गोरखनाथ श्रीवास्तव

रमाशंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव के द्वितीय पुत्र का जन्म सवंत् 1995 अर्थात सन् 1939 में हुआ था। इनकी शिक्षा ग्राम चिलकहर एवं बलिया में हुई तत्पश्चात् गोरखपुर से डिप्लोमा की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इनकी नियुक्ति नलकूप विभाग उत्तर प्रदेश में हो गई। इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति मालती श्रीवास्तवा पुत्री सुदामा लाल श्रीवास्तव ग्राम सवन सिकरिया जनपद बलिया के साथ सन् 1954 में सम्पन्न हुई। इनका दाम्पत्य जीवन से चार सन्तानों की उत्पत्ति हुई। प्रथम सन्तान की मुत्यु लगभग 1 वर्ष के अन्दर ही हो गई। वर्तमान समय में इनकी तीन सन्तानें हैं जिनका विवरण इस प्रकार है।

1. राजेश कुमार श्रीवास्तव पुत्र रमाशंकर श्रीवास्तव
2. राकेश कुमार श्रीवास्तव पुत्र रमाशंकर श्रीवास्तव
3. मजू रंजना श्रीवास्तवा पुत्री रमाशंकर श्रीवास्तव

रमाशंकर श्रीवास्तव अपनी सेवा नलकूप विभाग में देने के पश्चात् सेवा निवृत होकर अपना जीवन ग्राम चिलकहर जनपद बलिया में व्यतीत कर रहे हैं। इनकी पत्नी श्रीमति मालती श्रीवास्तवा का स्वर्गवास माह सितम्बर सन् 2016 में हो गया।

राजेश कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
रमाशंकर श्रीवास्तव

राजेश कुमार श्रीवास्तव पुत्र रमाशंकर श्रीवास्तव के प्रथम पुत्र हैं। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् जल निगम में अवर अभियन्ता के पद पर नियुक्ति हो जाने के पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति रेखा श्रीवास्तवा पुत्री सत्य नरायन लाल श्रीवास्तव मोहल्ला पहाड़पुर डीहबाबा के निकट जनपद आजमगढ़ के साथ माह नवम्बर सन् 1990 में सम्पन्न हुआ। इस जीवन काल में दो सन्तानों की उत्पत्ति हुई।

1. शिवम् श्रीवास्तव पुत्र राजेश श्रीवास्तव
2. तन्नू श्रीवास्तवा पुत्री राजेश श्रीवास्तव

राजेश कुमार श्रीवास्तव वर्तमान समय में वाराणसी में जल निगम में अधिक्षण अभियन्ता के पद पर कार्य करते हुये सेवा मुक्त होकर अपना स्थायी निवास प्रयागराज के झूसी में निर्माण कर पुरे परिवार के साथ वहीं पर निवास करते हैं। शिवम एवं तन्तु श्रीवास्तवा अपनी शिक्षा पुरी कर प्राइवेट कम्पनी में कार्यरत हैं तथा इनका अभी दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ नहीं हुआ है।

शिवम श्रीवास्तव
पुत्र
राजेश श्रीवास्तव

शिवम् श्रीवास्तव प्रारम्भिक शिक्षा बांदा जिला से प्रारम्भ होकर दिल्ली एन0सी0आर0 से बी0टेक0 की उपाधि प्राप्त कर अपने स्वयं के कार्य में अपना योगदान दे रहे है इनका भी दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नही हो सका है।

तन्नू श्रीवास्तवा
पुत्री
राजेश श्रीवास्तव

तन्नू श्रीवास्तवा प्रारम्भिक शिक्षा बांदा जिला से प्रारम्भ होकर दिल्ली एन0सी0आर0 से फैशन डिजाईनर की उपाधि प्राप्त कर अपने माता पिता के कार्य में सहयोग प्रदान कर रही है इनका भी दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नही हो सका है।

राकेश कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
रमाशंकर श्रीवास्तव

राकेश कुमार श्रीवास्तव पुत्र रमाशंकर श्रीवास्तव के दूसरे पुत्र हैं। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश कम्पनी में कार्यरत थे तत्पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति शिखा श्रीवास्तवा ग्राम कैथवली जनपद आजमगढ़ के साथ सन् 30 मई 2002 में शादी के सुत्र बन्धन में बंध गये। वे अपना निजी व्यवसाय कर रहे हैं तथा इनकी पत्नी श्रीमति शिखा श्रीवास्तवा सरकारी विद्यालय में अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। इस जीवन से इन्हें तीन सन्तान की उत्पत्ति हुई है। तीनों बच्चे अभी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा राकेश कुमार श्रीवास्तव अपना निजी आवास बनाकर गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश में निवास कर रहे है।

रंजना उर्फ मंजू श्रीवास्तवा
पुत्र
रमाशंकर श्रीवास्तव

रंजना उर्फ मंजू श्रीवास्तवा पुत्री रमाशंकर श्रीवास्तव की तृतीय संतान है जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपना दाम्पत्य जीवन संजय कुमार श्रीवास्तव ग्राम नगरा के पास जनपद बलिया के साथ जीवन संगीनी के रूप में 6

जून 1998 में प्रवेश किया तत्पश्चात् इस दाम्पत्य जीवन से तीन पुत्रों को जन्म दिया और अपने पति के साथ ही अनेको स्थान पर स्थानान्तरण के साथ–साथ रहती चली आ रही है। वर्तमान समय में दिल्ली के फरीदाबाद एन0सी0आर0 में निवास कर रही है।

शिवशंकर श्रीवास्तव
पुत्र
गोरखनाथ श्रीवास्तव

गोरखनाथ श्रीवास्तव के तृतीय पुत्र शिवशंकर श्रीवास्तव का जन्म 01.07. 1944 ग्राम चिलकहर जनपद बलिया मे हुआ इनकी प्रायमरी शिक्षा गांव के ही स्कूल से ही प्रारम्भ होकर मुरली मनोहर महाविद्यालय बलियां से वी. एस.सी. उत्तीर्ण कर बड़े भाई गिरजाशंकर श्रीवास्तव के प्रयास से उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिशद आजमगढ़ में लिपिक के पद पर नियुक्ति हो गये।

इनकी जीवन संगिनी श्रीमती आशा श्रीवास्तवा पुत्री उमाशंकर श्रीवास्तव ग्राम सिकन्दर पूर जनपद बलिया के साथ सन 28.05.1969 में सम्पन्न हुई। तत्कालीन समय में इनका स्थाई निवास मोहल्ला लालबाग वाराणसी में था इस कारण यह शादी का बन्धन वाराणसी जनपद से संम्पन्न हुआ। इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ति हुई। जो इस प्रकार है।

1.रचना श्रीवास्तवा पुत्री शिवशंकर श्रीवास्तव

2.अश्विन कुमार श्रीवास्तव पुत्र शिवशंकर श्रीवास्तव

आगे बढ़ने के प्रवृत्ति के कारण समय ने भी साथ दिया , इसी बीच उत्तर प्रदेश के शासन द्वारा राज्य कर्मचारियों के लिए एक योजना का प्रारम्भ हुआ कि अपने विभाग के उच्च अधिकारी से अनुमति प्रदान कर चार वर्षीय (अंशकालीन) डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं और परीक्षा उत्तीर्ण कर विभागीय स्तर पर योग्यता के आधार पर पदोन्नति प्राप्त कर सकते है। इसमें उम्र (आयु) का कोई बन्धन नहीं रहेगा।

उपरोक्त आदेश का पालन सुनिश्चित कर सन 1976 में राजयकीय पालिटेकनिक कालेज, आजमगढ़ से इलेक्ट्रिकल डिप्लोमा में प्रवेश लेकर सन 1980 में डिप्लोमा उत्तीर्ण कर विभागीय परीक्षा सन् 1985 में उत्तीर्ण करने के पश्चात् ओवरा थर्मल पावर प्रोजेक्ट से प्रशिक्षण प्राप्त कर सन 1985 में ही ओवरा में अवर अभियन्ता पद पर नियुक्ति भी हो गई। कुछ समय पश्चात् यहां से स्थानान्तरण होकर थर्मल पावर प्रोजेक्ट टाड़ा

जनपद फैजाबाद में कुछ समय कार्यरत रहने के पश्चात् वेशु (वाराणसी) में स्थानान्तरण होकर कार्य किया और अल्प समय कार्य करने के बाद पुनः स्थानान्तरण होकर विद्युत वितरण खण्ड प्रथम में सन् 1988 में कार्य प्रारम्भ किया और इस खण्ड से सेवा निवृत्त होकर अपना निवास बनाकर आजमगढ़ में ही रह रहें है।

अश्विन कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
शिवशंकर श्रीवास्वत

शिवशंकर श्रीवास्तव के द्वितीय सन्तान अश्विन कुमार श्रीवास्तव का जन्म 16.02.1976 दिन मंगलवार मोहल्ला सिधारी, जनपद आजमगढ़ में हुआ। इनकी प्राइमरी शिक्षा जनपद के ही नर्सरी स्कूल में प्रारम्भ होते हुए महर्षि दयानन्द महाविद्यालय (D.A.V.) से बी०एस०सी० उत्तीर्ण होने के पश्चात् दिल्ली से (M.B.A.) की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद दिल्ली में ही एक निजी कम्पनी से अपनी सेवा का आरम्भ किया।

तत् पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति शिविका श्रीवास्वता पुत्री सुरेन्द्र नाथ श्रीवास्वत जो भारतीय जीवन बीमा निगम में तत्कालीन समय में शाखा प्रबन्धक मऊनाथ भंजन में कार्यरत थे तथा इनकी पत्नी श्रीमती शीला श्रीवास्तवा सोनी धापा इण्टर कालेज, मऊनाथ भंजन में प्रधानाचार्य पर कार्यरत थी।

शिविका श्रीवास्वतवा भी (M.B.A.) लखनऊ उत्तर प्रदेश से उत्तीर्ण होने के पश्चात् एक निजी कम्पनी में कार्यरत थीं। इनकी शादी तय हो गई एवं कुल मांगलिक कार्य होने के पश्चात् इनके पिता श्री सुरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव को कार्यालय में हृदयघात होने के कारण इनका स्वर्गवास हो गया। इस घटना से दोंनों परिवार को अत्यधिक विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। कुछ समय के अन्तराल के पश्चात् दिनांक 18.11.2000 में यह शुभ संयोग बना और इसी तिथि को दाम्पत्य जीवन वाराणसी के गणेशबाग मैरेज हाल में इनका विवाह सम्पन्न हुआ। इस शादी को भगवान की कृपा से सकुशल पूर्ण होनेपर दिनांक 22.11.2000 को आजमगढ़ के गरूण होटल से एक प्रिती भोज का आयोजन कर सभी भाई, बन्धू,

सगे–सम्बन्धियों से वर–वधु को आर्शीवाद भी प्राप्त हुआ। अश्विन कुमार श्रीवास्तव अपने कार्य निष्ठा और त्याग एवं व्यवसाइक निपुणता के कारण दिन–प्रतिदिन आगे बढ़ते गये और (CMC) कम्पनी कम्पनी के डायरेक्टर पद पर कार्य करते रहे। एवं पूर्ण अनुभव प्राप्त करके पश्चात् अपने कार्य को और विस्तार देने के लिये डायरेक्टर पद को त्याग कर अपना निजि व्यवसाय आरम्भ किया और स्वयं को 5 कम्पनी के डायरेक्टर होकर नोएडा में अपने व्यवसाय का कार्यालय स्थापित कर लिया है एवं देश विदेश में व्यवसाय कर रहे हैं। साथ ही साथ अपना निजि फ्लैट लेकर वहीं पर स्थाई निवास बना लिये हैं। अश्विन कुमार की जीवन संगनी श्री मती शिविका श्रीवास्तवा अपना स्वयं कोरियो ग्राफर का कार्य करती हैं साथ ही साथ शिक्षण संस्थान का संचालन भी करती हैं ये भी अपना सभी व्यवसाय नोएडा में ही स्थापित की हैं। इस प्रकार पति–पत्नी अपने निजी व्यवसाय एवं व्यवस्था में व्यस्त हैं। इस दाम्पत्य जीवन से एक पुत्र की प्राप्ति हुई है।

स्वयम् श्रीवास्तव
पुत्र
अश्विन कुमार श्रीवास्वत

स्वयम् श्रीवास्तव का जन्म १८.०२ २००५ को मोहल्ला सिविल लाइन के एक निजि अस्पताल जनपद आजमगढ़ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नोएडा से प्रारम्भ हुई और वर्तमान समय में (B.B.A.) की शिक्षा उत्त्कल विश्वविद्यालय ओडिसा से करते हुए क्रिकेट के दुनियाँ में अपना भाग्य अजमा रहे हैं। (इस समय अन्डर–23–ओडिसा टीम के सदस्य है।)

रचना श्रीवास्तवा
पुत्री
शिवशंकर श्रीवास्तव

शिवशंकर श्रीवास्तव की प्रथम पुत्री रचना श्रीवास्तवा का जन्म 01.06.1971 को जनपद वाराणसी में हुआ इनकी शिक्षा राजकीय विद्यालय आजमगढ़ से प्रारम्भ होकर डी.ए.वी. महाविद्यालय से स्नातकोत्तर की दो विषयों से उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन अनुप कुमार श्रीवास्तव पुत्र शतीस चन्द्र श्रीवास्तव ग्राम रघुपूर जनपद आजमगढ़ के साथ 29.11.1993 को संम्पन्न हुआ जो तत्कालीन समय में कोल माइन्स में इंजीनियर के पद पर कार्यरत है इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ति हुई जो इस प्रकार है।

1.आर्यत अनुप कुमार श्रीवास्तव पुत्र अनुप कुमार श्रीवास्तव

2.शास्वत अनुप कुमार श्रीवास्तव पुत्र अनुप कुमार श्रीवास्तव

आर्यत अनुप
पुत्र
अनुप कुमार श्रीवास्तव

आर्यत अनुप श्रीवास्तव का जन्म सन् 19.06.1995 में जनपद आजमगढ़ में हुआ इनकी शिक्षा छत्तीसगढ़ से शुरु होकर मध्य प्रदेश के इन्जीनियरिंग कालेज से बी.टेक. करने के पश्चात् वहु राष्ट्रीय आई.टी. कम्पनी में कार्यरत है और उनका दाम्पत्य जीवन दिनांक–20/11/2024 को प्राची श्रीवास्तव के साथ प्रारम्भ हो गया और वर्तमान समय में दोनो बैंगलोर में आई0टी0 कम्पनी में कार्य कर रहे है।

शास्वत अनुप
पुत्र
अनुप कुमार श्रीवास्तव

शास्वत अनुप श्रीवास्तव का जन्म सन् 19.08.1998 में जनपद कोरवा राज्य के छत्तीसगढ़ में हुआ। इनकी भी शिक्षा छत्तीसगढ़ से प्रारम्भ होकर बी. टेक. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आई.टी. बंग्लौर कम्पनी में कार्यरत है तथा इनका भी दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ नहीं हुआ है।

गुरू का सानिध्य

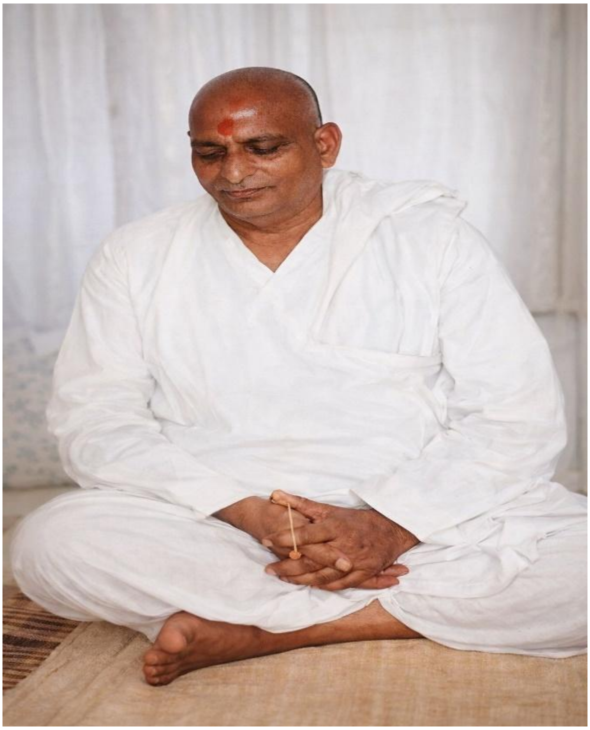

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

स्व0 श्री राधेश्याम तिवारी जी

नामः—स्व0 श्री राधेश्याम तिवारी जी

गुरू जी से मुलाकात श्री अगम प्रसाद श्रीवास्तव के साथ हुई जो विद्युत वितरण खण्ड प्रथम में वरिष्ठ लिपिक के पद पर कार्यरत थे। अगम प्रसाद बहुत ही धर्मनिष्ठ एवं सत्यवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे उन्हीं के द्वारा हमारी मुलाकात विद्युत वितरण खण्ड प्रथम आजमगढ़ के लेखाकार के कार्यकाल, में हुई जो अपने किसी कार्यवस आये हुये थे। तत्कालीन समय में विद्युत विभाग के लिपिक वर्ग के अध्यक्ष पद पर बब्बू अवस्थी उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष थे और उन्हीं के मार्ग दर्शन में विद्युत कर्मचारी लिपिक वर्ग का आन्दोलन चल रहा था। उसी समय राज्य विद्युत परिशद के वर्तमान अध्यक्ष पद पर श्री वी0 एन0 बालीगा कार्यरत थे। इस आन्दोलन के समाप्त करने के उद्येश्य से राज्य विद्युत परिषद के अध्यक्ष अपने कक्ष से जो शक्ति भवन के सातवें तल था उतर कर आये और आन्दोलन करने वालों के सामने आकर संबोधन करना चाहे तो आन्दोलन कर रहे कर्मचारीयों ने वालीगा वापस जाओ के नारे के गुजने लगे इसके कारण केवल यह कह कर चले गये कि यदि स्केल रू0 150 लेना चाहते हो तो आकर बात कर सकते हो। यह मान्य नहीं है तो यह भी अब नहीं मिलेगी जो चाहे करो। इसका उत्तर गुरू जी बहुत ही साधारण रूप से दिया कि आपलोग का आधार ही भटक गया है इस लिये सम्भावना नहीं है और यह सत्य साबित हुआ।

गुरू की महिमा एवं आर्शीवाद

उपरोक्त घटना के पश्चात् मैं शिवशंकर श्रीवास्तव प्रायः गुरू जी से मिलना रहता था और अपनी समस्या या संदेह को साझा करता रहता था। इसी बीच सन् 1974 – 1975 में एक अशंकालीन डिप्लोमा कोर्स का प्राविधान आया कि जो कर्मचारी 3 वर्ष के कोर्स को 4 वर्ष में विभागीय अनुमति के आधार पर डिप्लोमा करना चाहता है तो कर सकता है। इस पर मैनें गुरू जी से राय लिया तो उनका कहना था कि इसमें आप अवश्य ही सफल होगें और आप कर सकते हैं।

इस पर मेरा उत्साह और बढ़ गया और अपने उच्च अधिकारी को आवेदन किया तो आदेश भी मिल गया। हमारे साथ कई लोगों ने आवेदन किया कुछ को स्वीकृति मिली और कुछ लोगो को नही भी मिली।

कुछ समय पश्चात् कुछ लोंगो की स्वीकृति के पश्चात् भी स्वीकृति वापस भी ले ली गई और कुछ की समाप्त कर दी गई। लेकिन ईश्वर एवं गुरू की कृपा से मेंरी स्वीकृति समाप्त नहीं हुई और मैं चार साल मे ही यह डिप्लोमा उत्तीर्ण भी कर लिया।

कुछ समय पश्चात् मैने गुरू जी से विचार विमर्स किया तो उनका उत्तर था कि अभी विलम्ब है लेकिन तुम्हारा भाग्य उधर अवश्य ले जायेगा और सन् 1985 में मुझे सफलता मिली साथ ही साथ यह भी कहा था कि समय मुल्यवान है यह कहकर गुरू जी ने आर्शीवाद दिया और चुप हो गये। इसके साथ ही साथ उनका प्रयास भी अत्यधिक था क्योंकि शक्ति भवन लखनऊ मुख्यालय में इनके जानने वाले उच्च अधिकारी बहुत थे और उनलोगों से बहुत अच्छे सम्बन्ध भी थे।

सफलता मिलने के पश्चात् हमारी नियुक्ति एवं ट्रेनिग ओवरा पावर हाऊस के टी0टी0आई0 ट्रेनिग सेन्टर पर एक वर्ष के लिये हुई लेकिन कर्मचारियों के कमी के कारण परीक्षा 6 माह में ही कराकर 200 मेगावाट के यूनिट में सभी की नियुक्ति हो गई लेकिन इस परीक्षा को मैं पास नहीं कर सका इस कारण मेरी नियुक्ति नहीं हो सकी और इसीबीच मेरी मुलाकात एक बंगाली ठीकेदार से हुई जो हमलोंगो के यूनिट में ठीकेदारी करता था। उसने कहा कि आप निराश मत होइये आप उत्तीर्ण है। केवल इसके लिये आप को एक कार्य करना है कि आप घर जाइये और घर से लौट कर आ जाइये तो आप का नाम परीक्षा फल के दूसरी सूची में अपने आप आ जायेगा क्योंकि आप के हस्ताक्षर में कुछ गड़बड़ी है आप उसे सुधार ले। आप अवश्य उत्तीर्ण हो जायेगें और भविष्य के लिये हमेशा अपने पास आसमानी रंग की रूमाल पास में अवश्य ही रखा करें आप को हमेशा कामयाबी मिलती रहेगी। उस बंगाली ठीकेदार के कहने पर मैं यह कार्य किया और जब मैं घर से वापस गया तो मेंरा परीक्षाफल आ चुका था साथ ही साथ उसी परीक्षाफल के साथ नियुक्ति का पत्र भी ओबरा के 200 मेगावाट यूनिट के लिये था। जब मैं नियुक्ति पत्र देख लिया तो बिना अपना कार्य भार ग्रहण किये ही घर चला आया क्योकि मैं ओवरा थर्मल पावर में कार्य नहीं करना चाहता था।

मेंरे सभी प्रयासों के पश्चात् भी ओवरा पावर हाउस से निकलने का कोई रास्ता नहीं मिल सका। और लगभग 6 माह व्यतित हो गया, इस कार्य के

लिए भाग दौड़ तथा लखनऊ जाने आने में अत्यधिक व्यय होने के कारण आर्थिक स्थिति भी खराब होने लगी थी तब मैने पिता जी से कहा कि आप कम से कम रू0 500 का इन्तजाम कर दीजिएगा जिसे में वापस कर दूँगा। पिता जी रू0500 वसन्तपुर के मामी से लेकर मुझे दिया और कहा कि जब हो जायेगा तो वापस कर देना। इसीबीच और समय बीत गया तो लगभग 8 माह बाद मैनें सोचा और निश्चय किया कि ओवरा पावर हाउस मे ज्वाइन ही कर लिया जाय तो उचित होगा। इसी सोच के साथ गुरू से एक बार विचार – विमर्स कर लिया जाये तो अच्छा रहेगा।

यही सोचकर मैं गुरू जी के यहां गया और पुरा विवरण के साथ अपनी समस्या उनके सामने रखा और निवेदन किया कि आप मेरा मार्ग दर्शन किजिए। तब गुरू जी (राधेश्याम जी) ने कहा कि मेरा आर्शीवाद तुम्होरे साथ है। मेरे कहने से एक बार और प्रयास करो सफलता अवश्य मिलनी चाहिए क्योंकि आप का कठीन समय समाप्त हो गया है और अच्छे दिन का समय आ गया है। आप प्रयास करो। गुरू जी के कहने पर श्री अवध बिहारी पाण्डे जो उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिशद के संयुक्त मोर्चा के संगठन के महामंत्री से मिला और उन्हीं के प्रयास से ही मेरा स्थानान्तरण 200 मेगावाट यूनिट ओवरा से टांडा थर्मल पावर प्रोजक्ट हो गया। श्री अवध विहारी पाण्डे जी के प्रयास से जो तत्कालीन समय में इस प्रोजेक्ट के प्रबन्धक ;फजलु रहमान ने ओवरा से बिना कार्यमुक्त हुए अपने यहा कार्यभार ;थर्मल पावर प्रोजेक्त टांडा में ग्रहण करा लिया। साथ ही साथ उन्हीं से स्वीकृति प्रदान कराकर सभी छुट्टी को मेडिकल आधार पर स्वीकृति भी प्रदान कराया और एक साथ सभी रूके हुए वेतन को दिला दिया । यह गुरू जी का ही प्रयास रहा जो हो सका। पैसा मिलते ही मैं घर आकर मामी (बसन्पुर) को हरिशंकर श्रीवास्तव जो हमारे छोटे भाई है के हाथ में देकर मामी को भेजवा दिया, क्योंकि उस समय हरिशंकर के यहां ही लखनऊ में मामी रहती थी। और इस प्रकार आर्थीक संकट भी समाप्त हो गया और पुनः यथास्थिति बरकार हो गयी। मैं जब बाहर से घर आता था तो गुरू जी से मिलने अवश्य उनके घर पर जाया करता था। मैं उनके निवास पर 1986 – 1987 में मिलने गया तो उन्होने बताया कि जो आपलोग मन्दिर का निर्माण करा रहे हो उसका उपरी हिस्सा टेढ़ा हो गया है यह वास्तु दोष होगा, इस लिये तुम जाकर उसे सही दिशा में करा दो नही ंतो आगे दिक्कत बढ़ जायेगी, तो मै घर आकर देखा तो

मन्दिर का गुबंज टेढ़ा हो गया है उसे फिर से तोड़कर सही ढ़ग से बनवाया गया।

एक बार बबलू अर्थात अनित कुमार श्रीवास्तव पुत्र गिरजाशंकर श्रीवास्तव घर के मन्दिर के पास बैठे हुए थे उसी समय किसी अज्ञात शक्ति द्वारा एक घटना घटी और वह सुस्त एवं बालकों जैसा व्यवहार करने लगे। गुरू जी को आजमगढ़ में अनित कुमार श्रीवास्तव के मकान पर बुलाया गया उन्होने बताया कि किसी अज्ञात शक्ति का प्रयोग हो गया है इसे ठीक करने के लिए महामृतुन्य मंत्र का जाप एवं रूद्राभिषेक का अनुष्ठान करा कर इसे दुर किया जा सकता है और गुरू जी द्वारा यह कार्य किया गया और अनित कुमार श्रीवास्तव पूर्व स्थिति में आ गये।

चिलकहर मन्दिर का निर्माण भी गुरू जी के ही मार्ग दर्शन में किया गया उन्ही के कथनानुसार सभी देवाताओं की प्राणप्रतिष्ठा एवं स्थान दिया गया और सभी घर के लोगों से कहा गया कि जो चाहे अपने इच्छा से अपने–अपने इष्ट देव की प्रतिमा लाये और यह बताये की कौन सी प्रतिमा कौन ला रहा है ताकि दूसरी प्रतिमा वही न हो सके। इस तरह से सबकी प्रतिमा भी लग जायेगी और सभी का मनोरथ भी पुरा हो जायेगा। इस प्रकार मन्दिर का निर्माण हो सका। इसी बीच मेरे अर्थात शिवशंकर श्रीवास्तत के मन में विचार आया कि मन्दिर के अन्दर ही घर के अन्दर जो दो ब्रम्ह की पुजा हुआ करती है। उन्हें भी मन्दिर में स्थान दे दिया जाय। गुरू से विचार विमर्स किया गया तो गुरू जी ने बताया कि मन्दिर में स्थान दिया जा सकता है। उन्हें भी जिनका नाम धनी ब्रम्ह एवं डमरू ब्रम्ह है उनको भी मन्दिर में दक्षिण तरफ स्थान गुरू जी के ही मार्ग दर्शन में, और जैसा विधि बताया उस प्रकार किया गया । जिससे घर के उत्तर एवं पश्चिम का घर भी खाली हो गया और मन्दिर में उनकी पुजा अर्चना भी प्रतिदिन होने लगी जो एक उत्तम कार्य भी गुरू जी द्वारा संपन्न हुआ।

रचना श्रीवास्तवा पुत्री शिवशंकर श्रीवास्तव की शादी गुरू जी के ही सानिध्य में जनपद आजमगढ़ के मुहल्ला तकिया के गेस्ट हाउस में सन् 1993 में कार्तिक पुर्णीमा के दिन 29.11.1993 को सम्पन्न हुई। अश्विन कुमार श्रीवास्तव पुत्र शिवशंकर श्रीवास्तव की भी शादी जनपद वाराणसी में 18 नवम्बर 2000 में गुरू जी के ही मार्ग दर्शन में ही स्वयं गुरूजी

उपस्थित होकर सम्पन्न कराया। इस प्रकार प्रत्येक कार्य में श्री राधेश्याम तिवारी जी के दिशा निर्देशन एवं आर्शीवाद प्राप्त होता रहा है जो एक अत्यन्त सौभाग्य एवं आपसी सम्बन्ध का दोतक है। ईश्वर की महान कृपा से मेरे पुत्र अश्वनी कुमार के पुत्र रत्न की प्राप्ति 18 फरवरी 2005 को हुआ। इनके जन्म उत्सव पर रामायण पाठ के साथ प्रतीभोज का भी आयोजन किया गया था जिसमें सभी लोगों को आमत्रित किया गया था जिसमें गुरू जी को भी आमन्त्रित किया गया था। और उन्हीं के मार्ग दर्शन में कुछ पंडितों को बुलाया गया था और उन्ही पंडितो के द्वारा ही रामायण का पाठ कराया गया।

और इसी प्रितभोज में गुरू जी से विचार विमर्श भी किया गया कि गांव में स्कूल खोलना चाहते है आप की क्या राय है? उनका उत्तर था कार्य उत्तम है लेकिन अवरोध का सामना करना पड़ेगा और संभवतह यह बन्द भी करना पड़ सकता है। फिर भी विचार अच्छा है। यदि संयम से काम लिया जाय तो संभव है यह स्कूल चल जायेगा लेकिन सावधान रहना और अधिक विवाद होने पर तुरन्त बन्द कर देना और अच्छे काम के लिये कुछ व्यय करना उचित होता है।

आयोजन के पश्चात् बड़े भाई रमाशंकर श्रीवास्तव जी के पास उपरोक्त विचार के लिये रखा और उन्होंने उत्तर दिया अच्छा है। तुमलोग घर से जुड़ भी जाओगे और एक अच्छे कार्य की शुरूआत भी होगी। घर के बाहर एक कच्चा कमरा था जिसे बगला के नाम से पुकारते हैं और उसी के आगे बरामदा भी है। उन दोनों को साफ कराकर तथा थोड़ा बहुत जो खराब हो गया था उसे ठीक कराकर कक्षा 5 तक का पठन पाठन प्रारम्भ किया और मन्दिर के पास एक कमरा पक्का बना हुआ था जिसमें आफिस बना दिया गया और पाच अध्यापक तथा रमेश पान्डे जी को प्रधानाचार्य के पद पर रख कर स्कूल चलने लगा जिसका नाम सांभ्भवी शिक्षा निकेतन रखा गया। चिलकहर गांव में और स्कूल थे इसलिये गांव के लोग अवरोध न पैदा न करें इसके लिए स्कूल का रजिस्ट्रेशन सन् 2005 में ही करा दिया गया और स्कूल अच्छी प्रकार से चलने लगा।

अगले वर्ष बच्चों की अच्छी संख्या हो जाने पर मन में विचार आया कि क्यो न इसे आगे बढ़ाया जाय क्योंकि अवरोध सामने नहीं आया है। सभीलोग चाहते भी हैं। इस कारण आगे बढ़ाने के लिये कमरों की

आवश्यकता होगी। इसके लिये घर के उत्तर तरफ काफी जमीन खाली पड़ी थी जिसमें आधा हिस्सा हमारे पांच भाई और आधा हिस्सा हमारे

चचेरे भाई का था। उसी आधे हिस्से में चार कमरा बनाया गया और अगले सत्र से कक्षा 8 (आठ) तक पढ़ाई शुरू की गई और बच्चे भी पर्याप्त मात्रा में हो गये। सभी विद्यार्थीयों के लिये मेज – कुर्सी डेंस्क एवं बोर्ड की पूर्ण व्यवस्था करके स्कूल को आधुनिक रूप दे दिया गया।

इसके पश्चात् हमारे बड़े भाई रमाशंकर जी के मनोस्थिति में परिवर्तन आ गया और कहे कि बगला के ओसारे (बरामदा) का मुख दक्षीण दिशा में था। उसे बन्द करने को कहा वह बंद भी कर दिया गया और उसका मुख पुरब दिशा की तरफ कर दिया गया। इसके पश्चात आफिस का कमरा भी खाली करने के लिये कहा की आने जाने वालों के लिये दिक्कत होती है। उसे खाली कर दो, उसे भी खाली कर किया गया फिर उन्होंने घर के नाली को जहां विद्यालय के लिये नया कमरा बना था उसके सामने गढ्ढे खोद कर नाली का पानी बहाने लगे। तो इसपर मैनें कहा तो उन्होनें कहा कि घर के पानी का निकाश यही होगा ? और मैं अपनी जमीन का एक इंच नहीं दूँगा चाहे तुम कितना भी पैसादोगे, फिर भी नहीं दूँगा। इसपर मैने गुरू जी से विचार विमर्श किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि स्कूल अवरोध और बुराइयों से घिर गया है अच्छा होगा कि तुम स्कूल बन्द कर दो। तुम्हारे लिये अच्छा होगा और स्कूल को इस परिस्थित में मजबुरन बन्द करना पडा। जिसमें आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा। इस प्रकार गुरू जी (राशेश्याम तिवारी) की महान कृपा हमारे और हमारे परिवार पर हमेशा बनी रही। इस संम्बन्ध में मैं इतना कर सकता हूँ कि जिस भी कार्य के लिये मैनें और मेंरे परिवार के लोगों ने गुरू जी से सलाह लिया वह बिना स्वार्थ के उसका उपाय और निस्तारण किया करते थे।

बड़े दुख के साथ और दुखी मन से यह लिख रहा हूँ कि उनका सानिध्य हमारे परिवार के प्रति हमेशा बना रहा तथा उनका स्वर्गवास 2017 ई0 में हो गया और गुरू जी गुरूलोक में स्थापित हो गये। उन्हें अपने एवं स–परिवार के साथ श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सदा अपने शरण में रखें। उनकी आत्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे परिवार के प्रति दया दृष्टि बनाये रखें।

हरिशंकर श्रीवास्तव
पुत्र
गोरखनाथ श्रीवास्तव

हरिशंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव के चतुर्थ पुत्र हैं। इनका जन्म सवत् 2003 अर्थात सन् 1947 में हुआ। इनकी शिक्षा जनपद बलिया से प्रारम्भ हुई और इण्टरमिडिएट उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्होने बी0टेक की उपधि दक्षिण भारत से प्राप्त करने के उपरान्त इनकी नियुक्ति दूरसंचार विभाग के अवर अभियन्ता के पद पर हो गई। इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति पुष्पा श्रीवास्तवा पुत्री हृदय नरायन श्रीवास्तव ग्राम मीठेपार जनपद जौनपुर से दिनांक 6 जून 1973 में हुई और अपने कार्य कुशलता से डी0टी0 के पद से सेवानिवृत्त हो गये। इन्होंने अपना निजी आवास लखनऊ उत्तर–प्रदेश में बनाकर सपरिवार वहीं निवास कर रहे हैं। इनके दाम्पत्य जीवन से तीन सन्तान की प्राप्ति हुई जो इस प्रकार है।

अमित कुमार श्रीवास्तव
पुत्र
हरिशंकर श्रीवास्तव

1. अमित कुमार श्रीवास्तव पुत्र हरिशंकर श्रीवास्तव इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति निलू श्रीवास्तवा के साथ सम्पन्न हुई। और इनसे तीन संन्तान की प्राप्ति हुई।

आशीष **कुमार श्रीवास्तव**
पुत्र
हरिशंकर श्रीवास्तव

---

2. आशीष कुमार श्रीवास्तव पुत्र हरिशंकर श्रीवास्तव इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति रचना श्रीवास्तवा कें साथ सम्पन्न हुई। वर्तमान समय इन्हे एक सन्तान की प्राप्ति हुई

शालीनी श्रीवास्तवा
पुत्री
हरिशंकर श्रीवास्तव

---

3. **शालीनी श्रीवास्तवा पुत्री हरिषंकर श्रीवास्तव** की शादी राकेश श्रीवास्तव के साथ सम्पन्न हुई। इस दाम्पत्य जीवन से दो सन्तानें उत्पन्न हुयी जो शिक्षारत है।

कृपाशंकर श्रीवास्तव
पुत्र
गोरखनाथ श्रीवास्तव

कृपाशंकर श्रीवास्तव पुत्र गोरखनाथ श्रीवास्तव के पांचवे पुत्र का जन्म सावन माह के नागपंचमी के दिन सवंत् 2007 अर्थात 1951 के जुलाई माह के अन्त में हुआ इनकी शिक्षा ग्राम चिलकहर जनपद बलिया में हुआ तत्पश्चात् इनकी नियुक्ति राज्य विद्युत परिशद उत्तर–प्रदेश जनपद आजमगढ़ में हो गई। जिसके कारण इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमति छाया श्रीवास्तवा पुत्री फत्तेबहादुर लाल श्रीवास्तव ग्राम इन्दौली जनपद बलिया के साथ सम्पन्न हो गई। इनके दाम्पत्य जीवन से दो सन्तान की प्राप्ति हुई जो इस प्रकार है।

1. अनामिका श्रीवास्तवा पुत्री कृपा शंकर श्रीवास्तव
2. अभिषेक कुमार श्रीवास्तव पुत्र कृपा शंकर श्रीवास्तव

अपने जीवन काल का पूर्ण समय राज्य विद्युत परिशद में व्यतित कर सेवा निवृत्त हो गये। इसके पश्चात् अपने बच्चों के साथ प्रयागराज अर्थात इलाहाबाद में निवास कर रहे हैं और अपना सुखमय दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

अनामिका श्रीवास्तवा
पुत्री
कृपाशंकर श्रीवास्तव

अनामिका श्रीवास्तवा पुत्री कृपाशंकर श्रीवास्तव का जन्म 20.01.1978 में हुआ। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उच्च न्यायालय प्रयागराज में एडोकेट के रूप में सेवा प्रदान कर रही हैं। तत्पश्चात् इनका दाम्पत्य जीवन अरविन्द कुमार ग्राम भिन्डारी जनपद देवरिया के साथ सम्पन्न हुई और ये अपना योगदान पावर हाऊस ओबरा में दे रहे हैं। इनके दाम्पत्य जीवन से अभी कोई सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई है।

अभिषेक श्रीवास्तव
पुत्र
कृपाशंकर श्रीवास्तव

अभिषेक श्रीवास्तव पुत्र कृपाशंकर श्रीवास्तव के द्वितीय सन्तान है। इनका जन्म 22 अगस्त 1975 में हुआ और इन्होंने अपनी पुरी शिक्षा एवं पठन–पाठन आजमगढ़ से ही प्राप्त किया है ये वकील की उपाधी प्राप्त करने के पश्चात् कुछ दिनों तक सिविल न्यायालय, आजमगढ़ एडोकेट के रूप में अपना योगदान दिया, फिर अपना योगदान प्रयागराज के उच्चन्यायालय में एडोकेट के रूप में दे रहे हैं। इनका दाम्पत्य जीवन श्रीमती प्रियंका श्रीवास्तवा पुत्री जे0पी0 लाल श्रीवास्तव ग्राम जहानागंज, जनपद आजमगढ़ के साथ सन् 08–12–2010 में सम्पन्न हुई। तत् पश्चात् इनकी पत्नी भी वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर यह भी प्रयागराज में उच्चन्यायालय में एडोकेट के रूप में अपना सेवा प्रदान कर रही हैं। इस दाम्पत्य जीवन से एक सन्तान की प्राप्ति हुई है जो इस प्रकार है।

अमोलिक श्रीवास्तव
पुत्र
अभिषेक श्रीवास्तव

इस दाम्पत्य जीवन से दिनांक–जन्म 16 मार्च 2013 को एक सन्तान की उत्पत्ति हुयी जो अपने माता पिता के साथ प्रयागराज में शिक्षा ग्रहण कर रहा है।

मानव जीवन से परमेष्वर क्या चहता है।

1— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अपने प्यार को पर परलक्षित करे और मुझसे प्यार करना सीखे।

2— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अपने संसार को बेहतर से बेहत्तर बनाये और उसे चलाये ।

3— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अपने साथ रहे और स्वर्ग में अपना स्थान बनायें

4— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अच्छा से अच्छा कर्म करे और मोक्ष को जायें।

5— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अपनी अच्छाई दिखावे और अपना उज्जवल भविष्य का निर्माण करे।

6— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव अपने को सरल बनाये और अपने द्विव्य स्वभाव को एक दूसरे से साझा करे तथा सर्व हीत में कर्म करे।

7— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव सृष्टि जगत में विस्तार करे और अपने अन्दर दिव्य शक्तियों को पहचाने।

8— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव जगत के चमतकार देखे और समझबूझ कर अपने शक्तियों को पहचाने ।

9— मैं परमेश्वर चाहता हूॅ कि मानव परमेश्वर की शक्ति को पहचाने और उसका आत्म साथ कर अपना उज्जवल भविष्य बनाते हुये मोक्ष प्राप्त करे ।

रहस्यम चिन्तन

सनातन धर्म के ऋषि, मुनीयों का यह मानना है कि मानव को परमात्तमा नहीं बनाया है यदि परमात्मा ने बनाया होता तो मानव कभी मरता ही नहीं। मानव को काल अर्थात ब्रम्ह ने बनाया है। और अब शरीर से शरीर आप ही साकार अवस्था में बना रहे है ये शरीर बनाना आप का उद्देश्य था ब्रम्ह को पैदा करना भी आप का उद्देश्य था क्यों कि आप ही इस शरीर में निराकार ब्रम्ह अवस्था में है और परमात्मा अवस्था में रह रहे है जहा मर्जी / इच्छा हो वहा आ जा सकते है।

बस भेद पता होना चाहिये इसलिये सबसे भ्रमित अवस्था आप की है और ये जीन अवस्था में शरीर है और तो आप का एक ही उद्देश्य होना चाहिये कि आप अपने निज घर अर्थात परमात्तमा अवस्था में लौट जायें। और यही मनुष्य जीवन एवं जन्म का सही उद्देश्य होना चाहिये।

नोटः–अन्यथा मानव योनी छोड़कर सभी योनी भटकने वाली है और यही सत्य है।

मानव जीवन का लक्ष्य

भगवत गीता के अनुसार परमेश्वर ने मानव को बुद्धि और विवेक दोनो दिया है जो दूसरे प्राणियों को प्राप्त नहीं है। मानव जीवन की पूर्णता और सफलता अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति कर सके ।

परमेश्वर बिना कर्म के किसी को भी अच्छा या बुरा फल नहीं दे सकता है इसलिये अपने जगत को कर्म के आधार पर ही केन्द्रीत करके बनाया। फिर मनुष्य आदि का शरीर बनाकर उसमें आत्मा को प्रविष्ट किया जिससे वह कर्म करे और बन कर मानव जीवन के उद्देश्य (मोक्ष) प्राप्त कर सके।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि शत प्रतिशत दुखों से छुटकारा और शत प्रतिशत सुख प्राप्त करना है। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो उपरोक्त बात से सहमत न हो।

मोक्ष में हम जन्म और मृत्यु से छूट जायेगें और वहुत लम्बे काल तक परमेश्वर के साथ रहकर आनन्द लेंगे और जगत ब्रम्हाड़ में घूमते–फिरते रहेंगे।

शरीर तो बस एक साधन मात्र है और आत्मा तो अमर–अजर है सदा से है और सदा रहेगी। कर्मों के आधार पर हमें ये शरीर मानव पशु पक्षी किड़े–मकोड़ आदि मिलते रहेंगे जब तक की मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती है।

शब्द की परिभाषा

शब्द (अक्षरो) के सार्थक समूह को जिसका कोई अर्थ हो शब्द कहते है अर्थात एक या एक से अधिक वर्णों के आपसी मेल से बनी हुई स्वतन्त्र और सार्थक इकाई को शब्द कहाँ जाता है।

भारतीय संस्कृत में शब्द को ब्रम्ह कहा जाता है और वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है एंव किसी भाषा की मूल साधन इकाई ही शब्द है ।

सनातन धर्म में–शब्द का महत्व

मन से उपर बुद्धि है लेकिन जब शब्द की बात हम कहते है तो शब्द ही सबसे उपर है क्योंकि मन को चंचल, चल, अचल, स्थिर, विचलित भी शब्द ही करते है शब्द को ठहराव भाव में लाते भी शब्द है।

पुरा ब्रम्हाड़ शब्द मय है शब्द के अलावा कुछ भी नहीं है यदि शब्द न हो तो यह संसार कैसा होता। और शब्दो की यात्रा शब्दों से शुरू होती है और निशब्द होने पर रुक जाती है।

शब्द क्या है

1. "जगत मिथ्या ब्रम्ह सत्य"
2. परम अक्षर शब्द ओमकार ही परमेश्वर है।
3. मानव शरीर शब्दों से ओत प्रोत है।
4. मानव जीवन शब्द निर्मित है।
5. संग्रह केवल अच्छे शब्दों का हो अनरगल शब्द व्यर्थ है।

शब्दों के द्वारा ही जीवन उलझता और सुलझता तो है और अपने शब्दों को जीवन में नापतोल कर बोलना उच्चारण करना चाहिये जिससे की आप के शब्दो का मोल हो सके। क्योंकि शब्द ही ब्रम्ह है।

शब्दों का प्रभाव

शब्द का अपना कोई आकार नही होता है लेकिन शब्दो को हमारे विचारों की मुद्रा कहा जाता है क्योकिं कि मुद्रा के समान ही हमारे शब्दो और विचारों के दूसरो के सामने प्रकट/व्यक्त करने के साथ ही आकाश तत्व में कभी विलिन नहीं होता है। और हमेशा के लिये आकाश तत्व (वायुमण्डल) में अमर हो जाता है।

मानव के मन पर शब्दों का वड़ा व्यापक प्रभाव पड़ता है शब्द हमारे मानसिक पटल का दर्पण माना जाता है मानव की पहचान उसके अन्त करण के निकले शब्दों से होती है शब्द अदृश्य होते हुये भी बड़ी सशक्तता के साथ श्रोता को प्रभावित करते है शब्दों में ही मानव के परिवारिक सामाजिक समन्धों का निर्माण तथा विनाश निहित है।

शब्दों के सुखद् प्रभाव	शब्दों के दुष्प्रभाव
1– ज्ञान का स्त्रोत	1 अपमान जनक शब्द
2– समझ का स्त्रोत	2– गलत जानकारी देना
3– अभिव्यक्तिका स्त्रोत	3– अंहकार पूर्ण शब्द/भाषा
4 –संवाद का स्त्रोत	4– भेदभाव पूर्ण शब्द/भाषा
5– रचनात्मकता का स्त्रोत	5– भावनात्मक पर प्रहार
6– स्वजन का स्त्रोत	6– रिश्तो में तनाव/नुकसान
7– सामाजिक नुकसान	7– सामाजिक कुप्रभाव
8– व्यवसाय को नुकसान	8– व्यवसाय में कटुता/व्यवधान

शब्दों को सकारात्मक और नकरात्मकता के तराजू रख विचार करके देखे अपने आप में अन्तर और **उत्तर** समझ में आ जायेगा।

कुल की देवी एंव देवता

दीनदयाल की पत्नी सतीपान कुंवर का गौरव भरा परिचय एवं कुल देवी का सम्मान

दीनदयाल जी के पत्नी ने जब माला को हाथ में लिया और अपने पुत्र से कहा की माला कहां और किस प्रकार मिला यह बताओ क्यों कि यह माला तुम्हारे पिता जी का है। इसका पुरा बृतांत सुनने के पश्चात् उनके मन मन्दिर में अपने पति से इतना अनुराग पैदा हुआ कि उसे लेकर घर से बाहर आ गई और उनके शरीर में अग्नि का संचार होने लगा वहाँ से निकलने पर माँ भगवती जी के मन्दिर के पास पहुँच गई वहां पर एक बड़ा सा तालाब है उसी के किनारे जाकर बैठ गई और कहने लगी मैं यहीं पर सती हो जाऊँगी।

जिस स्थान पर बैठी थी उसी के पास उन्हीं के इच्छा के अनुसार घर एवं परिवार तथा गाँव के लोगों ने चिता सजा कर तैयार कर दी गई। ईश्वर की कृपा अथवा माता के पतिवर्ता का प्रभाव से स्वंय ही चिता में आग प्रज्वलित हो गई और उसी स्थान पर सती हो गई।

इस स्थान पर पहले साकेंतिक चौतरा का निर्माण हुआ तत्पश्चात्। स्थाई स्थान का निर्माण हुआ और वर्तमान समय में एक छोटा सा देवस्थान अर्थात मन्दिर के रूप में स्थापित कर दिया गया है इस सती स्थान पर पूजा–पाठ समयानुसार होता रहता है।

ती जैकुंवर पत्नी हरिदास का जीवन परिचय

सती पानकुंवर पत्नी दीन दयाल दास की एक छोटी बहन जिसका नाम जैकुंर था। उनकी शादी हरिदास के साथ हुई थी। लेकिन अपनी बड़ी बहन से अत्यधिक लगाव होने के कारण अपने पति के साथ बहन के पास आया–जाया करती थी। तथा कुछ दिनों या माह तक दोनों (पती–पत्नी) चिलकहर अपनी बड़ी बहन के साथ समय विताया करते थे। साथ ही साथ हरिदास भी चिलकहर में रहकर यहाँ के कार्यो में हाथ बंटाते रहते थे एवं धर्म कार्य भी किया करते थे।

उदाहरण स्वरूप चिलकहर रेलवे स्टेशन के पश्चिम तरफ एक पक्की सड़क जाती है। उसके पास धर्म कार्य में निष्ठावान हरिदास ने एक पक्का कुंआ बनवाए जो आज भी उन्हीं के नाम से (हरिदास का कुआं) पुकारा जाता है।

चिलकहर के लगाव के कारण एक समय हरिदास अपने पत्नी जैकुंवर के साथ आए हुए थे इसी बीच हरिदास की पत्नी जैकुंर को सर्प ने काट लिया और उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के पहले ही उन्होंने अपने पति हरिदास एवं ग्राम चिलकहर के जनमानस एवं परिवार के सामने ही यह कहकर रोने लगी कि मेरी मृत्यु हो जाएगी, तो मुझे भी मेरी बहन सती पानकुंवर के साथ ही स्थान चाहिए और वही सम्मान मुझे भी चाहिए जो मेरी मेरी बहन को मिला है। अपनी बहन के साथ ही आप लोगों के परिवार तथा संबन्धियों को भी यथासम्भव रक्षा और सहयोग देती रहूँगी।

इस बात को ध्यान में रखकर तथा जैकुवर के निवेदन पर माँ भगवती के स्थान पर सती प्रथा का निर्वहन करते हुए सती पानकुंवर के स्थान पर ही सती जैकुंवर को भी स्थान दे दिया गया।

इस प्रकार इस कुल में दोनों सतीयों का अवतरण हुआ।

सती पानकुंवर पत्नी दीन दयाल दास एवं सती जैकुंवर पत्नी हरिदास की पूजन विधि

किसी भी प्रकार का मांगलिक कार्य इस खान–दान में होता है तो इन सतीयों को सम्मान के साथ पूजन किया जाता है। सती पानकुंवर की पुजा हमारे चारो गांव के सभी व्यक्ति/ खान–दान करता है क्योकि इनका संबन्ध सिधे तौर पर हमारे कुल से है इसलिये इनकी पुजा अर्चना सभीलोग करते हैं।

सती जैकुंवर का इस खान–दान से कोई सिधा संबन्ध नहीं हैं लेकिन अपनी बड़ी बहन से अत्यधिक लगाव होने के कारण साथ ही साथ हमारे परिवार कुल में ही स्वर्गवासी हुई और उनकी इच्छा थी कि मैं अपने बहन के साथ रहूँगी इस कारण यहीं पर सती हो गई इस व्यवस्था ;परंपरा के कारण इनकी पुजा केवल हमारा ही परिवार करता है।

पूजन का समय

वर्ष में बारहो मास के किसी सोमवार एवं शुक्रवार को इनकी पूजा की जा सकती है। तथा इसमें तिथि और समय का ध्यान नहीं रखा जाता है एवं रात्री में निषेध माना जाता है।

पूजन सामग्री

जो भी सामान घर में उपलब्ध हो उसका पकवान बनाकर चढ़ाया जा सकता है। अथवा बाहर के किसी दुकान का मिष्ठान एवं अन्य सामग्री भी चढ़ाया जा सकता है। इसके साथ–साथ अपने सामर्थ्य के अनुसार साड़ी या वस्त्र भी भेंट किया जा सकता है और जो सामान जैसे वस्त्र, मिष्ठान, एवं फल, फूल, दुध, दीप, इत्यादि से पुजन करने के पश्चात् सभी सामग्री को दक्षिणा के साथ अपने उपरोहित को दे दिया जाता है। उसका घर पर उपयोग नहीं किया जाता है। यह पुजा दोंनों सतीयों के लिए किया जाता है। यह मान्यता है कि सती जैकुंवर को सर्प काटने से मृत्यु हुई थी इस कारण वर्ष के नागपंचमी के दिन दूध एवं लावा भी चढ़ाया जाता है। इस प्रकार हमारे कुल की गौरव मयी सती का पूजन का विधान है यदि इसमें किसी कारणवस कोई मुझसे कोई भूल–चूक वर्णन में हो गयी हो तो आप दोंनों माँ स्वरूपा सती हमें क्षमा करेंगी और अपना आर्शीवाद हमेंशा इस परिवार पर बनाये रखेंगी।

बाबा धनी ब्रम्ह का इतिहास

हमारे पूर्वजों की ऐसी मान्यता थी की लड़कीयों की शादी के पश्चात् उनके ससुराल नहीं जाया जाता है इसका मुख्य कारण उस समय (तत्कालीन समय) में आने–जाने का मार्ग बहुत ही कठीन एवं कष्टदायक था क्योंकि सामान्य तया यात्रा पैदल ही करनी पड़ती थी।

उपरोक्त परिस्थिति को ध्यान में रखकर गाँव के ब्राम्हण एवं नाऊ समाज मिलकर शादी–विवाह एवं शादी विवाह का निमत्रण कलेवा इत्यादि इन्हीं लोगों के माध्यम से हुआ करता था साथ ही साथ सभी मांगलिक एवं खास कर निमत्रण तथा इनसे जुड़े हुए सभी संचार कार्य इन्हीं लोगों के माध्यम से हुआ करता था तत्कालीन व्यवस्था में यह एक रोजी –रोटी का माध्यम भी इस विशेष वर्ग के लिये हुआ करता था।

इसी क्रम में चितौड़गढ़ के राजघराने के साथ हमारे पूर्वज योगादास ग्राम खड़ीचा, जोगापुर, जनपद बलिया के जो थे उन्हीं के परिवार में चूड़ामणी दास का जन्म हुआ था। जिनके एक पुत्र इनके पुत्र के बहु के यहां तीज (हरितालिका) ब्रत के पर्व पर ब्राम्हण लाराधनी एवं उनके साथ कुछ कहारों(मजदूरों) के द्वारा सामान लेकर मैके (नैहर) (इस पर्व का कलेवा) पहुँचाने गये और लौटते समय कहारों द्वारा ज्ञात हुआ कि पंडित लाराधनी बाबा की आकाशी बिजली के सम्पर्क में आने से स्वर्गवास हो गया।

तत्कालीन समय के आचार्यो एवं पंडितो द्वारा यह निर्णय लिया गया कि जब चिन्तामणि दास के कार्य के लिए ही पंडित जी का स्वर्गवास हुआ है। इसलिये इनको ब्रम्ह दोष लगेगा इसका निवारण ब्रम्ह के रूप में स्थापना करके इनकी पुजा पाठ द्वारा ही दोनों परिवार को सुख और शान्ति स्थापित हो सकेगी।

इसी आधार पर पंडित लारा धनी को ब्रम्ह के रूप घर में स्थान देकर पुजा–पाठ की व्यवस्था बनाई गई जिसकी पुजा–अर्चना चूडामणी दास का पुरा परिवार धनी ब्रम्ह जी की पुजा करते और इसी कारण ये इस परिवार के पुज्य हैं।

बाबा डमरू ब्रम्ह का इतिहास

डमरू ब्रम्ह के पूर्व धनी ब्रम्ह के इतिहास का वर्णन किया गया उसी मान्यता एवं तत्कालीन समय के अनुसार हमारे पूर्वज दीनदयाल दास के कार्यकाल में डमरू पंडित किसी विशेष कार्य से लड़का अथवा लड़की के ससुराल या मैका भेजा गया था और किसी विशेष अवस्था में इनका भी स्वर्गवास हो गया। तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार इन्हें भी उसी स्थान पर स्थापित कर दिया गया जहाँ लाराधनी ब्रम्ह को स्थापित किया गया था और उसी प्रकार इनकी भी पुजा अर्चना की जाती है।

धनी ब्रम्ह एवं डमरू ब्रम्ह की पुजा विधि एवं तिथि और सामग्री

1. तिथी सावन सुदी सत्तमी (7) के दिन यहाँ चावल चढ़ाया जाता है। इसी क्रम में जो अगला मंगलवार पड़ता है। उस दिन महावीर जी को रोट (ठेकुआ) आटा,गुण या चीनी से बनाकर चढ़ाया जाता है।

2. कुंवारसुदी अष्टमी या नवमी को साठी का चावल अथवा चावल का लड्डू घर पर ही बनाकर चढ़ाया जाता है।
3. मकरसंक्राती (14 जनवरी) के दिन काली तिल का लड्डू एवं चावल, दाल मिलाकर खिचड़ी चढ़ाई जाती है।
4. होली के त्योहार पर बने सभी भोज्य पदार्थ को चढ़ाया जाता है।
5. कार्तिक शुदी एकादशी को कन एवं सुथनी का भोग लगाया जाता है।
6. कुल में किसी लड़के या लड़की के मांगलिक कार्य में धोती एवं मिठाई चढ़ाया जाता है।

नोटः— कुल के किसी अविवाहित लड़की को उनका प्रसाद नहीं खिलाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसी कारण इनका स्वर्गवास हुआ इस कारण प्रसाद का परहेज किया जाता है जिससे इसका दोष किसी लड़की के परिवार में न जा सकें।

बाबा भुवन दास है द्वारा हेम राजब्रम्ह की स्थापना एवं ग्राम चिलकहर को श्राप से मुक्ति के साथ मठिया का निर्माण

किसी महात्मा अथवा सिद्ध महापुरूष के अभिश्राप के कारण हमारे गाँव चिलकहर में अनायास ही आग लग जाया करती थी जिसके कारण सभी ग्राम वासियों की जन–धन, पशुधन की अत्यधिक हानि हो जाया करती थी लेकिन इस आगजनी एवं हानि में अपवाद स्वरूप कुछ घर इस प्रकोप से प्रभावित नहीं होते थे, जिसमें मुख्य रूप जो कबीर पंथी परिवार जैसा हमारा (कुल) परिवार एवं ब्राम्हण परिवार के लोग थे।

उपरोक्त परिस्थित को ध्यान में रखकर गाँव के सम्रान्त जमीदार एवं तालूकेदार लोंगों ने मिलकर यह विचार किया कि कौन सी ऐसी परिस्थित है कि समस्त गाँव इस प्रकोप के प्रभावित है और कुछ परिवार इससे अछुता रह जाता है इसमें कोइ न कोई विशेष कारण अवश्य है। इस विचार को लेकर सभीलोग एक साथ तत्कालीन सिद्ध महा पुरूष बाबा भुवन दास है। के यहां जाकर विनती किया कि इस महा कलंक, अभिशाप जो इस गांव पर अपनी काली छाया से प्रभावित कर रहा है आप कृपा कर के इसका निवारण किसी भी प्रकार करें इसमें जो भी व्यय होगा उसे

पुरागांव मिलकर दूर करने का अथक प्रयास करेगा। आप इससे मुक्ति दिलाने की महती कृपा करें।

बाबा भुवन दास महराज एवं कबीर पन्त के गुरू एक ही साथ मठिया में रहकर पुजा–पाठ एवं नित्य कर्म किया करते थे जो हमारे कुल के गुरू भी थे। समयानुसार धीरे–धीरे आपसी सम्राज्य बना और तत्कालीन समय में एक ही विचारधारा के हो गये थे और यह भी कहा जा सकता है कि दोनों का पंथ भी एक हो गये थे।

बाबा भुवनदास है। ग्रामवासियों का अनुरोध स्वीकार कर एक दिब्य यज्ञ का आयोजन कराया और यह अनुरोध किया कि जो घर इस प्रकोप से प्रभावित है उस घर के लोग इस यज्ञ में आहुत अवश्य दे और विनम्रता के साथ इसमें सहभागी बने जिससे उनका कल्याण हो सके।

ग्राम के सभी निवासी अपना पूर्ण सहयोग देकर इस यज्ञ को पुरा किया तत्पश्चात् बाबा के सानिध्य में हेमराज ब्रम्ह की स्थापना कराई जिसके प्रभाव से श्रापित महात्मा अथवा महापुरूष का अभिशाप हमेशा–हमेशा के लिए समाप्त हो गया जिससे ग्राम के समस्त ग्रामवासी आनन्द पूर्वक रहने लगे।

उपरोक्त उपकार के लिए समस्त ग्रामवासीओं ने मिलकर 25 विद्या जमीन बाबा भुवनदास को समर्पित कर दिया, इसी के साथ मठीया को आवासीय निवास में परिवर्तित करके अलग से पुजास्थल का निर्माण किया गया जिससे बिना व्यवधान के पुजा अर्चना भी आसानी से साधु सन्त एवं गुरू एक साथ कर सकें।

कुछ अन्तराल के पश्चात् दान दी हुई भूमि को बाबा भुवनदास के नाम से भी कर दिया गया। इस प्रसंसा और ख्याति को सुनकर ग्राम जिगिड़सर के निवासी बैद्यनाथ सिंह जो एक जमींदार थे उनकी कोई सन्तान नहीं थी बाबा भुवनदास के पास आये और अपनी व्यथा सुनाकर कहने लगे कि गुरू जी संपत्ति इतनी है और इसको भोगने वाला कोई नहीं है। इस कारण हमलोग बहुत दुखी हैं। हम आप की सेवा करना चाहते हैं। कृपा करके हमारा अनुरोध स्वीकार किजिए जिससे हमारा कल्याण हो सके।

उपरोक्त बात सुनकर बाबा भुवनदास ने आर्शीवाद दिया कि तुम जाओ तुम्हें एक वर्ष के अन्दर ही ईश्वर की कृपा से सन्तान प्राप्त हो जायेगी।

बाबा के कथनानुसार एक वर्ष के अन्दर ही एक सुन्दर सुपुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम करण गुरू की कृपा से कुलदीप रखा गया। मनोवांचित फल प्राप्त होने पर बैद्यनाथ सिंह जी ने 15 बीघा जमीन बाबा को दान स्वरूप प्रदान किया और उनके शिष्य बन गये।

इस प्रकार मठिया पर 40 विघा जमीन हो गई और मठ का कार्य सरलता एंव सुगमता पुर्वक चलने लगा तथा ख्याति के कारण बाहर से भी साधु संत आकर रहने लगे और मठिया के प्रभाव में चार चाँद लग गया।

बाबा भुवन दास महराज के शरीर त्यागने के पश्चात् इस मठ के उत्तराधिकारी इस प्रकार हुये।

1. बाबा चरण दास
2. बाबा सम्हल दास
3. बाबा गोवर्द्धन दास
4. बाबा रामधनी दास
5. बाबा सुखदाम दास

बाबा रामधनी दास के समय से इस मठ का प्रभाव कम होता चला गया और कुचक्र करके उपरोक्त 40 बीघा जमीन को बाबा भुवनदास के स्थान पर समाधि भुवन दास के नाम से करा दिया गया जो आज भी तहसील रसड़ा जनपद बलिया के रजिस्टरी कार्यालय के दस्तावेज में उललब्ध है।

बाबा सुखराम दास ने 60 वर्ष की अवस्था में 16 वर्ष की कन्या जानकी देवी पुत्री विफरानी तिवारी से शादी कर अपनी गृहस्थी बसाली, जिससे मठीया के सम्मान को अत्यधिक हानि और क्षती पहुँची इसके साथ ही साथ मठ की जमीन को अपने नाम से कराकर उसे बेचना भी प्रारम्भ कर दिया और मठिया को घर के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस प्रकार इस मठ का अस्तित्व समाप्त हो गया। और इस प्रकार इस मठ का मान मर्यादा समाप्त कर वाला सुखराम दास भी स्वर्गवासी हो गयी।

विधि का विधान

भगवान श्रीराम का विवाह और राज्याविषेक दोनो शुभ मुहर्त देखकर किये गये थे, फिर भी वैवाहिक जीवन सफल नही हुआ और न राज्याभिषेक भी सफल हो सका। जब मुनि वशिष्ठ से इसका उत्तर मांगा गया तो उन्होंने यह साफ कह दिया किः—

सुनहु भरत भावी प्रबल।
विलखि कहे हूँ मुनिनाथ।।

हानि,लाभ, जीवन, मरण।
यश अपयश विधि हाथ।।

अर्थातः— विधाता ने जो कर्म के अनुसार जो फल भाग्य निर्धारित किया है वो अवश्य ही घटित होगा यह अटल सत्य है निरविवाद भी है।

उदाहरण स्वरूप

भगवान श्री राम चन्द्र जी—

भगवान श्रीराम राम चन्द्र जी ने अपने जीवन काल में अत्यन्त उतार चढाव के परिस्थित को नहीं बदल सके तो हम मानव किस प्रकार बदल सकते हैं। क्योकि जो कर्म का फल है उसे तो भोगना ही पडेगा। पूर्वजन्मों के संस्कार, प्रभाव एवं पिता श्री दशरथ को श्रापित होने के कारण राम जी को दोषो का निर्वहन करना ही पडा जबकी स्वयं ही भगवान श्रीराम अपने आप में शक्तिमान एवं समर्थ्य थे और जो चाहते वह हो सकता था लेकिन नहीं कर सके।

भगवान श्री कृष्ण—

भगवान श्री कृष्ण सर्वसमर्थ होने के पश्चात् भी महाभारत ऐसा युध्द नहीं टाल सकें। न्याय व अन्याय के बीच ही भगवान आर्शीवाद व श्रापित होने के कारण सभी मर्यादाओं का पालन करते हुए स्वयं को प्रतिबन्धित हो गए जबकि सर्वशक्तिमान एंव सामर्थ्यवान थे।

भगवान शिव –

भगवान शिव सभी परिस्थित को जानते हुए भी सती को अग्नि कुंड से नहीं बचा सके जबकि सर्वशक्तिमान एवं मृत्यु पर विजय पाने के लिए इन्हीं के ही महामंत्र का आवाह्‌न एवं अनुसरण / अनुष्ठान करके जीवन दान प्राप्त किया जाता है। क्योकि कर्म गति का मान रखते हुए सर्वशक्ति का परित्याग किया।

गुरु–राम कृष्ण परमहंस–

गुरू राम कृष्ण परमहंस कैंसर से पिड़ित होने के पश्चात उसे ठीक नहीं कर सके जब कि सर्वशक्तिमान थे।

गुरु अर्जुनदेव जी, गुरु तेजबहादुर साहब, गुरु परमेश पिता गुरु गोविन्द सिंह जी–

उपरोक्त गुरूजनों ने अपने साथ होने वाले परिस्थितियों को नही बदल पाए जबकि ये सभी अपने आप में समर्थ्यवान थे।

रावण और कंसः–

रावण एक बहुत ही प्रताप शासक था। उसने अपने सिर (मस्तक) को भगवान शिव को चढ़ाकर **प्रशं**न किया, वह भी अपने कर्म की गति को अपने अनुकूल नहीं कर सका। जबकि वह प्रतापी एवं समर्थ राजा था। इसी प्रकार कंस भी अपने भाग्यफल को नही बदल सका जबकि वह भी समर्थ्यवान राजा एवं शासक था।

उपरोक्त के सम्बन्धित पौराणिक कथा–

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु जी गरुण पर बैठ कर कैलाश पर्वत गए। द्वार पर गरुण को छोड़कर श्रीहरि खुद शिव से मिलने अन्दर चले गए। तभी कैलाश की प्राकृतिक शोभा को देखकर गरुण मन मुग्ध थे। तभी उनकी नजर एक खुबसूरत छोटी सी चिड़िया पर पड़ी। चिडिया कुछ इतनी सुन्दर थी कि गरुण के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे। उसी समय कैलाश पर यमराज जी पधारे और अन्दर आने से पहले उन्होने उस छोटे से पछी (चिड़िया) को आश्चर्य की दृष्टि से देखा

गरुण समझ गए इस चिड़िया का अन्त निकट है। यमराज कैलाश से निकलते ही इसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगें। गरुण को दया आ गयी इतनी छोटी और इतनी सुन्दर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजो से उठाया और कैलाश से हजारों कोस दूर जंगल के एक पर्वत् उपर छोड़ दिया और खुद कैलाश पर लौट आये।

आखिरकार जब यमदेव बाहर आए तो गरुण ने पूछ ही लिया कि उन्होने उस चिड़िया को इतने आश्चर्य भरी नजर से क्यों देखा था।

यमदेव बोले गरुण जब मैने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि मुझे वो चिड़िया कुछ ही पल बाद यहां से हजारों कोस दूर कैसे नाग द्वारा खाई जाएगी। मैं सोच रहा था की जो इतनी जल्दी इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वो यहां नही है तो निश्चित ही वो मर चुकी होगी। गरुण समझ गए मृत्यु टाले नही टलती चाहे कितनी भी चतुराई की जाए।

निष्कर्स–इसलिये यह कहा जाता है कि विधी का विधान कर्म के आधार पर निर्धारित है उसे किसी परिस्थिति में बदला नही जा सकता है।

इसलिए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं
करता तू वह है जो तू चाहता है

परन्तु होता वह है जो मैं चाहता हूँ।
कर तू वह जो मैं चाहता हूँ।
फिर होगा जो वो जो तू चाहता है।

मानव अपने जन्म के साथ ही जीवन, मरण, यश, अपयश, लाभ, हानि, स्वास्थ्य, बीमारी , देह, रंग, परिवार, समाज देश स्थान सब पहले से निर्धारित करके आता हैं।

इसलिए सरल रहे, सहज रहें, मन, वचन और कर्म से सत्कर्म में लीन रहे।

नोट–मानव अपने आप में सरल रहे मन वचन और कर्म में सत्कर्म में लीन रहे।

नक्षत्र ज्योतिष

नक्षत्र ज्योतिष और पर्यावरण के जानकार जगत नारायन जोशी के अनुसार सौरमंडल में ग्रह तो हमेशा घूमते रहते है। लेकिन नक्षत्र स्थिर रहते है। ज्योतिष में 12 राशियों के विचरण पथ को 27 भागों में बाटा गया है। हर 27 भागों में पड़ने वाले तारामंडल के बीच कुछ विशिष्ट तारों की पहचान कर उसे नक्षत्र नाम दिया गया है।

हिन्दु पौराणिक कथाओं के अनुसार सभी 27 नक्षत्र दक्ष की पुत्रियां हैं। प्रत्येक का विवाह चन्द्रमा के साथ हुआ है। चन्द्रमा प्रत्येक तारामंडल के पास एक दिन स्थित रहता है। इस प्रकार चन्द्र मास में लगभग 27 दिन होते है जो नक्षत्रों के संख्या के बराबर है।

तारा समुह को नक्षत्र कहते हैं। साधारण तथा चन्द्रमा के पथ से जुड़े होते है। इन नक्षत्रों को चार चरणों में वर्गीकृत किया गया है। इसे पाथ कहा जाता है। जिसमें प्रत्येक अंश 32° डिग्री तक फैला हुआ है जिसे नवाशं कहा जाता है।

नक्षत्रों को तीन भाग में बांटा जा सकता है।

शुभ नक्षत्रः—

शुभ नक्षत्रों की संख्या 15 है। ज्योतिष के अनुसार इसमें किये गये सभी कार्य सफल और शुभ होते हैं।

अन्य नक्षत्रः—

अन्य नक्षत्रों की संख्या 8 है। ज्योतिष के अनुसार इसे सामान्य नक्षत्र भी कहा जाता है। इसमें बड़े और महत्वपूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए। इसमें शुभ नक्षत्र की अपेक्षा कार्य की सिद्धी कम होती है।

अषुभ नक्षत्रः—

अशुभ नक्षत्र की संख्या 4 है। ज्योतिष के अनुसार इन नक्षत्रों में किये गये कार्य में बाधा और रूकावटें आने की अधिक संम्भावना अधिक होती है। इसमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

श्रापित ग्रह–

किसी कारणवश साधु ,सन्त ,महात्मा, सिद्ध पुरुष चाहे वह पुरुष हो या स्त्री द्वारा गांव परिवार या व्यक्ति विशेष को श्राप दिया जाता है। उसके कारण जो भी दोष उत्पन्न होता हैं उसे श्रापित दोष कहते हैं उसे ही श्रापित ग्रह कहा जाता है।

आर्शिवादित ग्रह–

श्रापित ग्रह या दोष की तरह ही यदि उपरोक्त विशेष व्यक्ति द्वारा आर्शीवाद दिया जाता है। उसे आर्शिवादित ग्रह कहा जाता है। उपरोक्त दोष जो श्रापित है। उसे अपने अनुकूल करने के लिए उपरोक्त विशेष व्यक्ति का सहारा लेना पड़ता है। सामान्य रुप से ग्रह और नक्षत्रों को शान्त करने के लिए ज्योतिशास्त्र में भिन्न भिन्न ग्रहों के अनुसार पत्थर धारण कर उन्हे शान्त किया जाता है और उसे अपने अनुकूल बनाया जाता है। ठीक उसी प्रकार से नक्षत्र एवं ग्रह तथा राशि को अनुकूल बनाने के लिए अपने राशि के अनुसार वृक्ष या पौधे लगाकर तथा विधि विधान से पूजा अर्चना करके उपरोक्त समस्या का समाधान किया जा सकता है।

नौ ग्रहों के साथ 27 नक्षत्र होते है। सौरमंडल के 27 नक्षत्र में प्रत्येक के चार चरण माने जाते है। इस प्रकार कुल 108 चरण को 12 राशियों में बांटने पर हर राशि में नौ चरण स्थापित किए जाते है।

इन्हीं गणनाओं को ध्यान में रखकर नक्षत्र वाटिका में आराध्य वृक्षों और पौधौं को रोपा जाता (लगाया) है। जोशी जी के अनुसार पेड़–पौधे एवं वनस्पतियां भी नक्षत्रों एवं ग्रहों द्धारा वासित होती है। नक्षत्रों एवं ग्रहों द्धारा यदि कुछ असामान्य होता है। तो उसे इन ग्रहों नक्षत्रों से सम्बन्धित वृक्षों की जड़ मूल औषधि और इन पेड़ों के साानिध्य तथा उनकी उपासना की विधिवत क्रिया से दूर किया जा सकता है। जानकारों के अनुसार जन्म अवकहड़ा चक्र के आधार पर जिस व्यक्ति का जो जन्म नक्षत्र है उनके अनुसार राशि व ग्रह का निर्धारण होता है। उनके आराध्य वृक्षों का सानिध्य एवं उनके अधिदेवता की आराधना करने से सभी प्रकार के अनिष्ट शान्त हो जााते है।

काल चक्र के आधार पर ही राशि की गणना की जाती है। इस गणना में सभी प्रकार के पौधे जीव – जन्तु मकान निर्माण इत्यादि की गणना सभी ढंग से करने के लिए समय दिन तिथि के साथ स्थान होना आवश्यक है और यदि समय में घंटा मिनट ज्ञात हो तो गणना उतनी ही **सूक्ष्म**तम स्थित तक हो सकती है। क्यों नक्षत्र स्थिर है और राशियों का विचरण पथ है। इस कारण विचरण पथ को ही 27 भागों में बाटा गया है। जिसे नक्षत्र कहते है। नक्षत्र को चार भागों में बांटा गया है। जिससे गणना में अत्यधिक गहराई से विवेचना की जा सकें।

नक्षत्रों के स्वामी एंव स्वभाव

क्र0सं0	नक्षत्रों का नाम	शुभ स्वामी	सामान्य स्वामी	अशुभ स्वामी
1	अश्रिनि	केतु	–	–
2	भरणी	–	–	शुक्र
3	कृतिका	–	–	सूर्य
4	रोहणि	चन्द्रमा	–	–
5	मृगशिरा	मंगल	–	–
6	आर्दा	–	राहु	–
7	पुनर्वसु	बृहस्पति	–	–
8	पुष्प	शनि	–	–
9	अशलेखा	–	–	बुद्ध
10	मघा	–	–	केतु
11	पूर्व फागूनी	–	शुक्र	–
12	उत्तरा फागूनी	सूर्य	–	–
13	हस्त	चन्द्रमा	–	–
14	चित्रा	मंगल	–	–
15	स्वाती	राहु	–	–
16	विषाखा	–	बृहस्पति	–
17	अनुराधा	शनि	–	–
18	जेष्ठा	–	बुद्ध	–
19	मूल	–	केतु	–
20	पूर्वा भाद्र पक्ष	–	शुक्र	–
21	उत्तरा भाद्र पक्ष	सूर्य	–	–

22	श्रवण	चन्द्रमा	—	—
23	घनिष्ठा	मंगल	—	—
24	सतभिखा	—	श्राहु	—
25	पूर्वा भाद्रपद	—	शुक्र	—
26	उत्तरा भाद्रपद	शनि	—	—
27	श्रेवती	बुद्ध	—	—

स्वभाव में परिवर्तन के वृक्ष 27. नक्षत्रों के पौधे एवं वृक्ष

क्र0सं0	नक्षत्र	पौधे / बृक्ष	क्र0सं0	नक्षत्र	पौधे / बृक्ष
1	अश्वनी	कोचिला	15	स्वाति	अर्जुन
2	भरणी	आंवला	16	विषाखा	कटाई
3	कृतिका	गुड़हल गुलर	17	अनुराधा	मौल श्री
4	रोहणी	जामुन	18	जेष्ठा	चीड़
5	मृगशिरा	खैर	19	मूल	साल
6	आर्द्रा	शीशम	20	पूर्वाषाढ़ा	ज्लवेतस
7	पुनर्वसु	बांस	21	उत्तराषाढ़ा	कटहल
8	पुष्य	पीपल	22	श्रवण	मदार
9	अश्लेषा	नागकेशर	23	घनिष्ठा	छयोकर
10	मघा	बरगद	24	सतभिषा	कदंव
11	पूर्वफाल्गुन	ढाक	25	पूर्वभाद्रपद	आम
12	उत्तर फाल्गुन	पाकड़	26	उत्तरभाद्रपद	नीम
13	हस्त	रीठा	27	रेवती	महुआ
14	चित्रा	बेल	—	—	—

पूजा– पाठ में ध्यान देने योग्य विचार

पूजा–पाठ में जानने वाले मुख्य बातें

1. यज्ञों पवित्र एवं शिखा बन्धन करके पूजा करनी चाहिए।
2. महिलाओं को शिखा खुला रखकर पूजा करनी चाहिए।
3. भोजन प्रंसाद को लागना नहीं चाहिए।
4. अक्षत देवताओं को तीन बार चढ़ाना चाहिए।
5. पत्र पुष्प और फल जिस रुप में फूलता अकुरित होता है या फलता है। उसी रुप में चढ़ाना चाहिए।
6. बेल पत्र की डण्डी तोड़कर पत्ते को उलटा करके ही चढ़ाना चाहिए।
7. पान के डण्डी के अग्रभाग तोड़कर चढा़ना चाहिए।
8. शालीग्राम जी का आवाहन एवं विसर्जन नहीं होता है।
9. स्थापित देवमुर्ति का आवाहन एवं विसर्जन नहीं होंता है।
10. देव प्रतिमा यदि दिखाई दे रही हो तो प्रमाण अवश्य करें।
11. यज्ञ श्राद्ध में काले तिल का ही प्रयोग करना चाहिए।
12. शनिवार को पीपल पर जल चढाना चाहिए ।
13. मिट्टी की मूर्ति का आवाहन और विसर्जन अवश्य करना चाहिए।
14. तुलसी दल को मध्यान के पश्चात् खाना चाहिए।
15. जप करते समय जीभ और ओठ नहीं हिलना चाहिए।
16. जप करते समय दाहिने हाथ को कपड़े से या गोमुखी से ढक लेना चाहिए।
17. जप करने के पश्चात आसन के नीचे की भूमि को स्पर्श कर अपने नेत्र से लगाना चाहिए।
18. किसी को दान या दक्षिणा दाहिने हाथ से देना चाहिए।
19. सभी धार्मिक कार्य में पत्नी को दाये बैठा कर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।
20. पूजन करने वाले के ललाट/मस्तक पर तिलक अवश्य लगा होना चाहिए।
21. पूजा करते समय यदि गुरूदेव, ज्येष्ठ व्यक्ति आ जाये तो उठकर प्रणाम करना चाहिए और उनकी आज्ञा से शेष कार्य संचालित करना चाहिए।
22. प्रतिदिन पूजा में सफलता के लिए दक्षिणा अवश्य चढ़ाना चाहिए।
23. एक हाथ से प्रणाम नहीं करना चाहिए।

24. बड़ो को प्रणाम करते समय उनके दाहिने पैर पर दाहिने हाथ से और उनके बायें पैर पर बायें हाथ से छूकर प्रणाम करना चाहिए।

25. सोये हुए व्यक्ति का चरण स्पर्श नहीं करना चाहिए।

26. पीपल के पेड़ को नमस्कार पूर्वान्ह के पश्चात् दोपहर में ही करना चाहिए।

27.जहां अपूज्यों की पूजा होती है और विद्यावनों का अनादर होता है उस स्थान पर दुर्भिक्ष, मरण, और भय उत्पन्न होता है।

28. पौष मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि चैत की शुक्ल पक्ष की पंचमी और श्रावण की पूर्णीमा तिथि को लक्ष्मी प्राप्ती के लिए लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए।

29. कृष्ण पक्ष की कृतिका तिथि में श्रवणी नक्षत्र में लक्ष्मी का पूजा न करें।

30. अपरान्ह काल में रात्री मे, कृष्ण पक्ष में द्वादशी तिथि में, और अष्टमी को लक्ष्मी का पूजन प्रारम्भ न करें।

31. मंडप के नौ भाग होते हैं और वह सब बराबर के होते हैं। अर्थात मंडप सब तरफ से चतुराशन होता है अर्थात टेढ़ा नहीं होता है जिस कुड की श्रृंगार की रचना नहीं होती वह अपमान और हानि का कारण बनता है।

32. पूजा पाठ करते समय जो गलतियां हो जाय इसके लिए क्षमा अवश्य मांगना चाहिए।

इसका मंत्र इस प्रकार है

आवाह्न न जानामि , न जानामि विसर्जनम्।
पूजा चैवन जानामि , क्षमस्व परमेश्वर।
मंत्र हीनं, क्रिया हीनं, भक्ती हीनं, जनार्दन।
यत्पूजित भया देव ! परिपूर्ण तदस्तु में।

पुजा–पाठ में निषेध सामग्री एंव तिथि

पुजा पाठ में निम्नलिखित बातों का विषेष ध्यान रखें।

1. एकादशी , अमावस्या , कृष्ण पक्ष चतुर्दशी , पूर्णिमा , ब्रत तथा श्राघ के दिन क्षौर–कर्म जैसे दाढ़ी बाल निषेध है।
2. संक्रान्ति , द्वादस , अमावस्या , पूर्णिमा , रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी जी का कोई भी अंग नहीं तोड़ना चाहिए।

3. यज्ञ और श्राद्ध में सफेद तिल का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
4. सड़ा हुआ पान और पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिए।
5. शिव जी को कुन्द, केंतकी का पुष्प , एवं कुमकुम नहीं चढ़ाना चाहिए।
6. विष्णु जी को धतुरा और और चावल नहीं चढ़ाना चाहिए।
7. देवताओं के सामने प्रज्जलित दीप नही बुझाना चाहिए।
8. देवी के अराधना में आंक , मदार , बेल पत्र , नहीं चढ़ाना चाहिए।
9. सूर्य देव को तगण का फूल नहीं चढ़ाना चाहिए।
10. स्नान करने से पहले तुलसी पत्र तोड़ना नहीं चाहिए।
11. गणेश जी को तुलसी पत्र नहीं चढ़ाना चाहिए।
12. पिघला हुआ घी एवं पतला चन्दन नहीं लगाना चाहिए।
13. भैरव जी को तुलसी नहीं चढ़ाना चाहिए।
14. शाली ग्ग्रम जी पर अक्षत नहीं चढ़ाना चाहिए।
15. किसी भी देवी , देवताओं के मुर्ति को अगूंठे से रगड़ना नहीं चाहिए।
16. दीप से दीप नहीं जलाना चाहिए।
17. अपने हाथ से अथवा दूसरे हाथ से धारण किया हुआ पुष्प तामें के पात्र में चन्दन और चर्म में रखा हुआ गंगा जल अपवित्र माना जाता है या अपवित्र होता है।

<u>भगवान गणेश विष्णु भगवान जी शिव एंव लक्ष्मी जी को प्रशन्न करने के लि चाहिए।</u>

1. गणेश जी को दुर्बा अवश्य चढ़ाना चाहिए।
2. विष्णु जी को तुलसी पत्र अवश्य चढ़ाना चाहिए।
3. लक्ष्मी जी को कमल का पुश्प समय हो तो अवश्य चढ़ाना चाहिए।
4. पौश मास की शुक्ल दशमी तिथि, चैत की शुक्ल पक्ष की पंचमी और श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि को लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये पूजन अवश्य करना चाहिए।
5. विष्णु जी को कार्तिक माह में केतकी से पूजा अवश्य करना चाहिए।
6. शिव जी को बेलपत्र अवश्य चढ़ाना चाहिए।

श्राद्ध और पितृ पक्ष का वैज्ञानिक महत्व –

श्राद्ध कर्म श्रद्धा का विषय है यह पितरों के प्रति हमारी श्रद्धा प्रकट करने का माध्यम है श्राद्ध आत्मा के गमन जिसे संस्कृति में प्रैति कहते है से जुड़ा हुआ हैं। प्रैति ही बाद में बोल चाल में प्रेत बन गया यह कोई भूत प्रेत वाली बात नहीं है। शरीर में आत्मा के अतिरिक्त मन और प्राण है। आत्मा तो कहीं नही जाती वह तो सर्वव्याप्त है। उसे छोड़ दे तो शरीर से जब मन को निकलना होता है तो मन प्राण के साथ निकलता है। प्राण मन को लेकर निकलता है। प्राण जब निकल जाता है तो शरीर के जीवात्मा का मोह रहता हैं इसके कारण वह शरीर के आस–पास ही घूमता रहता है। कहीं जाता नहीं है। शरीर को जब नष्ट किया जाता है। उस समय प्राण मन को लेकर निकलता हैं। मन कहां से आता है, कहां गया हैं चंन्द्रमा मनसः लीयते यानी – मन चन्द्रमा से आता है। यह भी कहा गया है। चन्द्रमा मनसो जातः यानी – मन ही चन्द्रमा का कारक है। इसलिए जब मन खराब होता है या फिर पागलपन चढ़ता है तो उसे अंग्रेजी में ल्यूटैटिक कहते है। ल्यूनार का अर्थ चन्द्रमा होता है और इससे ही ल्यूनेटिक शब्द बना है। मन का जुड़ाव चन्द्रमा से है। इसलिए हृदयाघात जैसी समस्या पूर्णिमा के दिन अधिक होती है।

चन्द्रमा वनस्पति का कारक है। रात को चन्द्रमा के कारण वनस्पतियों की वृद्धि अधिक होती हैं। इसलिए रात को ही पौधे अधिक बढ़ते है। दिन में वे सूर्य के प्रकाश संश्लेशण के द्वारा भोजन लेते है। और रात चन्द्रमा की किरणों में बढ़ते है। वह अन्न जब हम खाते है। उससे रस बनता है। रस से अधिक यानी रक्त बनता है। रक्त से मान्स से भेद, से मज्जा और मज्जा के बाद अस्थि बनती है। अस्थि के बाद वीर्य बनता है। वीर्य से ओज बनता है। ओज से मन बनता है। इस प्रकार चन्द्रमा से मन बनता है। इसलिए कहा गया है। कि जैसा खओगे अन्न बनेगा वैसा मन जब मन बन जाएगा तो उसकि यात्रा चन्द्रमा तक की होती है , दाह संस्कार के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होगा प्राण मन को उस ओर ले जाएगा। क्योंकि 27 दिनों के अपने चक्र में चन्द्रमा 27 नक्षत्र में घूमता है। इसलिए चन्द्रमा घूमकर 027 दिन फिर से उसी नक्षत्र में आ जाता है। मन की यह गति 28 दिन की यात्रा यह होती हैं। इस 28 दिनों तक मन की उर्जा

को बनाए रखने के लिए श्राध्दों की व्यवस्था की गई है। चन्द्रमा सोम का कारक कहते हैं इसलिए इसे सोम भी कहते हैं

सोम सबसे अधिक चावल में होता है। धान हमेशा पानी में डूबा रहता है। सोम तरल होता हैं इसलिए चावल के आंटे का पिंड बनाते है। तिल और जौ भी इसमें मिलाते इसके पश्चात पानी मिलाते है। तत्पश्चात इसमें घी भी मिलाते है। इसलिए इसमें और भी अधिक सोम तत्व आ जाता है। हथेली में अंगूठे और तर्जनी के मध्य में नीचे का उभरा हुआ स्थान वह शुक्र का होता हैं। शुक्र से ही हम जन्म लेते है। और हम शुक्र ही है। इसलिए वहां कुश रखा जाता है। कुश उर्जा का कुचालक होता हैं श्राद्ध करने वाला कुश रखें हाथों से इस पिंड को सूघता है चूंकि उसका और उसके पितर का शुक्र जुड़ा होता है। इसलिए वह उसे श्रद्धा भाव से उसे आकाश की ओर देखकर पितरों के गमन की दिशा में उन्हें मानसिक रुप से समर्पित करता हैं और पिंड को जमीन पर गिरा देता है। इससे पितर फिर से उर्जावान हो जाते है। और वे 28 दिन की यात्रा करते हैं। इस प्रकार चन्द्रमा के तेरह महीनों में श्येन पक्षी की गति से वह चन्द्रमा तक पहुंचता हैं यह पूरा एक वर्ष की यात्रा हैं। इसके प्रतीक के रुप में हम तेरहवीं करते हैं और गंतव्य तक पहुंचने की व्यवस्था करते है। इसलिए हर 28 वें दिन पिंड दान किया जाता हैं इसके बाद हमारा कोई अधिकार नहीं हैं चन्द्रमा में जाते ही मन का विखंडन हो जाता है।

पिंडदान

पिंडदान करते समय पंडित लोग केवल तीन ही पितरों को याद करते है। वास्तव में सात पितरों को स्मरण करना चाहिए। हर चीज सात हैं सात ही रस है। सात ही धातुएं है। सूर्य की किरणें भी सात हैं इसीलिए सात जन्मों की बात कही गई है। पितर भी सात हैं सही मान्य 56 होती हैं कैसे? इसे जाने या समझे ।

सात पीढ़ी निम्न है।

1) व्यक्ति 2) उसका पिता 3) पितामह 4) प्रपितामह।

5) वृद्ध पितामह 6) अतिवृद्धपितामह 7) वृद्धाति वृद्ध पितामह।

इस प्रकार 7 (सात) पिढ़िया होती है। उपरोक्त सात पिढ़ियों के विपरीत बच्चों का कर्मलेख होता है।

जो इस प्रकार है। जुगल अशं

1– इसमें से वृद्धाति वृद्ध पितामह –– का एक अशं
––––––1 एक कल अंश

2– अति वृद्ध पितामह –––––––– का तीन अंशं
––––––3 $\frac{56}{2} = \mathbf{28}$

3– वृद्ध पितामह –––––––– का छः अंश ––––––6

4– प्रपितामह –––––––– का दश अंश ––––––10

5– पितामह का –––––––– का पंन्द्रह अंश ––––––15

6– पिता का ––––––––का एकदश अंश ––––––21

7– इसमें उसका स्वयं का अर्जित का –––––––– अठाइश अंश –––––––28

मिलता हैं इसमें स्वयं का अर्जित 28 (अठाइस) अंश मिला दिया जाए तो 56 सही मात्रा हो जाती हैं जैसे ही हमें पुत्र होता है।

1) वृद्धाति वृद्ध पितामह का एक अंश चला जाता है। और उसकी मुक्ति हो जाती है।

2) इससे अति वृद्ध पितामय हो जाएगा।

3) पुत्र के पैदा होते ही सातवें पिढ़ी का एक व्यक्ति मुक्त हो गया ।

इसलिए सात पिढ़ियों के सम्बन्धों की बात होती है।

पितृपक्ष का महत्व और समय

पंन्द्रह दिनों का पितृ पक्ष क्यों होता हैं।–

अब यह समझे पन्द्रह दिन का पितृ पक्ष क्यों मनाते हैं यह तो हमने जान लिया की पितरो का सम्बन्ध चन्द्रमा की पृथ्वी से है पृथ्वी और चन्द्रमा की बीच की दूरी 3,85,000 कि0 मी0 की दूरी पर स्थित है। हम जिस समय पितृ पक्ष मनाते है। यानी की अश्विन महीने के पितृ पक्ष में उस समय पन्द्रह दिनों तक चन्द्रमा पुथ्वी के सर्वाधिक निकट लगभग 3,81,000 कि0 मी0 पर ही रहता हैं उसका परिक्रमा पथ ही ऐसा है कि वह इस समय पृथ्वी के सर्वाधिक निकट होता है। इसलिए कहा जाता है कि पितर हमारे निकट आ जाते ,शतपथ ब्रम्हांड में कहा हैं विभुः उध्व भागे पितरों अर्थात चन्द्रमा के दूसरे हिस्से में पितरों का निवास हैं। चन्द्रमा का एक पक्ष दूसरे के सामने होता हैं जिसे हम देखते हैं परन्तु चन्द्रमा का दूसरा भाग हम कभी देख नहीं पाते। इस समय चन्द्रमा दक्षिण दिशा में होते है। दक्षिण दिशा को यम का घर माना जाता है। आज हम यदि आकाश को देखे ंतो दक्षिण – दिशा में दो बड़े सूर्य हैं। जिससे विकिरण निकलता है। हमारे ऋशियों ने उसे प्राण से चिन्हित किया है। शास्त्रों में इसका उल्लेख लघु ध्यान और वृहद ध्यान के नाम से है। इसे आज केनिस माइनर और कनिस मेजर के नाम से पहचाना जाता है। इसका उल्लेख अर्थवेद में भी आता है। वहां कहा है श्यामश्रवत्वान सवलश्रव प्रेतिता यमश्रव यौं परिरक्षु श्राव अर्थवेद 8– 1–19 के इस मंत्र में इन्हीं दोनों सूर्यों की चर्चा की गयी है। श्राद्ध में हम एक प्रकार से उसे ही हवी/हव देते है। की पितरों को उसके विकिरणों से कष्ट न हो। इस प्रकार से देखा जाए तो पितृपक्ष और श्राद्ध में हम न केवल अपने पितरों का श्राद्ध श्रद्धा पूर्वक स्मरण कर रहें है। बल्कि पूरा खगोलशास्त्र भी समझ ले रहें है। श्रद्धा और विज्ञान का एक अदभुत मेल है। जो हमारे ऋशियों द्वारा बनाया गया है। आज समाज के कई वर्ग श्राद्ध को इस वैज्ञानिक पक्ष को न जाने के कारण इसे ठीक से नही करते हैं । कुछ लोग 3 दिन में और कुछ लोग 4 दिन में ही सारी प्रक्रिया पूरी कर डालते हैं। यह न केवल आशास्त्रीय है बल्कि हमारे पितरों के लिए अपमान जनक भी है। जिन पितरों के कारण हमारा अस्तित्व है। उनके निर्विघ्न परलोक यात्रा की हम व्यवस्था न करें हमारा कृतघ्नता ही कहलाएगी। पितर का अर्थ होता है। पालन या रक्षण करने

वाला , पितर शब्द या रक्षणे धातु से बना है। इसका अर्थ होता है। पालन या रक्षण करने वाला एक वचन में इसका प्रयोग करने से इसका अर्थ जन्म देने वाला होता है। और बहुवचन में प्रयोग करने से पितर यानी सभी पूर्वज होता है। इस पितर पक्ष का अर्थ यही हैं की हम सभी सातों पितरों का स्मरण करें इसलिए इसमें सात पिंडों की व्यवस्था की जाती है। इन पिंडों का बाद में मिला दिया जाता है। ये पिंड भी पितरों को वृद्धावस्था के अनुसार क्रमशः घटते आकार में बनाए जाते थे। आज इस पर ध्यान नहीं दिया जाता हैं।

कुल देवी मंदिर

भगवान चित्रगुप्त मंदिर

भागवत पूजा

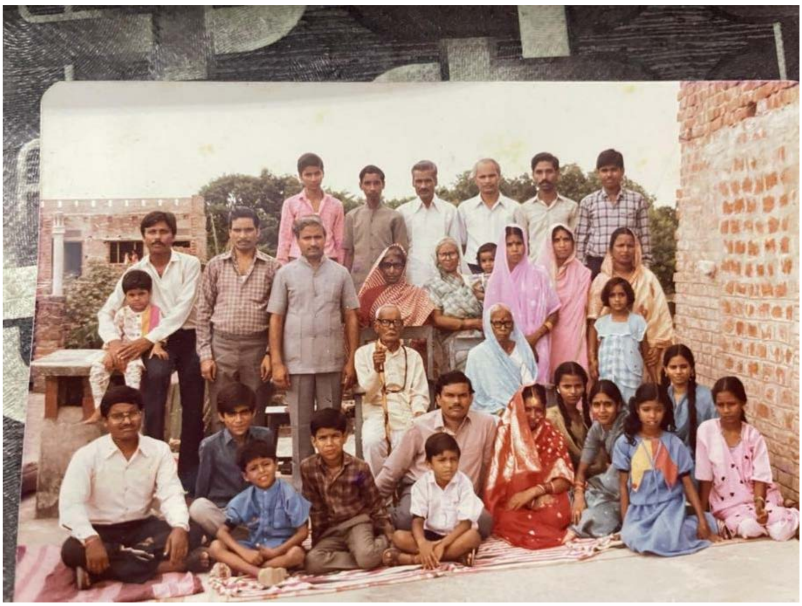

पारिवारिक चित्र

लेखक के दो शब्द

परमात्मा कि असीम कृपा एंव पूर्वजों के आर्शीवाद और प्रेरणा स्वरूप इस पारिवारिक पुस्तिका को लिपिबद्ध मेरे द्वारा स्व0 पिता गोरखनाथ श्रीवास्तव पुत्र महादेव लाल श्रीवास्तव द्वारा आत्मकथा दिनांक–20 फरवरी दिन रविवार 1983 के आधार पर सभी संभावित कड़ीयों को जोड़ने के प्रयास के साथ किया गया है।

इस पारिवारिक ग्रन्थ को विस्तार देने के लिये अपने बुद्धि विवेक के अनुसार जो अति आवश्यक प्रकरण समस्त में आया उसे आठ खन्डों में विभाजित कर एक दूसरे से जोड़ने के क्रम में यथा संभंव सम्बन्ध स्थापित कर के संक्षिप्त रूप से सूचीबद्ध करने का प्रयास है। इस प्रयास में जिन व्यक्ति विशेष का सहयोग प्राप्त हुआ है। उन्हे कोटी–कोटी धन्यवाद।

मेरा जीवन बहुत ही उतार–चढ़ाव के साथ प्रारम्भ हुआ और अन्त में अति सम्मानित रूप से अभिन्ता के पद से राज्य विधुत परिषद के विधुत विरतण खन्ड आजमगढ़ से सेवा निवृत हो इसी जनपद में स्थाई निवास बनाकर अपना जीवन सुखमय ढंग से भगवत भजन के साथ सपरिवार व्यतीत कर रहा हूँ।

लेखक / विचारक

शिवशंकर श्रीवास्तव

अंतिम पेज

उपसंहार एंव क्षमा याचना

इस साहित्य। ग्रंथ में जो वंशावली पारिवारिक पुस्तक के संकलन मे यदि किसी पूर्वज के नाम, गोत्र , परम्परा अथवा वंश क्रम के वर्णन में अनजाने कोई तुष्टि. रह गई हो तो समस्त परिवार जनो से विद्वजनो से करवध क्षमायाचना करता हू तथा कुल देवता अपने इस्ट देव एंव परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे इस विनीत प्रयास को स्वीकार कर हमें सुबुद्धि एंव सत्य मार्ग पर प्रेरित करेण